मैथिली मे संस्मरण - विधा मे मात्र आँगुर पर गनबा योग्य पोथी उपलब्ध अछि। निश्चये 'अपन एकान्त मे' एहि विधाक एकटा सशक्त कृति थिक जे एक संग मैथिलीक अनेक दिग्गज लेखकक व्यक्तित्व आ कृतित्वक विस्तृत, मनोहर आ अनुपम चित्र प्रस्तुत करैत अछि। मिथिला - मैथिलीक लेल समर्पित उन्नायक, श्रेष्ठ साहित्य - साधक आ अक्षर - पुरुषक सहज स्मृति एहि पोथीक विशिष्टता थिक।

संस्मरणक संग - संग संस्मरणीय रचनाकारक रचना पर लेखक द्वारा कयल गेल सहज टिप्पणी एहि पोथी केँ आओरो महत्त्वपूर्ण बना दैत अछि। पाठक केँ कीर्तिनारायण मिश्र अपन अतीतक विरल - विलक्षण स्मृति मे पहुँचा, ओकर मोहक स्पर्श सँ पुलकित करैत, ओहि क्षण - विशेष केँ जीवन्त बना दैत छथि आ अपन सार्थक टिप्पणी सँ सम्बद्ध रचनाकारक वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन सेहो करैत छथि।

समय आ ओकर अन्तर्धारा केँ, लेखक आ हुनक व्यक्तित्व केँ जतेक व्यापक आ गहन - गम्भीर रूपेँ ई कृति उद्‌घाटित करैत अछि— ई नहि मात्र अपने समय मे, अपितु एहि समय सँ आगाँ, बहुत समय धरि— एकटा जीवित आ जीवन्त दस्तावेज जकाँ मूल्यवान रहत, से विश्वास अछि।

अपन एकान्त मे

कीर्त्तिनारायण मिश्र

किसुन संकल्प लोक
सुपौल

- किसुन संकल्प लोक, किसुन कुटीर, सुपौल द्वारा प्रकाशित.
- प्रथम संस्करण : दीआबाती, 1995.

- आवरण : मोनू.
- मुद्रक : सौरभ प्रेस, सुपौल.
- मूल्य : पचीस टाका.
- प्राप्ति स्थान

केदार कानन
किसुन कुटीर
सुपौल. 852131.

भारती प्रकाशन
147, कॉटन स्ट्रीट
फर्स्ट फ्लोर. कलकत्ता. 700007.

डा. वागीश कुमार मिश्र
रमेश्वरलता संस्कृत कॉलेज
दरभंगा. 846004.

प्रो. राजीव कुमार मिश्र
शास्त्री निवास
शोकहरा
बरौनी. 851112.

APAN EKANTA MEIN
A collection of critical memoirs by Keerti Narayan Mishra.
First Edition : Deepawali, 1995.
Price : Rs. 25/–

श्रद्धेय पितृव्य
डा. श्री दिवाकर मिश्र शास्त्री
एवं
आदरणीय अग्रज
प्रो. डा. हरिनारायण मिश्र
केँ
स विनय

आत्मकथन

विश्व साहित्य मे संस्मरण लिखबाक सुदीर्घ परम्परा रहल अछि। उद्भट पाण्डित्य आ रचनात्मक प्रतिभाक धनी तथा साहित्य, संस्कृति, कला, विज्ञान, राजनीति, दर्शन आदि क्षेत्र विशेष मे विख्यात व्यक्ति पर लिखल संस्मरण हुनक जीवन - शैली, चिन्तन आ लोक - व्यवहार कें बूझऽक लेल अनौपचारिक विचार - भूमि तैयार करैत छैक। संस्मरणीय व्यक्ति मृत आ जीवित दुन्नू भऽ सकैत छथि। दुन्नू स्थिति मे संस्मरण - लेखक कें तरुआरिक धार पर चलऽ पड़ैत छैक। दिवंगत विभूतिक संस्मरण मे लेखक क समक्ष ई आशंका रहैत छैक जे संस्मरणीय व्यक्ति सँ अपन सम्बन्ध जोड़ि कतहु अपना कें महान तऽ सिद्ध नहि कऽ रहल अछि आ जीवित व्यक्तिक संस्मरण ओकरा चाटुकार वा चारणक कोटिमे परिगणित करा सकैत छैक। एहि सभ खतराक अछैत संस्मरण लिखल जाइत रहल अछि, लेखक संस्मरणीय व्यक्तिक व्यक्तित्व आ कृतित्व सँ तादात्म्य स्थापित कए महत्त्वपूर्ण रचना दैत रहलाह अछि।

यद्यपि संस्मरण आ आत्मकथा स्वतंत्र विधा छैक किन्तु, ओकर पूर्ण विकास नहि भेल छैक। मैथिली मे एहि दिशा मे आओर कम प्रयास भेल अछि किन्तु, जतबे लिखल गेल अछि, ओकर ऐतिहासिक महत्त्व छैक। एहि विधा मे हमर ई प्रथम प्रयास थिक।

प्रस्तुत संकलन मे जाहि रचनाकार पर हम लिखने छियनि, हुनक रचना, सदाशयता आ जीवन - दर्शन हमरा अभिभूत करैत रहल अछि आ लेखनक क्रम मे हुनका सभक सङ, तादात्म्यताक स्थिति मे, आओर अभिभूत भेल छी – अनायास, सहज एवं स्वाभाविक रूप सँ। ओहि मे किछु हमर आदरणीय / अभिनन्दनीय छथि आ किछु घनिष्ठ साहित्यिक मित्र। हमरा ई बूझल अछि जे संस्मरण - लेखक सँ संस्मरणीय व्यक्ति महान होइत छथि।

एहि पोथी मे किछु एहन अभाव रहि गेल अछि, जे हमरा लेल बड़ कष्टदायक अछि। महामहोपाध्याय डा. उमेश मिश्र सँ 1968 मे कविवर श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' जी हमरा साक्षात्कार करौने रहथि, जाहि मे आधुनिक कविता पर हुनक विचार / अभिमत सुनबाक हमरा अवसर भेटल छल। आश्चर्य भेल छल हुनक पौत्र सँ ई जानि जे किछु सप्ताह पूर्व ओ 'सीमान्त' पर अपन प्रतिक्रिया हुनका सँ लिखौने रहथिन आ हमरा पठा देबाक आदेश देने छलथिन। हम गाम घुरि हुनका पर संस्मरण लिखने रही। ओहि पाण्डुलिपि कें अथक प्रयासक बादो नहि जोहि सकलहुँ। कविवर श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' तथा पण्डित श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' पर पछिला साल चितावालसा मे लिखब शुरू कैने रही, जे व्यस्तता आ

स्थानान्तरणक कारण आइ धरि पूरा नहि कऽ सकलहुँ । हमर पितृव्य डा. श्री दिवाकर मिश्र शास्त्री स्वर्गीय भुवन जी, आरसी बाबू, यात्री जी, सुमन-जी, अमर जी आदिक घनिष्ठ मित्र रहल छथि । ओ भुवन जी तथा सुमन जीक प्रेरणा सँ हिन्दीक सङ - सङ मैथिलीयो मे लिखब शुरु कैने रहथि । चालीसक दशक मे हुनक बहुतरास कविता छपल रहनि । 'मिथिला मिहिर' आदिक ओतेक पुरान अंक सँ हुनक रचना सभ केँ जोहि कए, मैथिली मे हुनक अवदान केँ सुनिश्चित करब संभव नहि भेल । भविष्य मे अपन दायित्व पूर्ण कऽ सकी – ताहि लेल अपेक्षित प्रयास करब ।

संकलित संस्मरण मे किछु 8/10 वर्ष पहिने लिखल गेल छल । ओहि मे विस्तारक बड़ अवकाश छलैक किन्तु, से करब उचित नहि लागल । परिवर्तन - परिवर्द्धन सँ मूल भाव आ अनौपचारिकताक नष्ट होयबाक आशंका छल । किछु अप्रकाशित संस्मरण सेहो देल जा रहल अछि जे पछाति लिखल गेल छल किन्तु, पत्र - पत्रिकाक अभाव / अनिच्छाक कारण छपि नहि सकल ।

हमर ई प्रयास कवि केदार कानन क अनवरत अनुरोध, आग्रह आ सहयोगक प्रतिफल थिक । तेँ एकर सम्पूर्ण श्रेयक अधिकारी वैह छथि । पोथी - पत्रिकाक विक्रयक चिन्तनीय स्थिति सँ हमरा चिन्तित देखि ओ लिखलनि जे आब साहित्यकार, साहित्यप्रेमी एवं पाठक वर्ग पोथी कीनऽ लागल छथि आ एक पोथीक लागत ओसूलि, दोसर पोथी छपयबाक खर्च बहार कैल जा सकैछ । हुनक ई विश्वास सार्थक सिद्ध होनि तदर्थ हमर शुभकामना । ☐

कीर्त्तिनारायण मिश्र

विजयादशी

1995

क्रम



साहित्यक उद्यानपाल आचार्यश्री रमानाथ झा

1965 मे राजकमल जीक एकटा लेख-- 'हमरालोकनिक युग आ मैथिली कविता' मिथिला मिहिरक उनतीस अगस्तक अंक मे छपल रहनि। हम अपन प्रतिक्रिया हुनका पठौलियनि। उत्तर मे ओ लिखलनि – अहाँ हिन्दी मे मैथिली पर (ओहि सँ किछु मास पूर्व 'ज्ञानोदय' मे मैथिली लोकगीत एवं कविता पर हमर एकटा परिचयात्मक लेख छपल छल) लिखैत छी, मैथिलीमे आधुनिक कविता पर लिखू। हम हुनका लिखलियनि– मैथिलीक आधुनिक काव्य प्रवृत्ति पर लिखऽ सँ पहिने समस्त पुरान आ नव कविताक अध्ययन आवश्यक – से सामग्रीक अभाव मे संभव नहि। ओ पुनः आदेश देलनि जे गाम गेलापर हम दरभंगा जाइ आ प्रो॰ रमानाथ झाजी सँ सम्पर्क करी तथा ग्रंथालयक माध्यम सँ सामग्री जुटयबाक प्रयास करी।

किछु मासक बाद किसुन जीक पत्र भेटल। हुनको आग्रह छल जे नव कविता पर लेख लिखि संभावित सेमिनारक लेल पठा दिअनि।

अपन एहि दुनू वरेण्यक आदेशक पालनक लेल आवश्यक पोथी जुटाएब, पढ़ब आ लेख लिखब अनिवार्य भऽ गेल।

दरभंगा गेला पर ज्ञात भेल जे श्रद्धेय रमानाथ बाबू बाहर गेल छथि। श्री रमेन्द्र नारायण चौधरी, डा॰ दुर्गानाथ झा 'श्रीश' सँ परिचय करौलनि। ग्रंथालयक बहुतरास कविता केर एवं कविता पर पोथी प्राप्त भेल। रमानाथ झाजी द्वारा सम्पादित मैथिली काव्य - संग्रहक तीनू खण्ड एवं आन - आन सम्पादित - संकलित ग्रंथ सभ उपलब्ध करा देल गेल।

प्रायः दू मासक अविश्रान्त अध्ययनक बाद जखन लिखऽ बैसलहुँ तऽ मैथिली कविताक सम्पूर्ण पृष्ठभूमि, परम्परा, रूढ़ि, प्रवृत्ति एवं वर्त्तमान स्थितिपर अपन विश्लेषणात्मक भूमिकाक सङ रमानाथ बाबू द्वारा सम्पादित पोथी सभ सँ बड़ मदति भेटल छल।

हमर लेख तैयार भेल आ सुपौलक सेमिनार मे पढ़ल गेल (पछाति ओ थोड़ेक विस्तारक सङ 'सीमान्त'क भूमिकाक रूप मे छपल)। हम 'नवीन गीत'क भूमिका तथा रमानाथ बाबू द्वारा नवीन कविताक चयन मे अपनाओल दृष्टिकोणसँ ततेक प्रभावित भेल छलहुँ, जे अपन पहिल पोथी छपयबा सँ पूर्व हुनका सँ परामर्श लेब आवश्यक बुझना गेल छल। किन्तु से सम्भव नहि भऽ सकल। हुनक पाण्डित्य, शोध-कार्य, मैथिली-सेवा, भाषा मे एकरूपता आनऽक लेल कैल गेल प्रयास, दुर्लभ पाण्डुलिपि सभक संकलन, पुनरुद्धार क लेल उठाओल कष्ट सभक अन्दाज ओही अवधि मे लागल छल। हुनका पढ़ैत भेल छल जे साहित्य मे मूर्धन्यता मात्र मौलिक लेखनेक बलपर नहि प्राप्त कैल जा सकैछ, बहुतरास काज एकर अतिरिक्तो एहन छैक जकरा प्रति समर्पित भए व्यक्ति अपन सार्थकता, महनीयता सिद्ध कऽ सकैत अछि।

'सीमान्त' छपला पर जखन हुनका प्रति पठौलियनि तऽ हुनक प्रतिक्रिया छल —

'अहाँक पत्र नेपाल सँ फिरला उत्तर भेटल। ताहि सँ दू दिन पूर्व श्री रेणु जी अहाँक पोथी दए गेल छलाह। मुदा हम तऽ गत मासहि श्री महेन्द्र नारायणजी सँ समाचार बूझि जे अहाँक कविता-संग्रह प्रकाशित भेल अछि, ग्रंथालयसँ एकप्रति आनि

पढ़ि गेल छलहुँ। श्री रेणु जीक देल पोथी तकरहु पढ़ि गेल छलहुँ। आइ पुनः एकबेर पढ़ल अछि। अशेष अभिनन्दन जे एहन सुन्दर पोथी छपाओल अछि, अनेक संवर्धना जे एहन सुन्दर कविता रचल अछि, हार्दिक शुभकामना जे अहाँक प्रतिभाक विकास हो, उत्साह स्थिर रहए, यशस्वी होइ।

भवदीय

श्री रमानाथ झा'

हुनका सन निविष्ट विद्वान एवं काव्य-मीमांसक सँ एहन उत्साहवर्द्धक पत्र पाबि प्रसन्नताक अनुभव करब स्वाभाविक छल, किन्तु हमरा लेल सभ सँ महत्वपूर्ण छल अकविताक अपन अवधारणाक प्रति हुनक प्रतिक्रिया जानब एवं हुनका सँ ओहि समय मे प्रचलित 'एन्टी - पोयट्री' तथा 'नॉन - पोयट्री' पर विस्तार सँ चर्चा करब, यूरोप एवं अमेरिका मे 'क्लासिक्स' क विरुद्ध चलैत आन्दोलनक पृष्ठभूमि केँ बूझब, सम्पन्न एवं गरीब देशक (आजुक शब्दावली मे विकसित एवं विकासशील देशक) केर आधुनिकता तथा आधुनिक बोध केर भावनात्मक, बौद्धिक एवं संरचनात्मक भिन्नता केँ सम्बद्ध देशक सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक अवस्थितिक परिप्रेक्ष्य मे ओकर चिन्ताधारा सँ विशद रूप मे परिचित होयब।

ओ प्रायः यात्रा पर रहैत छलाह। पत्राचार कए साक्षात्कारक लेल पूर्वानुमति लेब संभव नहि छल। श्री रमेन्द्र नारायण चौधरी, सोमदेव जी एवं रेणु जी – तीनू केँ भार देने रहियनि जे ओ जखन दरभंगा फिरथि, हमरा लगले बजा लेल जाय।

हम दरभंगा पहुँचैत छी आ ग्रंथालय सँ होइत भिनसुरके पहर हुनक वासा राजकुमारगंज पहुँचि जाइत छी। ओ पूजापर बैसल रहथि आ जाप कऽ रहल छलथि। एक व्यक्ति बाहर आबि हमर परिचय पूछैत छथि आ आदरपूर्वक भीतर लऽ जाइत छथि। ओ व्यक्ति छलाह आचार्य जीक सुपुत्र डा० नरनाथ झा जे डी० एस० कॉलेज, कटिहार मे प्राध्यापक छलाह। हुनका हम अपन अयबाक उद्देश्य कहैत छियनि। ओ अत्मीयतापूर्ण आतिथ्य करैत आश्वासन दैत छथि जे साक्षात्कार अवश्य हैत।

ओ पूजा पर सँ उठितहि 'बैसक' मे अयलाह एवं हमर श्रद्धा - ज्ञापन केँ आशीर्वादाद्र कैलनि।

बड़ीकाल धरि अत्यन्त धैर्यपूर्वक परम्परा, पारम्परिक एवं आधुनिक कविता, आधुनिकता एवं नव कविताक सम्बन्ध मे हमर विचार, मान्यता, जिज्ञासा एवं प्रश्न केँ सुनैत बीच - बीच मे अपन अभिमत सँ अवगत कराबैत रहलाह।

अपन अधिकांश मान्यताक प्रति हुनक सहमति हमरा लेल आश्चर्यक विषय छल। मात्र पुरनके पीढ़ीक नहि, नवको पीढ़ीक कवि - लेखक नव कविता, अकविता तथा सीमान्तक भूमिका पर अपन तीव्र विरोध प्रकट कऽ रहल छलाह, ओतय रमानाथ बाबूक अनुकूल प्रतिक्रिया बड़का संतोष देलक।

'आखर' बहार करबाक योजना बनल। ओकरा नव लेखन एवं नव लेखकक मंचक रूप मे प्रस्तुत करैत नव हस्ताक्षर केँ प्रमुखता सँ स्थान देबाक निर्णय भेल, किन्तु मैथिलीक मान्यताक लेल कतेक वर्ष सँ चलि रहल आन्दोलन मे बिना सहयोग देने,

कोनो साहित्यिक दायित्वक निर्वाहक बात सोचब निरर्थक छल। ओकर लक्ष्य उद्घोषित कैल गेल–'आखर नव जागरणक प्रतीक बनि सकय तेँ एकर एक हाथमे भाषा-आन्दोलनक ध्वजदण्ड तथा दोसर हाथ मे साहित्य-लेखनक कलम देल गेल अछि। ··स्वस्थ आन्दोलन, उत्कृष्ट लेखन तथा जीवन्त परम्पराक स्थापन एकर अभीष्ट।' ('आखर'क प्रवेशांक क सम्पादकीय केर अंश)

मैथिली आन्दोलन केँ नेतृत्व प्रदान करऽ वला आ ओहि संघर्ष मे महत्वपूर्ण योगदान दिअऽ वला किछु शीर्षस्थ व्यक्तिक नामक सूची तैयार कैल गेल। किछु ओहनो व्यक्ति तथा संस्थाक नाम लिखल गेल, जिनक प्रत्यक्ष भूमिका न्यून छलनि, किन्तु अपन कृतित्व आ सामाजिक प्रभाव सँ मैथिलीक प्रचार मे सहयोग कऽ रहल छलथि। ओहि सूची मे आचार्य रमानाथ झाक नाम प्रथम छलनि। हम हुनका सँ मैथिली आन्दोलनक रूपरेखा सँ परिचित कराबऽ वला लेख लिखि प्रवेशांकक लेल पठयबाक अनुरोध कयलियनि एवं सूचीबद्ध सभ वरिष्ठ मैथिली सेवी एवं मैथिलीक हितसाधन मे लागल विद्वान केँ व्यक्तिगत पत्र पठा रचनाक लेल आग्रह कैलियनि।

प्रो० श्री रमानाथ झा तत्काल अपन विचार लिपिबद्ध कए पठा देलनि। संलग्न पत्र मे लिखल छल —

सी० एम० कॉलेज, दरभंगा

प्रियवर श्री कीर्त्तिनारायण जी, 18.9.67

हम दिल्ली गेल छलहुँ – ओतय सँ आपस भेला पर अहाँक पत्र भेटल। आदेशानुसार मैथिलीक आन्दोलन पर अपन विचार पाँच पात मे लिखि पठाए रहल छी।

जहिया जाहि विषय पर जतेक टा जेहन लेख माङब हम तुरन्त पठा देब। कलकत्ताक मित्रवर्गक हम तेहन गुणविमुग्ध छी जे सबसँ पूर्व हमरा हेतु हुनके आदेश पालनीय होइत अछि।

एहि लेख मे प्रतिक्रियाक बड़ अवकाश छैक से देखबे करबैक। हम बड़ संयत भाषा मे लिखल अछि ओ व्यक्तिगत आक्षेप कतहु नहि कएल अछि। पसिन्द अएबे करत।

संभव एक दिनक हेतु कलकत्ता आबी। अहाँ केँ तऽ प्रायः सूचना नहि दए सकब मुदा श्री पाठक जीक दर्शनार्थ शम्भु चटर्जी स्ट्रीट तथा महेन्द्र जीक दर्शनार्थ रामकुमार रक्षित लेन अवश्य जाएब।

बहुतरास काज हाथ केँ लए लेल अछि तेँ समय नहि बचैत अछि। अतएव पत्रोत्तर मे जँ बिलम्ब हो तँ अन्यथा नहि मानब। एकटा आओर लेख प्रायः पठाए सकब – प्रो० श्री शङ्कर कुमार झाक। ओ वचन देलैन्हि अछि। हँ, लेख केवल उत्तम रहए से देखब। मिहिर वा दर्शन जकाँ नहि।

भवदीय

कुशलाकांक्षी

श्री रमानाथ झा'

हुनक ओ महत्वपूर्ण लेख आखरक प्रवेशांक मे 'परिचर्चा' स्तम्भक अन्तर्गत छापल गेल छल । ओहि पर प्राप्त प्रतिक्रिया मे ओकरा 'मैथिली आन्दोलनक दस्तावेज' कहल गेल छलैक । ओ ओहि मे मैथिली केँ अनेक उपभाषा सँ युक्त समृद्ध साहित्यिक परम्परा वला एक स्वतंत्र भाषा सिद्ध करैत, ओकरा विरुद्ध चलैत सरकारी एवं राजनीतिक दुष्प्रचार मे अन्तर्निहित स्वार्थ पर प्रहार करैत दू कोटि सँ बेशी मैथिली भाषी केँ एकता बद्ध भए आन्दोलनक लेल आह्वान कैने छलाह । ओहि सँ पूर्व हुनक एकटा पुस्तिका छपल रहनि जाहि मे साहित्य अकादमी द्वारा मान्यताप्राप्त मैथिलीक तत्कालीन समस्या पर अपन विचार आओर समाधान प्रस्तुत कैने छलाह ।

'साहित्य पत्र' क माध्यम सँ मैथिलीक लेखनशैली मे एकरूपता आनऽ क लेल किछु विद्वान सँ विचार - विमर्श कए ओ एकटा अभियान चलौने रहथि किन्तु, समस्त विद्वत्वर्ग द्वारा ओकरा समर्थन नहि भेटलैक आ ओ किछु विद्वानक व्यक्तिगत लेखन-शैली बनि कए रहि गेल । रमानाथ बाबू स्वयं ओकर कठोरता सँ पालन करैत रहथि । हुनका ई स्वीकार नहि रहनि जे हुनक लेख मे वर्तनी - सम्बन्धी कोनो परिवर्तन कैल जाय । ओ अपन रचनाक सङ पठाओल पत्र मे सभ केँ लिखि दैत रहथि जे एकरा यथावत छापल जाय । एहन पत्र अपन लेखक सङ ओ हमरो पठौने रहथि ।

भाषा अथवा वर्तनी सम्बन्धी कोनो सुविचारित मानदण्ड वा सर्वसम्मत रूप हमरा सभक समक्ष नहि रहए किन्तु, आखरक लेल ई निर्णय लेल गेल छल जे अधिकांश लोक जेना बाजैत छथि, ओकर साहित्यिक रूप आ अधिकांश लेखक - विद्वान द्वारा अपनाओल शैलीक आधार पर वर्तनी सम्बन्धी एकरूपता आनबाक प्रयास कैल जाय । एहि निर्णयक आधार पर जेना आन - आन रचना केँ संशोधित कए प्रेस - कॉपी तैयार कैल जाइत रहैक, तहिना रमानाथ बाबूक लेख मे सेहो परिवर्त्तन कऽ देल गेलैक । मिथिला मिहिर हुनक आपत्ति केँ ध्यान मे राखि सम्पादकीय नोट दऽ दैत छल जे लेखक क आदेशानुसार लेख केँ यथावत छापल जा रहल अछि किन्तु, आखर एहि शालीनताक निर्वाह नहि कऽ सकल । पहिल अंक बहरायल । ओहि अवधि मे आचार्य जीक आगमन भेल । संयोगवश हम कलकत्ता सँ बाहर गेल रही । आखर - परिवार तत्काल हुनक सम्मान मे गोष्ठी आयोजित कैलक आ प्रवेशांक समर्पित कैलकनि । अंकक पहिल रचना हुनके रहनि । ओ ओकरा पढ़ि गम्भीर भऽ गेलाह । निश्चित रूप सँ सम्पादकीय धृष्टताक प्रति आक्रोश उत्पन्न भेल हेतन्हि । हम सभ पहिनहि सँ आशंकित रही । किन्तु, ओ अत्यन्त सहज मुद्रा मे संशोधित वर्तनी केँ तेरह अथवा सतरह ठाम रेखांकित कए उपस्थित सदस्यलोकनि केँ देखौलथिन आ कहलथिन जे हमर स्पष्ट आदेशक बादो लेख मे एतेक ठाम संशोधन कऽ देल गेल अछि । पहिल पृष्ठ पर ओ हमरा लेल संदेश लिखि कए छोड़ि देलनि ।

कलकत्ता अयला पर हुनक अप्रसन्नता एवं प्रतिक्रिया सँ अवगत भेलहुँ । ई तँ प्रत्याशिते छल । यद्यपि कोनो संशोधन निर्धारित नीतिक अन्तर्गत खूब सोचि - विचारि कऽ कैल गेल छल तथापि हमरा अपराध - बोध भेल । प्रयोग करब बेजाय नहि छल किन्तु रमानाथ बाबू सन वरेण्य विद्वान, रचनाकार तथा विभिन्न लेखनशैली पर

पूर्ण विचार कयलाक बाद कोनो पद्धति चालू करऽ वला भाषाशास्त्री सँ पूर्वानुमति लेब आवश्यक छल । हम अपन नीतिक दृढ़तापूर्वक पक्ष प्रस्तुत करैत पूर्वानुमतिक बिना शब्द क रूप मे परिवर्त्तनक लेल क्षमायाचना करैत सहयोग दैत रहबाक आग्रह कैलियनि । उत्तर मे ओ लिखलनि —

राजकुमारगंज, दरभंगा

प्रियवर श्री कीर्त्तिनारायण जी, 29.11.67

अहाँक 24 क पत्र राति राँची सँ आपस भेला पर भेटल । अहाँ टा के नहि, हमरहु बड़ मनोहानि भेल जे अहाँ सँ भेंट नहि भेल । अपन प्रतिक्रिया हम स्पष्ट शब्द मे 'आखर - परिवार'क सभा मे कहल । स्पष्ट कहल ओ स्पष्टवक्ता न वञ्चक । जे मोन मे भेल से सभ टा कहल । सेवाक हेतु सतत तैयार छी परन्तु एकहि व्यक्तिक लेख बारम्बार नहि छापल करू, सेहो विचार कहि देल । ओना हमरा सँ जहिया जाहि विषय पर जतेक टा जेहन लेख कहब, हम लीखि पठाए देब । कनेको संदेह नहि करु जे हम मोन मे किछु राखि कहल । भविष्यक हेतु सावधान करबाक हेतु ओहि अङ्कके सत्ये अङ्कित कए राखि देल जे हमर सौहार्द्रक चेन्ह रहए । भाषाक सङ्ग श्री राजनन्दन जी केँ बहुतरास गप्प कहलिऐन्हि ओ दू टा पोथीक नाम कहि देलिऐन्हि जे पढ़थु — बहुतरास शंकाक समाधान भए जयतन्हि । अतएव हमर सेवाक हेतु निश्चिन्त रहू । अहाँ लोकनिक भरोस अछि मुदा चाहैत छी जे अहाँलोकनि नवीनताक जोश मे भसिआए नहि जाइ तेँ अपन अनुभव सँ किछु वेग केँ कम करऽ चाहैत छी ।

कुशलाकांक्षी

श्री रमानाथ

ई पत्र पढ़ि कए लागल छल जे ओ साधनाक जाहि स्तर पर पहुँचि गेल छथि ओतय क्रोध - आक्रोशक लेल कोनो स्थान नहि छैक, क्षमाशीलक लेल अनुकूल एवं प्रतिकूल मे अन्तर नहि रहि जाइत छैक ।

हुनक सौहार्द्रक चेन्ह, हुनका द्वारा अंकित प्रवेशांकक ओहि पृष्ठक ब्लॉक बनबा कए अगला अंकक कवर - पृष्ठ पर छापऽ चाहैत छलहुँ किन्तु, आर्थिक कारण सँ से संभव नहि भेल । दुर्भाग्यवश आइ ओ प्रतिओ नहि भेटि रहल अछि ।

आखर मे अशुद्धि बहुत रहैत छलैक । भाषा सम्बन्धी तथा हिन्दीआइन शब्दक प्रयोग सम्बन्धी दोष तऽ रहिते छलैक, प्रूफक अशुद्धि आओर अलंकृत कऽ दैत छलैक । 'युयुत्सा'क मैथिल कम्पोजीटर आखरोक कम्पोजिंग करैत छलाह । हुनका ज्ञात छलनि जे हम 'दछिनाहा' छी । हमर मैथिली केँ शुद्ध करब ओ अपन अधिकार बूझैत छलाह । मित्रवर्गक मध्य कार्य - विभाजन एना छल — पहिल प्रूफ राजनन्दन जी देखताह, दोसर वीरेन्द्र जी एवं अंतिम हम । किन्तु सभ सँ ऊपर कम्पोजीटर साहब रहथि । ओ फर्मा केँ मशीन पर चढ़बैत - चढ़बैत अपना हिसाब सँ संशोधन करैत रहब अपन मैथिली सेवा बूझैत रहथि । हम मित्रवर्गक मध्य 'आखर' केँ परिहास सँ 'अशुद्धि-पत्र' कहैत छलियैक । दू - तीन अंकक बाद अशुद्धि मे कमी अयलैक । चारिम अंक रमानाथ बाबू केँ

भेजलनि तऽ ओ पत्र देलनि —

सी० एम० कॉलेज, दरभंगा
20.2.68

माननीय श्री कीर्तिनारायण जी,

'आखर' भेटैत अछि । बड़ सन्तोष अछि, जे स्तरक रक्षा भए रहल अछि । अशुद्धि सेहो थोड़ भेल जाइत अछि । संस्मरण लिखबाक लगले फुरसति नहि अछि । मन मे रखने छी । अवसर होइतहि लीखि कें पठाए देब । तावत एकटा वक्तव्य प्रकाशनार्थ पठबैत छी । विषय ओही सँ अवगत करब । काल्हिए दिल्ली सँ आएल छी । 7 कें सिन्द्री जएबाक अछि । स्वास्थ्य ठीक नहि अछि, तथापि व्यस्तताक जीवन व्यतीत कए रहल छी । आश्वासन अछि, अहाँ सन सन साहित्यिक क सौहार्द ।

भवदीय
श्री रमानाथ झा

आखर पर हुनक प्रोत्साहन एवं अनुशासन दुनूक प्रभाव पड़ल छलैक । हमरो ओ भाषाक अनवधानताक सम्बन्ध मे बराबरि सावधान करैत रहथि ।

डा० दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क सङ हमर मैत्री पारिवारिक अन्तरंगता धरि पहुँचि गेल छल किन्तु, ई ज्ञात नहि भेल छल जे ओ आचार्यश्री रमानाथ झा सँ निर्देशन पाबि पी-एच० डी० कैने छथि अथवा हुनक सम्बन्धी छथि । एक दिन वार्त्ताक क्रम मे हम हुनका कहलियनि जे रमानाथ बाबू मिथिलाक बाहर मैथिलीक स्तम्भ मानल जाइत छथि, अपन कृतित्व आ मैथिली सेवाक बलपर ओ शिखर - पुरुष भऽ गेल छथि किन्तु, दरभंगा मे हुनक चर्चा शुरू भेला पर लोक विरोध मे बाजऽ लगैत छथि । ओ कहलनि– छैक तऽ इएह स्थिति किन्तु, ओ छैक ईर्ष्याक कारण । अवसरक ताक मे बैसल शत्रुक लेल हुनक साधना, पद, प्रतिष्ठा आ लोकप्रियता असहनीय छनि । ओ हुनक मनस्विता, मैथिलीक भण्डार कें भरऽक लेल कैल गेल संघर्ष, योग्यता, कार्यक्षमता एवं पाण्डित्य कें स्वीकारि हुनक मूल्यांकन करऽक बदला मे हुनका विरुद्ध दुष्प्रचार मे लागल रहैत छथि । ओ एहि सभक परवाहि नहि कए अपन लक्ष्य - साधन मे लागल रहैत छथि । हुनका समक्ष बड़का लक्ष्य छनि, तें छोट बात अथवा निन्दा - स्तुति पर ध्यान नहि दैत छथि । हमरो लागल छल विरोधक मूल कारण बेशी भाग लोकक हुनका प्रति ईर्ष्याभाव छैक । व्यक्तिगत रूप सँ हमरा हुनक नारिकेलसमाकार विराट व्यक्तित्वक आन्तरिक धवलता - ऋजुता - सरसता - मधुरता, युवावर्गक प्रति आदरभाव, उदारता सभ पर विचार कैला पर हुनका सन दोसर उदाहरण नहि भेटैत छल ।

हुनक अध्ययन - वृत्ति, शोध - प्रवृत्ति, सत्यान्वेषणक रुचि, संस्कृत तथा अंग्रेजी साहित्यक वैदुष्य, अनुसंधान एवं समीक्षाक क्षेत्र मे अपनाओल वैज्ञानिक मानदण्ड आदिक जे थोड़ - बहुत ज्ञान भेल छल, ओ अति सामान्य आ सूचनात्मक छल, गंभीर अध्ययन सँ नहि । हम हुनका द्वारा सम्पादित - संकलित पोथी - पत्रिका - प्रबन्धक सम्पादकीय तथा भूमिका पर एहि लेल दृष्टिपात कैने रही जे नव लेखन अथवा नव कविताक संबंध मे हुनक दृष्टिकोण जानि सकी; ओहि सभ मे जे प्रयोजनीय आओर प्रासंगिक अछि,

ओहि सँ अपना कें परिचित करा सकी । हमर लक्ष्य कतबहु सीमित एवं स्वार्थ - प्रेरित छल, लाभ अशेष भेल । मैथिलीक हित - साधनक लेल हुनक चिन्ता, प्रयास आ विशाल योजनाक पता लागल । मैथिली कविता अथवा गीतक स्वरूप - निर्धारणक लेल कैल गेल हुनक काज जतेक आकर्षित कैलक ओहि सँ बेशी प्रभावोत्पादक लागल मैथिली गद्य कें प्रौढ़ बनयबाक लेल कैल गेल हुनक प्रयास । हुनक हरिश्चन्द्र उपाख्यान ऐतरेय ब्राह्मणक अथवा उदयन कथा कथासरित्सागरक अनुवाद नहि, मूल कें समक्ष राखि गद्य - सृजन क प्रयास लागल छल जकर आदर्श रूप ओ वररुचि कथा मे प्रस्तुत कैलनि । पुरुष - परीक्षाक भूमिका, विद्यापतिक व्यक्तित्वक निरूपण, विद्यापति - कालीन समाजक अध्ययन सभ मे ओ अपन सत्यान्वेषी प्रवृत्ति एवं गवेषणा कें वैज्ञानिक आधार देबाक मानसिकता क परिचय देलनि । पँजिआड़क जीविकाक साधन पञ्जी साहित्यक अध्ययन - संकलन तथा ओकर वैज्ञानिक विश्लेषणक अतिरिक्त ओ स्वयं सहस्राधिक पृष्ठक लेखन कैलनि । हुनका पाँजिक आधार पर कवि विद्यापति सँ बेशी श्रेष्ठ व्यक्ति विद्यापति लागैत छलथिन, हुनक पुरुषार्थ - साहित्य हुनका बेशी आकर्षित करैत छलनि ।

हुनका मे विलक्षण बहुमुखी - प्रतिभा, दुर्धर्ष संकल्पशक्ति आ दुर्निवार कर्त्तव्य - निष्ठा छलनि, जकर बहुविध प्रयोग ओ मिथिलाक गौरवकें प्रकाश मे आनऽ तथा मैथिली साहित्य कें समृद्ध करऽ मे कैलनि, हम हुनक प्रभामण्डलक जतबा टा अंश अथवा अंश सँ प्रभावित भेल छलहुँ, ओकरे निरतिशयता एवं विचारोत्तेजकता हमरा श्रद्धावनत आ साक्रय करऽक लेल पर्याप्त छल ।

महाकवि यात्री हुनका 'सारस्वत सरक मराल' एवं 'साहित्यक उद्यानपाल' कहि सम्बोधित कैने रहथि । ई दुनू सम्बोधन हुनका पर पूर्णतः सटीक तथा सार्थक सिद्ध भेल-

सारस्वत सरमे हे मराल !
हे साहित्यक उद्यानपाल !
तुअ तेज पाबि, ई मैथिलीक –
उत्फुल्ल जलज, दृढ़मूल नाल !

☐

प्रकाशित — कर्णामृत : कलकत्ता : जनवरी - मार्च 1995.

जन - जन केर हृदय सम्राट प्रो० हरिमोहन झा

संसार मे किछु एहन महान व्यक्ति होइत छथि, जे अपन जीवनकाले मे किंवदन्ती बनि जाइत छथि । मैथिलीक हास्य आ कथा सम्राट प्रो० हरिमोहन झा ओही कोटिक महान व्यक्ति मे अबैत छथि ।

हमर परिवार मे बाजल तऽ मैथिली जाइत रहय किन्तु, चर्चा होइत छलनि संस्कृत आ हिन्दीक साहित्यकार सभक हुनकहि भाषा मे । अपवादक रूप मे रहथि मैथिलीक स्व० भुवन जी, प्रो० हरिमोहन झा, यात्री जी एवं आरसी बाबू । कारण, स्व० भुवन जी सँ काका, प्रो० हरिमोहन झा सँ पिता आ यात्री जी सँ घरक दुधमुँहा बच्चा सँ लऽ कए हमर वृद्ध पितामह धरिक मैत्री । आरसी बाबू हमर सम्पूर्ण क्षेत्र अथवा जिला - जैबारक प्रत्येक व्यक्तिक मित्र । हमर परिवार मात्र ओहि क्षेत्र मे अवस्थित छल, जतय आरसी बाबू पर एक छत्र मैत्रीक दाबी कयनिहारक संख्या अनगन्ती । लड़ाइ - झगड़ा, मामिला - मोकदिमा सँ दूर भागऽ वला हमर परिवार हुनका पर दाबी करऽक साहस आइयो नहि कऽ सकैत अछि ।

हमरा परिवार मे जोर सँ हँसल नहि जाइत छल, ठहक्का लगयबाक तऽ प्रश्ने नहि । हँसी केर मर्यादित होयब आवश्यक होइत छलैक – सेहो शास्त्रीय चर्चाक मध्य अपन आन्तरिक विनोद आ उद्‌गार प्रकट करऽक क्रम मे । हमरा सन पढ़ऽ सँ बेशी खेलऽ मे रुचि राखऽ वला बालकक लेल एहि गुरुगंभीर वातावरण मे मोसकिले - मोसकिल । सोचैत रही, पितामह 'बालोहं जगदानन्द....' क बदला मे 'वृद्धोहं जगदानन्द..' कियैक नहि सिखबैत रहथि ।

एक दिन विद्यालय सँ घूरि कए अबैत छी कि दूरे सँ ठहक्का सुनाइ पड़ैत अछि । दू - चारि डेग चलैत छी कि फेर ठहक्का । आओर आगाँ बढ़ैत छी कि बुझाइत अछि, दरबाजा पर भीड़ लागल अछि । सीढ़ी पर पयर रखैत छी तऽ देखैत छी पर्दाक अऽढ़ मे माय - पितिआइन ठाढ़ि छथि । हम भीतर प्रवेश कए, पोथी राखि बाहर आबैत छी । देखैत छी, भैया 'वैदेही' सँ किछु पढ़ि रहल छथि आ परिवार तथा पड़ोसक लोक सभ सुनि - सुनि ठहक्का पाड़ि रहल छथि ।

'वैदेही' क नवका अंक मे प्रो० हरिमोहन झाक कथा छपल रहनि । कात मे राखल छल 'कहानी'क अंक सभ, जाहि मे भैया द्वारा हिन्दीमे अनुवादित प्रोफेसर साहबक अनेक कथा प्रकाशित भेल रहनि ।

अनुवादक क्रम मे भैया हरिमोहन बाबूक प्रियपात्र भऽ गेल रहथि आ दुनू मे पत्र-व्यवहार होइत छलनि ।

पटना कॉलेजक छात्र भेलाक बाद एक दिन एक गोट मित्र कें पूछैत छियैक — 'अहाँ प्रोफेसर हरिमोहन झा कें देखने छियनि ?' ओ कहैत अछि–'कियैक नहि देखबनि ? अपन विभाग (अर्थशास्त्र)क सामने सँ रोज जाइत छथि ।' हम कहलियैक— 'कने हमरो चिन्हा देब ?' ओ कहलक – 'अवश्य, किन्तु तत्काल हुनक बालक कें चीन्हि लिअऽ । ओ जे पटना कॉलेजक मेन गेटक सामने दू टा 'हीरो' जकाँ लगैत व्यक्ति ठाढ़ अछि, ओहि मे दहिन दिस वला व्यक्ति दर्शनशास्त्र विभागाध्यक्ष प्रो० हरिमोहन झा जीक जेठ बालक

राजमोहन झा आ बाम दिस अंग्रेजी विभागाध्यक्ष प्रोफेसर आर. के. सिन्हा जीक सुपुत्र 'विनय' । ई दुनू संभवतः विश्वविद्यालयक अन्तिम वर्ष मे छथि एवं समस्त परिसर आ विद्यार्थीवर्ग मे विख्यात छथि ।' एक तऽ ओहिना ओहि समय मे कोनो 'सीनियर' सँ बतिआइ मे 'जूनियर' बड़ धखाइत छल । ताहू मे, राजमोहन जी हमरा सँ चारि वर्ष 'सीनियर' रहथि । परिचय बढ़ाबऽक साहस कोना कऽ सकितहुँ ?

प्रो० हरिमोहन झाक दर्शन रोज होमऽ लागल । हुनका जाइत - अबइत देखि आन - आन विद्यार्थी जकाँ हमहुँ प्रणाम करियनि आ हुनक जँ ध्यान जानि तऽ मूड़ डोला कए आगाँ बढ़ि जाइथ ।

महाविद्यालय, विश्वविद्यालय तथा नगरक सांस्कृतिक - साहित्यिक कार्यक्रम मे हुनक भाषण आ कविता - पाठ सुनऽ केर अवसर भेटए । कवि होयबाक एकटा सद्यः लाभ ई भेटैत रहए जे कवि सम्मेलन मे हमहुँ आमंत्रित भऽ जाइत रही, मंच पर बैसाओल जाइत रही । 1960 मे ह्वीलर सीनेट हॉल मे चेतना समिति द्वारा आयोजित विद्यापति समारोह मे प्रो० हुमायूँ कबीर, राष्ट्रकवि दिनकर, प्रो० हरिमोहन झा समेत अनेक विशिष्ट व्यक्तिक उपस्थिति मे कविता - पाठ कए अपन स्थान पर आबि बैसैत छी, कि प्रो० हरिमोहन झा पूछैत छथि —'अहाँ दिनेश बाबूक बालक छी ने ?' हम सकारात्मक उत्तर दए आश्चर्य मे पड़ि गेलहुँ जे ई हमरा कोना चिन्हलनि ? पछाति हमरा पता लागल जे हमर पिताक अन्तरंग सखा डा० बेचन झा एवं बरौनी निवासी प्रसिद्ध इतिहास - वेत्ता डा० रामशरण शर्मा सँ हमर परिचय हुनका पहिनहि भेटि गेल रहनि । परिचय प्राप्त कए तत्काले बिसरि जाइ वला प्रोफेसर साहब कें हम मोन रहलियनि — एहि बातक प्रसन्नता कतेक दिन धरि रहल छल ।

कलकत्ता सँ 'परिवेश' बहार करैत रही तऽ ओकर अंक हरिमोहन बाबू कें सेहो पठबैत रहियनि । पटना अयला पर हुनका सँ भेंट करियनि तऽ ओ ओहि लघुकाय हिन्दी पत्रिकाक प्रशंसा करैत ओकरा निरन्तर बहार करऽ लेल प्रोत्साहित करथि, तहिया राजमोहन जी सेहो बेशी हिन्दीये मे लिखैत रहथि आ हमरा दुनूक परिचय घनिष्ठ मैत्री मे बदलि गेल छल ।

एक बेर गाम अबैत छी तऽ दरभंगा जाइत छी । ज्ञात होइत अछि, राजमोहन जी सेहो दरभंगे मे रहथि आ किछुए घंटा पहिने पटना चलि गेल छथि । हम पटना पहुँचि प्रोफेसर साहेबक रानीघाट वला प्रोफेसर्स क्वाटर जाइत छी । गेटे पर सँ देखायल जे, लॉन मे लागल कुर्सी पर ओ सपत्नीक बैसल छथि । हम लऽग पहुँचि दुनूक चरण-स्पर्श करैत अपन परिचय दए राजमोहन जीक मादे पूछैत छियनि । ज्ञात होइत अछि, जे ओ दिल्ली वला संझुका गाड़ी पकड़ऽक लेल स्टेशन विदा भऽ गेल छथि । हम घड़ी देखऽ लगैत छी तऽ ओ कहैत छथि — 'आब तऽ गाड़ी फूजि गेल हेतनि ।' हमरा बैसऽ लेल कहि कुशल - क्षेम पूछऽ लगैत छथि ।

'आखर' पर हुनक प्रतिक्रिया पत्र द्वारा भेटि जाइत छल तथापि जखन ओकर प्रसंग चलल तऽ बहुत रास सुझाव देलनि । पछाति अपन छोट बालक मनमोहन जीक अस्वस्थताक मादे कहलनि । तहिया ओ बी० ए० ऑनर्सक छात्र रहथि । राजमोहन जी

सँ ज्ञात भेल छल जे हुनको लेखन एवं चित्रकला मे अभिरुचि छनि । हमरा झा साहेब आ माय (श्रीमती सुभद्रा झा) हुनक शयनकक्ष लऽ जाइत छथि । ओ ज्वरी अवस्था मे रहथि किन्तु, देखि उत्फुल्ल होइत छथि । हम हुनका मैथिली मे लिखऽक लेल कहैत छियनि । ओ ससंकोच 'बेश' कहैत छथि ।

कलकत्ता पहुँचला पर हुनक पहिल मैथिली कथा— 'छाता आ शेक्सपीयर' भेटैत अछि । 'आखर'क नवहस्ताक्षर स्तम्भ (चारिम अंक; फरवरी '68) मे हुनक परिचयक सङ ओकरा छापल गेल । आइ मनमोहन जी मैथिलीक स्थापित कथाकार मे परिगणित होइत छथि आ निरन्तर लिखि रहल छथि – एकरा हम आखरक उपलब्धि मानैत छियैक ।

विद्यापतिक बाद हरिमोहन बाबू मैथिली मे सर्वाधिक चर्चित भेलाह, सर्वाधिक पढ़ल गेलाह, सर्वाधिक लोकप्रिय भेलाह आ सर्वाधिक प्रभावशाली सिद्ध भेलाह । सामाजिक कुप्रथा, अशिक्षा सँ उत्पन्न अन्धविश्वास, शास्त्रीय हठधर्मिता, धार्मिक वाह्याडम्बर, कर्मकाण्डी कट्टरता, जर्जर परम्परा – सभ पर ओ समधानि कऽ प्रहार कैलनि किन्तु, ताहि लेल विनोदात्मक शैली अपना कए ओ लोक कें, दर्दक अनुभव करितहुँ, हँसऽ (Smile in pain) क लेल बाध्य कऽ देलनि, बिना आघात पहुँचौनहि लोककें अपन कथ्यक मर्म धरि पहुँचा देलनि । हास्य आन्तरिक संस्तुति पर आधारित शारीरिक प्रक्रिया थिकैक किन्तु, व्यंग्यक मुख्य लक्ष्य होइत छैक अर्न्तवेधन, जकर पीड़ा कें कम करऽक लेल हास्य - विनोदक प्रयोग कैल जाइत अछि । मैथिल जन्मजात विनोदप्रिय होइत छथि । ओ छोट सँ छोट आ गंभीर सँ गंभीर बात मे हास्यक तत्वं जोहि लैत छथि । हरिमोहन बाबू लोकक एहि मानसिकता केर रचनात्मक उपयोग कैलनि । शास्त्र, दर्शन आ साहित्य सन गंभीर विषय कें ओ हास्य आ व्यंग्यक प्रयोग द्वारा लोकरंजक एवं सर्वग्राह्य बना देलनि । अपन संदेश कें उपन्यास – 'कन्यादान' तथा 'द्विरागमन' एवं कथा संकलन – प्रणम्य देवता, रंगशाला, तीर्थयात्रा, खट्टर ककाक तरंग, चर्चरी, एकादशी आदिक माध्यम सँ जाहि वैदुष्य तथा दूरदर्शिताक सङ लोक धरि पहुँचौलनि-- ओकर व्यापक प्रभाव पड़तैक, ई असंदिग्ध छल । हमरा जनैत साहित्यक माध्यम सँ विशाल स्तर पर सामाजिक सुधारक लक्ष्यसंधान करऽ वला ओ सर्वाधिक सशक्त रचनाकार छलाह । अपन साहस आ प्रतिभा सँ ओ शास्त्र सँ स्रोतस्विनी (हास्य - विनोदक) बहार कऽ लेलनि ।

हुनक कथ्यक संवाहक छलनि वार्त्तालाप शैली । ओकरा रोचक बनाबऽक लेल ओ अपना कें विभिन्न पात्रक रूप मे विभाजित कए पक्ष - विपक्षक तर्कक खण्डन - मण्डन स्वयं कैलनि । सर्वज्ञान एवं गुण - सम्पन्न खट्टर कका एवं हुनका लऽग अपन जिज्ञासा रखनिहार अथवा प्रश्न कैनिहार भातिज ओ स्वयं रहथि । जाहि काव्य एवं शास्त्र सँ मात्र शिक्षित एवं बुद्धिजीविये वर्गक मनोविनोद होइत छलैक, ओही सँ ओ अनेकानेक विषय, संदर्भ, मान्यता एवं प्रसंग कें बहार कए सभ कें परस्पर विरोधी, विपरीतार्थक ओ अनर्थकारी सिद्ध करैत अपन रोचक शैली मे ओकरा तेहन हास्य - मूलक अथवा

हास्यास्पद सिद्ध कऽ देलनि जे अशिक्षितो वर्गक समय 'काव्य - शास्त्र - विनोद'मे व्यतीत होअए लगलैक । विनोदक शान्त नदी मे हास्यरूपी बाढ़ि आनऽक लेल हुनका बेर - बेर मर्यादाक बान्ह तोड़ऽ पड़ैत छलनि । ओहि बाढ़ि मे श्रोता, पाठक आ दर्शक अपन समस्त परिवारक सङ डूबैत - भसिआइत रहऽ चाहैत छल । विनोद कें हुनक रचना लोकक व्यसन बना देलक । जेना प्राकृतिक बाढ़ि मे सभ ध्वस्त भऽ जाइत छैक, तहिना हुनका द्वारा उत्पन्न हास्यक बाढ़ि मे, भलहि थोड़बे कालक लेल, लोकक दुख - दैन्य, कष्ट - चिन्ता सभ अस्तित्वहीन भऽ जाइत छलैक । एहि अर्थ मे हुनक हास्य नाश आ निर्माण दुनू मे संलग्न छल ।

तार्किकक बुद्धि - क्षेत्र मे भावुकताक लेल कोनो स्थान नहि छैक किन्तु, हरिमोहन बाबू मे भावुकता अपन चरम सीमा पर छलनि । हमरा दृष्टिएँ सामाजिक विकृति आ चारित्रिक स्खलन हुनका जतेक दग्ध - क्षुब्ध करैत छलनि, ओहि सँ बेशी हुनका द्रवित करैत छलनि, लोकक आन्तरिक हाहाकार । हुनक हास्य मे प्रच्छन्न करुणा हँसीक फुलझड़ी सँ वेदनाक स्फुलिंग उत्पन्न करैत छल । हुनक साहित्यक अकल्पनीय प्रभाव पड़ल । 'कन्यादान' पढि कतेक युवक बिना काटरक बिआह कए, व्यवस्था मनयबाक लेल कटिबद्ध पिताक कोप - भाजन बनल रहथि । गामक 'बुच्चीदाय'सभ अंग्रेजी पढ़ऽ लागलि छलीह । पाश्चात्य शिक्षाक गुमान मे ऐंठैत, 'सी. सी. मिश्र' सभक दर्प चूर होअए लागल छलनि । लोकक मनोरंजनक लेल लिखल गेल 'कन्यादान' समाजक आलोचक सिद्ध भेल आ ओहि सँ सुधारक प्रक्रिया शुरू भेल । जतय एक दिस कन्याक पण्डित पिता विकृति, कुरुचि, कृत्रिमता आ फूहर हास्यक लेल हरिमोहन बाबूक खिधांश करैत छलथिन, ओतहि परवश रहि दिन-राति पतिक अविचार - अन्याय सहऽ वाली कन्याक माय बेटीक सङ पठाओल जाय वला साज - सामानक सङ 'कन्यादान'क प्रति साँठैत रहथि । हरिमोहन बाबू कें तिरस्कार आ स्वीकार एकहि सङ भेटलनि ।

कोनो बूढ़ कें जँ ओ कहितथिन जे अहाँ ई तेसर वा तेरहम बिआह कियैक करैत छी, अहाँक लेल तऽ भोजनो दुर्लभ अछि, अभावग्रस्तताक कारण अशक्त शरीर काम - सुख सेहो नहि भोगि सकत, पुत्री आ पौत्रीक वयसक कन्या अहाँ कें पतिक रूप मे कोना स्वीकार करतीह, दारिद्रय मे कुहरैत कुलीनता तऽ अहाँक पार्थिव शरीर कें अग्निसात करऽक लेल काठो कीनऽक सामर्थ्य नहि रखैत अछि– तँ हुनक माथ आगाँ किछु सोचऽक स्थिति मे नहि रहितनि, शरीर पर पट्टी बान्हल रहितनि किन्तु, ओ बूढ़ो सँ हँसी - ठट्ठा करैत अनमेल बिआह पर चर्चा कैलनि, ओकर दुष्परिणाम ओकरा बुझा देलथिन, आ कहलथिन जे वृद्धक लेल कोना तरुणी विष सिद्ध होइत अछि आ अनमेल बिआहक कारण कोना सौभाग्यवती मायक समक्ष विधवा बेटीक संख्या बढ़ल जाइत अछि । हँसिये - हँसी मे त्रुटिक बोध करा देब हुनक लेखनीक विशेषता छलनि ।

गोनू झाक हास्य - व्यंग्य- प्रधान परम्परा मे सामाजिक उद्देश्य सँ शुरू कैल गेल हरिमोहन बाबूक लेखन साहित्यक धरातल कें अभूतपूर्व रूप सँ आन्दोलित कैलक, लोकप्रियताक नव कीर्तिमान स्थापित करैत मैथिली कें भारतीय भाषाक मध्य एकटा जीवन्त भाषाक गरिमा दिऔलक ।

एकटा निविष्ट विद्वान एवं दर्शनशास्त्रक प्रोफेसरक रूप मे ओ ओहुना प्रख्यात भऽ जइतथि किन्तु, जँ लेखक नहि होइतथि तऽ ई राष्ट्रव्यापी लोकप्रियता आ विशाल पाठक - समुदाय नहि भेटितनि। जँ लेखनो पारम्परिक रूप सँ करितथि तऽ ऐतिहासिक महत्व अवश्य भेटितनि किन्तु, जन - जन केर हृदय - सम्राट नहि भऽ पबितथि।

ओ अपन अधिकांश पाठकवर्ग केर 'आपनजन' छलाह, अधिकांश व्यक्तिक पारिवारिक मित्र आ अधिकांश संस्था केँ एक सूत्र मे बान्हि कऽ राखऽ वला संयोजक शक्ति। शिक्षा - जगत सँ सम्बद्ध रहलाक कारण शिक्षिता सभ, भलें हुनका सँ ओ नहि पढ़ने होथि, हुनका अपन गुरू मानैत छलथिन। ओ सभक सम्बन्धी भऽ गेल रहथि। ककाजी, मामाजी, मौसाजी, पिउँसाजी, गुरुजी आदि सम्बोधन सँ ओ अपन अपरिचितो सँ सम्बोधित होइत रहथि। विद्यार्थी वर्ग आ शिक्षक वर्ग सँ लऽ कए चपरासी, किरानी, जज, कलक्टर, नेता, मिनिस्टर, गवर्नर धरि हुनका प्रति श्रद्धावनत रहैत छलनि। जे वर्ग अध्यापन आ लेखन सँ सम्बद्ध छल, ओ हुनका सँ सम्पर्क बढ़यबा मे विशेष सुविधाजनक स्थिति मे छल। ताहू मे, ओ राज्यक राजधानी मे रहैत छलाह आ हुनक ज्येष्ठ पुत्र – राजमोहन झा लोकमिल्लू आ लेखक छलथिन।

हुनक असंख्य स्नेह - भाजन मे हमहुँ एक टा रही किन्तु, लेखक होयबाक कारण नहि, राजमोहन जीक मित्र होयबाक कारण। ओ योग्य पिता केर सुयोग्य पुत्रे नहि रहथि, सुयोग्य पुत्रक सौभाग्यशाली पितो रहथि आ पुत्रक अयोग्यो मित्र केँ आदर दैत रहथि। □

रचनाकाल : 15 अगस्त 1995

हमर पिता, गुरु आ मित्र यात्री जी

1949 क जाड़ फुलबड़िया (बरौनी) बाजारक विश्वबन्धु आयुर्वेद भवन। बड़का टेबुलक चारूकात कुर्सी - बेंच लागल। सभ पर बैसल लोक। स्थानक अभाव में ठाढ़ व्यक्ति सभ एक - दोसर पर झुकैत।

हमर एगारहम वर्ष छल। पाँचम अथवा छठम मे पढ़ैत छलहुँ। भीड़ देखि - सुनि वाह - वाह कऽ रहल अछि — से जानऽ - देखऽ लेल उत्कंठित छलहुँ, मुदा भीड़ केँ चीरिकऽ सन्हियाएब मोसकिल छल।

टेबुल दिस सँ रहि - रहि केँ श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा 'मुकुर', भागवत प्रसाद सिंह, बाल्मीकि प्रसाद 'विकट', रामावतार यादव 'शक्र', डा० भगवान पोद्दार, दिवाकर साहित्याचार्य (हमर पितृव्य डा० दिवाकर मिश्र शास्त्री) तथा अन्य परिचितक समवेत स्वर मे बहराएल प्रशंसाक शब्द आ ठहक्का भितरिआ दृश्य देखऽक लेल आओर जिज्ञासा बढ़ा रहल छल।

आनन्दातिरेक मे भीड़ कनेक एम्हर - ओम्हर होइत अछि आ हम घुसिआ केँ आगू आबि जाइत छी। देखैत छी, झबड़ल दाढ़ी - केश मे पूर्णत: बताह सन लगैत एक गोट व्यक्ति कान्ह पर चितकबरा धुस्सा रखने, कुर्सी पर बैसल किछु सुना रहल अछि। ओकर कौतुक मिश्रित भाषा कखनो - कखनो बड़ गम्भीर भऽ जाइत छलैक। ओकर धाराप्रवाह बाजब आ लोकसभक ध्यानमग्न भए सुनब हमरा विस्मय सँ भरि देलक। मुदा, लगले टेनिआ केँ पाछू कऽ देल जयबाक कारण, ई नहि बूझऽ मे आएल जे ओ व्यक्ति के थिक आ कि सुना रहल अछि।

लालटेनक इजोत मे ई क्रम बड़ीकाल धरि चलैत रहल छल। पश्चाति, भीड़ ओहि व्यक्ति केँ अरिआति केँ हमरा घर धरि पहुँचा देलक। ओ व्यक्ति हमर पितामह केर चरण - स्पर्श केलकनि। पितामह हर्षसँ उत्फुल्ल भए कुशल-क्षेम पूछऽ लगलथिन।

घऽर मे कोनो पाबनि - तिहार वला उत्साह आ ओरिआओन छल।

भोजन - भात होइत रहल। हम एक कात मे ठाढ़ भए सभ किछु देखैत रहलहुँ। बुझाएल आगन्तुक हमरा परिवार सँ घनिष्ठ सम्बन्ध रखैत छथि। घरक सब जन - जनी सँ परिचित छथि। एक - एक व्यक्तिक नाम जनैत छथि।

पितामह आ पिता - पितृव्य समेत समस्त परिवार केँ स्वागत - सत्कार मे लागल देखि आ हुनका सभक मध्य होइत गप्प केँ थोड़ - बहुत बुझलाक बाद, अनुमान भेल जे आगन्तुक बताह नहि, कोनो असाधारण विद्वान आ साहित्यकार छथि। जयबा काल हमरा दिस संकेत कए ओ भैया (डा० हरिनारायण मिश्र) सँ पुछलथिन – 'इएह छोटन छथि' आ लगले हमरा सँ प्रश्न — 'बाउ, कोन वर्ग मे पढ़ैत छी ?'

ओहि प्रश्नक सिनेह आ आत्मीयता सँ हमर जिज्ञासा भाव - विभोर भऽ चुकल छल। ज्ञात भेल जे ओ यात्री जी छथि, हिन्दीक प्रसिद्ध कवि नागार्जुन, हमर पिता केर अन्तरंग सखा, पितृव्यक साहित्यिक मित्र आ अग्रजक गुरु।

दोसर दिन सँसे स्कूल आ गाम मे हुनक आगमनक चर्चा होइत रहल। सभ बजा केँ पूछए, कालिह तोरा ओतय यात्री जी आयल रहथुन ? कलहुका भीड़मे उपेक्षित रहियो

कें आइ हम महत्वपूर्ण भए चुकल छलहुँ । सभ कें भरि दिन, पहिलुका दिनक वृतान्त सुनबैत रहलियैक । हमरा घरक वातावरण पण्डिताइ कम, साहित्यिक बेशी छल । व्याकरण - वेदान्त, ज्योतिष, न्याय, जैन आ बौद्ध साहित्यक प्रकाण्ड विद्वान होयबाक कारण पिता देश - परदेश मे विख्यात छलाह । पितृव्य—साहित्य - आयुर्वेद - व्याकरणक आचार्य होइतो साहित्य - लेखन, विशेष कए कविता मे रमल रहैत छलाह । घर मे बाल्मीकि, पाणिनि, कालिदास, भासक सङ - सङ भुवन, मधुप, सीताराम झा, सुमन, यात्री, आरसी आदि चर्चाक विषय होइत छलाह । काका तत्कालीन विभूति, तिरहुत समाचार, मिथिला मिहिर आ हिन्दीक पत्र - पत्रिकाक माध्यम सँ साहित्य जगत मे प्रतिष्ठित भऽ चुकल छलाह । भौतिक अभावक अछैतो परिवारकें शास्त्र आ साहित्यक चर्चा सम्पन्न आ विशिष्ट बनौने रहैत छल ।

यात्री जीक पत्र कहियो काकाक नाम आ कहियो भैयाक नाम अबैत रहैत छलनि । हमरा होइत छल, कहिया हुनक पत्र पयबा योग्य भऽ सकब ?

दिनकर, जानकीवल्लभ शास्त्री, आरसी जी आदि प्रतिष्ठित कवि सभक हमरा ओतय आवागमन रहनि मुदा, हमरा पर यात्री जीक प्रभाव सर्वाधिक छल ।

हम नुका कऽ कविता लिखऽ लगलहुँ । एकटा पैघ कविता 'महाकवि नागार्जुन के लिए' — लिखि कें मासिक पत्रिका 'मुंगेर' कें पठा देलियैक । हमरा आश्चर्य भेल जखन ओ ओहि पत्रिकाक प्रथम पृष्ठ पर छापल गेल । हम एकटा अंक यात्री जी कें पठा देलियनि । लगले हुनक पत्र भेटल —

'कीर्त्ति बाबू ,

आपकी कविता अच्छी लगी । लेकिन अपने नाम के अन्त में 'किशोर' क्यों लगा रखा है ? कई किशोर हो गये हैं हिन्दी में । कीर्त्तिनारायण क्या बुरा है — नागार्जुन ।' तकरा बाद सँ हमरा नाम सँ 'किशोर' हटि गेल । कोनो नवसिखुआ कें प्रोत्साहित करऽक लेल लिखल गेल हुनक ओ पत्र, हमर काव्यांकुर पर सुधा - वृष्टि कऽ गेल ।

1957 मे हम आइ. ए. पास कऽ पटना कॉलेज मे अर्थशास्त्र मे ऑनर्स लऽ कें पढ़ऽक लेल पटना अएलहुँ । यात्री जी ओहि समय मे 'राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल', मछुआ टोलीक उपरका कोठरी मे रहैत छलाह । ग्रीष्मक दुपहरिया छलैक । नीचामे दोकानदार कें अपन नाम - ठेकान - प्रयोजन कहलिबैक । ओ हमरा उपरका रास्ता देखा देलक । कोठरी मे पहुँचि, रौदमे चोन्हराएल अपन आँखिकें अभ्यस्त करिते छलहुँ कि टेबुल फैनक घर्र-घर्र मे विभोर सूतल यात्रीजी जागि गेलाह । पुछलन्हि— के ? हम उत्तर मे चरण - स्पर्श केलियनि आ 'अर्थशास्त्र मे ऑनर्स लऽकें पढ़बह से तऽ नीक बात मुदा, पटना मे रहि कविया नहि जइयह ।'

बहुत दिन धरि हुनक ओ वाक्य हमरा मथैत रहल छल । ओहि मे एक पिता केर पुत्रक प्रति आशंका आ आकांक्षा व्यक्त भेल छलैक । कोनो पिता पुत्रक भविष्य कें दिशा शून्य अनिश्चय मे परिणत नहि होमऽ देबऽ चाहैत अछि । भारत मे साहित्य करब, विशेष रूप सँ कविता लिखब, भौतिक दृष्टि मे अधोमुखी अभियान छैक । एकर यात्री

अभाव आ आत्मयातनाक एकपेरिया सँ होइत सर्वस्वान्तक चौबटिया पर सपरिवार पहुँचि जाइत अछि ।

कोनो बड़ही यत्नपूर्वक अपन काज आ कला सन्तान कें सिखबैत अछि । नौआ, लोहार, सोनार सभ यैह करैत अछि । उद्योग, व्यवसाय, व्यापार सभ क्षेत्र मे पिता अपन अनुभव आ अर्जन उत्तराधिकार मे सन्तान कें देबऽ चाहैत अछि । ओहि सभ क्षेत्र मे कला सिखला सँ व्यवसाय चलैत छैक, रोटीक अभाव तऽ नहिये रहैत छैक । निपुणता प्राप्त केला सन्ता सम्पन्नता आबि जाइत छैक । साधनाक परिणति समृद्धि मे होइत छैक । मुदा से बात साहित्य मे नहि छैक । भुक्तभोगी यात्रीजी हमरा अपन वला रस्ता पर चलऽ लेल कोना अनुमति दितथि ! किन्तु, भेल सैह जे ओ नहि चाहैत छलाह । हम कवि तऽ नहि भऽ सकलहुँ मुदा, कविया धरि अवस्स गेलहुँ ।

पटना कॉलेज आ पटना विश्वविद्यालयक चारि वर्षक छात्र - जीवन मे यात्री जी हमरा प्रति एक गोट पिता केर दायित्व निमाहैत रहलाह । ओ पटना मे रहथि तऽ रोज संध्याकाल भिखना पहाड़ी अथवा आनठाम वला डेरा पर जाकऽ कुशल - समाचार कहि अबैत छलियनि । बाहर गेने हमर भार काकी आ शोभाकान्त पर रहैत छलनि । सुकान्त आ उमिलाक अवस्था बड़ छोट छलनि । श्रीकान्त - श्यामाकान्त कोर मे खेलाइत हेताह ।

मासक - मास ओ पटना सँ बाहर रहैत छलाह । अर्थाभावक कारण हुनक अनुपस्थिति मे काकी आ शोभाकान्त पर की बितैत छलनि — ओहि परिवारक एकगोट सदस्य होयबाक कारण, तकर अनुभव हमरा बराबरि होइत रहैत छल । हुनक पत्र मे व्यक्त प्रकाशक द्वारा भेटल आश्वासनक व्यर्थता सभ कें ज्ञात छलनि, तें मकान भाड़ा आ रोज क खर्चक चिन्ता सँ कखनो ककरहु मुक्ति नहि भेटैत छलनि ।

अनिकेतन यात्री जी कें सभ शहर मे मकान भेटि जाइत छलनि, भले ओ मास - क मास बन्न रहैत हो आ भाडा चढ़ल जाइत हो । लिखऽक दृष्टिञो जाहि शहर मे जे स्थान नीक बुझाइन ओकरा, घेरि कें राखि दैत छलाह । यात्री - प्रकाशनक पता बदलैत रहैत छलैक । पटना, इलाहाबाद, रायपुर, दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता सभठाम नागार्जुन—यात्रीक पुस्तक प्रेमी कें नव पोथीक पता लगाबै पड़ैत छलैक ।

ओ पटना आबथि तऽ परिवारक सदस्य सँ भेंट भऽ गेलाक बाद हमरो देखऽ लेल होस्टल आबि जाइत छलाह ।

जाड़क मास छल । एक दिन ओ भिनुसरकी रातिमे होस्टल आबि, फूजल दरबाजा सँ कोठरी मे प्रवेश कए मुँह पर सँ सीरक हटा माथ पर हाथ बुलबऽ लगलाह । चौंकि कें उठलहुँ तऽ देखैत छी, ऊनी सूट पहिरने आ कान मे गुलबन्न बन्हने यात्री जी ठाढ़ । हमरा हर्ष - विभोर आ आश्चर्य मे पड़ल देखि कहलनि— 'रातिए आएल छी । आइये साँझ चल जायब । सोचलहुँ जे तोहरा सङ कऽ कें गंगा कात बूलि आबी । उठऽ जल्दी तैयार भऽ जाह ।'

हमरालोकनि बहराइत छी । ओ शर्त्त रखलनि जे, केओ किछु नहि बाजत आ

घुरलाक बाद एखुनका अनुभव पर कविता लिखत ।

हुनक 'भोरे - भोर' आ हमर 'धुन्ध' कविता ओही प्रत्यूष-यात्रा केर सुपरिणाम थिक ।

पटना मे हुनका माध्यम सँ अनेकानेक साहित्यकार सँ परिचय भेल आ घनिष्ठता बढ़ल । हिन्दी, बंगला आ मैथिलीक सभ पत्र - पत्रिका आ नव पोथी हुनका ओतय सँ पढ़ऽ लेल भेटि जाइत छल । राजकमल जीक 'स्वरगन्धा' हम सर्वप्रथम हुनके डेरा पर देखने छलहुँ ।

1961 क दिसम्बर मे हम कलकत्ता आबि नौकरी करऽ लगलहुँ । ओहि समय मे यात्री जी मास - क - मास कलकत्ता मे रहि लिखैत छलाह । मिथिला - निकेतन अथवा भुवन बाबूक चायबला दोकानक सोझ वला मकानक अपन सम्बन्धीक डेरा मे रहैत छलाह । मुदा, हुनका सँ कोनो डेरा मे भेंट भऽ जायब बड़ कठिन छल । हुनक लिखऽ आ विश्रामक अवधि मे जाकेँ दिक् करब अनुचित छल आ ओना डेरा मे रहितहि नहि रहथि ।

दू - चारि दिन नहि बीतय, कि भोरे - भोर आ कि निभोर राति मे डेरा पर आबि केँ दर्शन दऽ जाइत छलाह ।

छुट्टी वला दिन, भरि दिन हुनका सङ घूमब आ साँझ कॉफी हाउस मे बिताएब बड़ आनन्ददायक होइत छल ।

ओ काशीपुर अथवा बेलगछिया सँ 'चाहखाना' आबि दुपहरक विश्राम लेक गार्डेन मे डा. प्रबोधनारायण सिंहक ओतय कए, साँझ कॉफी - हाउस मे बिता, रतुका अल्पाहार शालीमार (शिवपुर) मे हमरा डेरा पर लए, रातिमे शान्त वातावरण मे लिखऽक लेल शीतेश शर्माक आवास पर पहुँचि जाइत छलाह । ने कखनहुँ यात्राक हराराितक अनुभव, ने कखनो आलस । सभ समय यात्री जी किशोर - वयसक स्फूर्ति आ उत्साह सँ भरल शारीरिक आ मानसिक रूप सँ यात्रा करैत रहैत छलाह । मुदा, कतहु कोनो नियम, क्रम अथवा बन्धन नहि । पूर्ण उन्मुक्त यात्रा ।

मक्खुरामक तत्कालीन चौरंगीक मैदान वला पोथीक दोकान सँ बंगला, हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी आदिक पत्र - पत्रिका लऽ कऽ कान्ह पर टाङल झोरा केँ भरने यात्री जी जाड़क कोनो दुपहर मे अहाँ केँ एकसरो चिनिआ बदाम फोड़ैत चौरंगी, विक्टोरिया अथवा इडऽन गार्डेनक मैदान मे भेटि सकैत छलाह ।

यात्री जीक सङ विभिन्न भाषाक नवतुरिया लेखक वर्गक भीड़ चलैत छल । कल्पना अथवा चिन्तन मे हेराएल यात्री एकाएक लोक केँ कहि दैत छलथिन – 'आब अहाँलोकनि जाउ, हम एकसरे घूमऽ चाहैत छी ।'

घूमऽ लेल एकसर बहराएल यात्री जी केँ मैदान बड़ आकर्षित करैत छलनि । ठामहिठाम एकसर आ कि सङी - साथीक सङ बैसल - पसरल लोक । बेशी भाग मिल -

मजूर, रिक्सा - ठेला चालक, झाका - मोटा उठाबऽ वला वर्ग । कतहु ढोलक - हरमुनिया पर अल्हा - ऊदल होइत, कतहु मुरगाक युद्ध । व्यक्ति - व्यक्ति घरि पहुँचैत चाह - पान, बीड़ी-सिकरेटक दोकान । गरीब आ साधारण मनुक्खक आह्लाद- उच्छवास, मनोदशा आ क्रिया -कलापक मौलिक आनन्द लैत, यात्री जी कतहु कोनो भीड़ लग ठाढ़ भऽ सकैत छलाह ।

साहित्यकारक अखड़ा, कलकत्ताक कॉफी हाउस । रवि आ छुट्टीक दिन कॉलेज स्ट्रीट आ सप्ताहक शेष दिन सेन्ट्रल एवेन्यू वला कॉफी हाउस मे ।

देश - विदेशक साहित्यकारक कतबो व्यस्त कार्यक्रम मुदा, कॉफी हाउसक लेल समय बहार करब आवश्यक । शनि, रवि केँ साहित्यकारक जमघट । आनो दिन पहुँचि गेला पर कोनो - ने - कोनो साहित्यकार सँ भेट भए जायब असंदिग्ध आ ओहि साहित्यकार सँ सूचना पाबि मान - दान हेतु साहित्यकारक दोसर दिन कॉफी हाउस मे उपस्थिति आवश्यक । किन्तु, यायावर यात्री - नागार्जुन एहि नियमक अपवाद ।

अपन पचीस वर्षक प्रवास मे हम सभ दिन कॉफी हाउस केँ 'नागाबाबा' केर प्रतीक्षा करैत देखलियैक । कहियो प्रतीक्षा मे उदास तऽ कहियो उपस्थिति मे उल्लसित । ओ कहिया कोन गाम अथवा शहर मे रहताह, कहिया कतेक दिनक लेल कलकत्ता अयताह आओर कोन पोथी केर लेखन - प्रकाशन मे लागल छथि, सभक सूचना कॉफी हाउस केँ रहैत छलैक । आवश्यकता एतबे होइत छलैक जे हुनका मे रुचि रखनिहार व्यक्ति कोनो 'साहित्यिक टेबुल' पर जा कऽ पुछारि करथि ।

यात्री जी केँ कोनो व्यक्ति, स्थान, भाषा आ विधा सँ बान्हि केँ राखब, असंभव छल । हुनक चर्चा हिन्दी, मैथिली, बंगला, उड़िया गुजराती, मराठी, मलयालम, तेलुगु– सभ परिवेश मे होइत छल ।

जुलाइ 1967 मे हमर 'सीमान्त' छपल। ओकर भूमिकाक दोसर पृष्ठक अंतिम अनुच्छेद मे, 1950 सँ 1960 धरिक मैथिली काव्य - चेतनाक विश्लेषण क्रम मे हुनका सम्बन्ध मे लिखल एकगोट वाक्य हमरा हुनक कोप - भाजन बना देलक । ओ हमरा प्रति अपन तात्क्षणिक आक्रोश - प्रतिक्रिया केँ 'पिता - पुत्र सम्वाद' लिखि केँ अभिव्यक्त कैलनि । ओहि कविताक रचनाक सूचना हमरा भैयाक पत्र सँ पहिनहि भेटल छल । कलकत्ताक मित्र - वर्ग मे ओ 'यात्री - कीर्त्ति सम्वाद' नाम सँ प्रचारित भऽ रहल छल । छपलाक बाद, जखन ओहि कविता केँ पढ़ऽक अवसर भेटल तऽ आश्चर्यक अन्त नहि रहल । ओहि रचनाक व्यक्तिगत सन्दर्भ बड़ थोड़ व्यक्ति केँ ज्ञात छलैक । सामान्य पाठकक लेल ओकर प्रयोजनो नहि छलैक, महत्वपूर्ण ई छल जे पुत्रक प्रति व्यक्त आक्रोश क माध्यम सँ एकगोट महान साहित्यिक पिता द्वारा मैथिली कविता केँ ओतेक श्रेष्ठ व्यंग्य रचना भेटि गेल छलैक । दू पीढ़ी केर संघर्ष आ अकविताक व्याख्याताक प्रति यात्री जीक तत्कालीन प्रतिक्रिया सँ पाठक वर्ग परिचित भए चुकल छल ।

1967 क अन्तिम दू - तीन मास मे ओ इलाहाबाद मे रहथि । पत्रहीन नग्नगाछक किछु कविता आ अन्त मे प्रकाशित आठो गीत ओ ओहि प्रवास मे लिखलनि ।

पोथी छपि रहल छलनि आ दिसम्बरक अन्त मे ओकर विमोचन होमऽ वला छलैक ।

इलाहाबाद सँ डा. सुधाकान्त मिश्रक हकार आएल विमोचन समारोह मे उपस्थित होयबाक लेल । यात्री जीक 'पोस्टल एड्रेस' पर पहुँचला पर हमरा हुनक दारागंज वला डेरा पर पहुँचा देल गेल ।

हमरा देखितहि यात्री जी एवं शोभाकान्त आश्चर्यमिश्रित आह्लाद सँ भरि गेल छलाह । शोभाकान्त अपना सभक लेल बिलैंती भांटा दऽ कें पालकक साग आ रोटी बनौने छलाह – अपन महाकवि पिता केर मौलिक निर्देशन मे खयबाकाल जे आनन्द आ स्वाद भेटल छल, ओ हम आजीवन नहि बिसरब ।

दोसर दिन विश्वविद्यालयक सभाकक्षमे महाकवि सुमित्रानन्दन पंत मंचपर विराज-मान छलाह, पोथीक विमोचनक लेल । बगल मे यात्री जी बैसल आ सुधाकान्त जी स्वागत भाषण पढ़ैत । सभाकक्ष हिन्दी - मैथिली आ दूर - दूर सँ आएल साहित्यकार - विद्वान सँ भरल ।

हम कने विलम्ब सँ पहुँचल छलहुँ । पहुँचैत देरी मंच पर सँ हमर परिचय देल जाय लागल आ लगले हमरा आधुनिक मैथिली कविता आ यात्री जी पर बाजऽक लेल बजा लेल गेल । हम की बाजल छलहुँ से तऽ मोन नहि अछि मुदा, ई अनुभव आइयो होइत अछि जे कोनो महान व्यक्तिक सम्पर्क क्षुद्रातिक्षुद्रो व्यक्ति कें महत्वपूर्ण आ प्रासं-गिक बना दैत छैक ।

समारोह समाप्त भेल । पन्त जी विदा होमऽ लगलाह । हम हुनक चरण - स्पर्श कैलियनि । डा. जयकान्त मिश्र आ किछु अन्य व्यक्ति कुशल - समाचार पूछि विदा भऽ गेलाह । हमरालोकनि आन- आन साहित्यकारक सङ बड़ी काल धरि बतिआइत रहलहुँ ।

संध्याकाल यात्री जी हमरा उपन्यासकार आ अपन शिष्य अजित पुष्कलक डेरा पर लऽ गेलाह । हुनक किछु उपन्यास पहिनहि पढ़ि चुकल छलियनि । यात्री जी हुनक पत्नी कें नाम लऽ कें बजौलथिन । सभ धीआपुताक नाम लऽ, बजा कें किछु - ने - किछु पूछऽ लगलथिन । ओहिठाम सँ आओर कतेक साहित्यकार सँ भेंट करबऽ लऽ गेलाह । सभठाम आत्मीयता आ पारिवारिक वातावरण । हम सोचैत रहि गेलहुँ – यात्री जी कें कतेक पुत्र - पुत्री छनि, सभ पर समान रूपें कृपा - भाव रखनिहार यात्री जी कतेक महान छथि ।

कलकत्ता सँ 1963 मे हिन्दीक प्रथम लघु-पत्रिका— 'परिवेश' आ 1967-68 मे 'आखर'क प्रकाशनक अवधि मे हुनक प्रोत्साहन, दिशा - निर्देशन आ परामर्श हमर संबल आ पूँजी छल । अदगोइ - बिदगोइ कएनिहार आ सहयोग देबाक बदला मे टाङ घिचनिहार हुनक बिनु डांट खएने नहि रहैत रहथि ।

1968 क उत्तरार्ध सँ 1970 क पूर्वार्धक दू वर्ष मे हम 'ब्रेन ट्यूमर' सँ रोगग्रस्त भऽ घऽर आ अस्पताल मे मृत्यु सँ संघर्ष करैत रहल छलहुँ । ओहि अवधि मे प्रायः साल भरिक लेल हमर आँखिक ज्योतियो चल गेल छल । यात्री जी कतहु रहथि, हमरा आ भैया कें पत्र लिखि समाचार पूछैत रहथि । कलकत्ता रहला सँ तऽ नियमित रूप सँ आबि कें देखिते रहथि, बाहरो सँ हठात दू - एक दिनक लेल आबि कें देखि जाइत

रहथि । हुनक आगमनक सूचना आ स्पर्श किछु कालक लेल यंत्रणा आ बेहोशी सँ त्राण दिया दैत छल ।

ओहि मध्य हुनक प्रेरणा आ मित्र सभक सहयोगें हमर हिन्दी कविता पुस्तक 'शिखर पर साँझ' प्रकाशित भेल । 1970क अन्त धरि ऑपरेशन आ विश्रामक बाद हम स्वस्थ तऽ भऽ गेलहुँ किन्तु, कलकत्ताक भीड़ - भार, व्यस्तता आ दिनचर्या स्वास्थ्यक लेल प्रतिकूल पड़ैत छल । पिता केर आन्तरिक इच्छा छलनि, जे हम कलकत्ता छोड़ि दी । हम चितावालसा (विशाखापतनम) स्थानान्तरण करबा लेलहुँ । प्रस्थान करऽ सँ पहिने यात्री जी केर अनुमति आ आशीर्वाद आवश्यक छल । हम पत्र लिखलियनि आ ओ विदा करऽ सुकान्त कें लऽकें आबि गेलाह । यात्री जी केर एहि वात्सल्य कें कहियो कोना बिसरब ?

बिहार मे रहला सँ ओ बेगूसराय (जाहि समय मे स्व. प्रो. राधाकृष्ण चौधरी रहैत छलाह) आ बरौनी कें नहि बिसरैत छलाह ।

एकबेर ओ जेठक दुपहरिया मे सौभद्र - निवास पहुँचलाह । हमर पिता - पित्ती आ माय - पितिआइन हर्षें उत्फुल्ल । रौद आ गर्म सँ झमारल यात्री जी हकमैत काका कें कहलथिन — 'दिवाकर बाबू , हम अहाँ केर घरऽक भूगोल बिसरि गेल छलहुँ ।' ठहक्का सङ काकाक स्वर बहराएल — 'हमर सभक सौभाग्य, जे अपने कें इतिहास मोन अछि ।'

यात्री जी ओहि यात्रा मे कहि आएल छलथिन – 'लिखऽक लेल ई स्थान बड़ उपयुक्त बुझाइत अछि । हम एतय दू मास आबि कें रहब आ एकटा उपन्यास पूरा करब ।' किन्तु, यात्री जीक लेल तऽ सभ स्थान लेखनक लेल उपयुक्त । सौभद्र - निवास एखनहुँ हुनक प्रतीक्षा कऽ रहल अछि ।

किछु मित्रक विचार छलनि, जे 'हम स्तवन नहि लिखब' कें यात्री जी कें समर्पित कैल जाय । ई प्रस्ताव हमरो नीक लागल । यात्री जी सँ एकर चर्चा कैलियनि तऽ ओ कहलनि— 'ई स्थूल विज्ञापन वला हल्लुक काज कतेक व्यक्ति कऽ चुकल छथि । की तहूँ, हुनके सभक पाँति मे ठाढ़ होबऽ चाहैत छह ?'

हमरा अपन गलती केर अनुभव भेल आ समर्पण वला विचार तत्काल त्यागि देलहुँ ।

नवम्बर 1977 मे सप्ताह - व्यापी समुद्री तूफान आएल छलैक । आन्ध्रप्रदेशक समुद्रतटीय समस्त पूर्वी क्षेत्र, विशेष कए, विशाखापतनम तबाह भऽ गेल छल । सर्वत्र हाहाकार आ मृत्युक आतंक । हजारक - हजार मृत लोकक लहास कतेक सप्ताह धरि सड़ैत रहि गेल छल । तूफान आ बाढ़िक कारण सड़क आ रेल लाइन टूटि गेल छलैक । ने प्रभावित क्षेत्र धरि सहायता पहुँचि सकलैक आ ने लहास बहार भऽ सकलैक ।

यात्री जी केर कवि हृदय कें प्रकृतिक ओ ताण्डव अपन पुत्रक प्रति आशंकित कऽ देलकनि । ओ पत्र लिखलनि —

प्रियवर कीर्त्तिनारायण, कलकत्ता, 30.11.77

समुद्री तूफान में तुम्हारे कारखाने को भी झटका लगा क्या ? इन दिनों बार - बार तुम्हारी और तुम्हारे बच्चों की और अपनी उस बहू की याद आ रही है, जिसका नाम भूल बैठा हूँ।

अपने पिता के स्वास्थ्य के बारे में भी सूचित करना। मैं 10 तक तो इधर हूँ ही।

पत्र शीघ्रातिशीघ्र दो।

— नागार्जुन तुम्हारा

देशक किछु भाग पर यात्री जी विशेष रूप सँ सदय रहैत छथि। मध्यप्रदेशक रायपुर ओहि मे सँ एक अछि। हुनका बजयबाक लेल ओहिठामक साहित्यिक संस्था सभ द्वारा तरह - तरह केर आयोजन कैल जाइत अछि। नहि- नहि करितो यात्री जी साल - दू - साल मे निश्चित रूप सँ ओतय जाइत अछि।

पटना मे एकबेर उलहन देलियनि जे अपने रायपुर आबियो कऽ चितावालसा केँ बिसरि जाइत छी। ओ आश्वासन देलनि – 'आशा आ धीआपुता सँ भेंट करऽ अबस्स आयब। तों हमरा विजयनगर आ विशाखापतनम क भूगोल बूझा देह।'

हम कहलियनि —अपने मात्र सूचना पठा देल जाय, हम रायपुर, कलकत्ता अथवा कोनो स्थान सँ आबि केँ चितावलासा लऽ जायब। ओहि सौभाग्य सँ हम एखन धरि वंचिते छी। 23 जनवरी '86 केँ हम किछु घन्टाक लेल पटना पहुँचैत छी। रिक्सा डाक बंगला रोड सँ आगाँ ससरैत अछि, आकि भैया कहैत छथि — 'यात्री जी सड़कक ओहि कात सँ जा रहल छथि।' हम रिक्सा पर सँ कुदकि कए दौड़ैत छी।

पिरिछाओन चद्दरि आ हाथ मे सोंट नेने कोनो सूट - बूटधारी व्यक्तिक सङ यात्री जी कॉफी हाउस दिस जा रहल छलाह। हम आ भैया हुनक चरण - स्पर्श कैलियनि। ओ कुशल - समाचार पूछैत छथि। ठाढ़े - ठाढ़ किछु काल धरि बतिआइत रहैत छी। पुनः हुनका सँ आशीर्वाद लैत छी आ विदा भऽ जाइत छी।

केश, दाढ़ी आ अपन अबढ़ंग परिधान मे यात्री जी केँ आइयो ओहिना तेजोदीप्त, गतिशील आ लेखनरत देखलियनि जेना आइ सँ 37 - 38 वर्ष पूर्व देखने छलियनि। अपन आयु केर पच्चहत्तरिमो वर्ष मे ओ अबाध रूप सँ लिखि रहल छथि आ आधुनिक लेखक वर्गक मसीहाक रूप मे सम्मानित छथि। की ई सम्पूर्ण देशक लेल सौभाग्यक विषय नहि।

कश्मीर सँ केरल धरि एहन कोनो क्षेत्र नहि, जतय जनकवि आ उपन्यासकार नागार्जुन - यात्री केर पाठक, शिष्य, प्रशंसक ओ मित्र नहि रहैत छथि। भाषा आ क्षेत्रक व्यवधान हिनक साहित्य आ सम्पर्कक लेल कहियो नहि रहलनि। सभ राज्य मे हिन्दी पढ़निहार - पढ़ौनिहार केँ यात्री जी केर व्यक्तिगत सम्पर्क - मैत्री सँ लाभ भेटैत छनि। सभठाम आदरपूर्वक बजाओल जाइत छथि आ सभठाम किछु - ने - किछु एहन परिवार अवस्स अछि जकर प्रत्येक सदस्यक व्यक्तिगत मित्रता हुनका सङ छैक। अधिकांश सँ हुनक नियमित पत्र व्यवहारो होइत छनि।

हमरा जनैत एक व्यक्ति आ लेखकक रूप मे सौंसे देश मे विख्यात, ओतेक व्यापक रूप मे पढ़ल जाइत आ सभ भाषासँ सम्बन्ध रखनिहार यात्री - नागार्जुन केर समकक्ष ककरो ठाढ़ करब सम्भव नहि। तेलुगु, कन्नड़ आ मलयालम मे हिनक मित्र आ अनुवादकक संख्या बड़ पैघ छनि। राजनीतिक कारणेँ हिन्दी - विरोधक लेल नाना यत्न करैत मद्रासो मे तमिल- हिन्दी साहित्यकार आ पाठक वर्गक मध्य एकटा व्यवस्था-विरोधी तथा जीवन्त भारतीय साहित्यकारक रूप मे ओ सम्मानित छथि। सभ भाषा मे पढ़ल जाइत छथि।

हुनका जाहि मैथिली प्रेम आओर व्यवस्था - विरोधी लेखनक कारण पहिने हिन्दी पोथी पर साहित्य अकादमी पुरस्कार नहि भेटलनि (मैथिली पोथीक लेल हुनका पुरस्कृत करब अकादमी केर बाध्यता छलैक), संभवतः सैह कारण एखन धरि भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार सँ वंचित रखने छनि अन्यथा दिनकर आ अज्ञेय सँ पहिनहि ओ पुरस्कृत भेल रहितथि।

संसारक पैघ - सँ - पैघ पुरस्कार यात्रीजीक विराट व्यक्तित्व लऽग मूल्यहीन भऽ गेल अछि। हुनक व्यक्तित्वक महार्णव लऽग आबि कऽ आब केहनो स्वागत, स्तुति, अभिनन्दन आ पुरस्कार अपन महिमा नहि बनौने राखि सकैत अछि।

विहार केँ, खास कऽ मिथिला केँ, हुनक जन्मभूमि होयबाक सौभाग्य प्राप्त छैक। विद्यापतिक बाद पछिला पाँच सौ वर्षक इतिहास मे ओ पहिल कवि छथि जे बिहारक बाहरो, देश - विदेशक अधिकांश भाग मे एतेक व्यापक रूप मे पढ़ल - गुनल जाइत छथि। साम्यवादी - समाजवादी देश सभक साहित्यिक माहौल मे तऽ ओ चर्चाक विषय रहितहि छथि, पूँजीवादियो देशक बुद्धिजीवी वर्ग तथाकथित तेसर विश्वक शोषण-पीड़न आ जनमानस केँ बूझऽक लेल हुनक रचना पढ़ैत अछि। संसारक विभिन्न देश सँ आयल साहित्यिक सांस्कृतिक प्रतिनिधि वर्गक सम्पर्क मे अएनिहार व्यक्ति सभ केँ ई अनुभव बराबरि होइत होयतनि।

हमरा सभ छी हुनक गाम - घरक लोक। अति परिचयक कारण हुनक वास्तविक महत्व केँ बूझऽ मे सर्वथा असमर्थ। एखन हमरालोकनि केँ हुनका सँ प्रत्यक्ष सम्बन्ध अछि। सभक सङ मे अछि हुनका सँ जुड़ल - जोड़ल अनेकानेक प्रसंग, संदर्भ, संस्मरण आ अनुभव मुदा कालक प्रवाह मे हमरालोकनि भसिआ जायब, रहि जेताह कालजयी मृत्युञ्जय यात्री जी।

□

प्रकाशित – हालचाल : जून - जुलाइ 1986.

विस्फोटक ढेरी पर फूलक गाछ रोपैत महाकवि

व्यक्तिगत – प्रसंग

प्राथमिक स्कूल मे बच्चासभ गाबैत छल –'चलो देखें ललन भैया, नदी में बाढ़ आई है' आ माध्यमिक स्कूल मे पहुँचि ओ सभ गाबऽ लगैत छल –'यह जीवन क्या है ? निर्झर है मस्ती ही इसका पानी है / सुख - दुख के दोनों तीरों से चल रहा राह मनमानी है ।' बालमन कें एहि तरहें प्रभावित करऽ वला आ ओकरा सँ एतेक व्यापक रूप सँ जुड़ल महाकवि आरसी प्रसाद सिंह कें बाल्यावस्थे मे हमरा देखऽ सुनऽ केर अवसर भेटल छल ।

हम प्राथमिक विद्यालयक अन्तिम वर्ष अथवा चमड़िया हाई स्कूलक पहिल वर्ष मे छलहुँ । 1948 अथवा 1949 मे गंगा मे बाढ़ि आएल रहैक । ओ निपनियाँ गाम कें डूबबैत रेलवे लाइनक दक्षिण कात धरि पहुँचि गेल रहैक । अपन ओहि वयस मे बाढ़िक विभीषिकाक दुष्परिणामक अवगति हमरा नहि छल किन्तु, 'चलो देखें ललन भैया···' गाबैत बाढ़िक आनन्द लिअऽ आबि गेल छल ।

कोनो दिन ककरो मुँह सँ सुनलहुँ जे काल्हि आरसी बाबू बरौनी आएल रहथि किन्तु, बाढ़िक कारण रेल-लाइन सँ नीचा नहि उतरि सकलाह आ खगड़िया घुरि गेलाह।

संयोगवश किछुए दिनक बाद हुनक पुनरागमन भेलनि । स्टेशन रोडक एकान्त सड़क पर बात-बात पर खिलखिलाइत कोनो सौम्य-सुदर्शन व्यक्ति कें घेरने क्षेत्रक पँच - पँच व्यक्ति कें ठाढ़ देखलहुँ । श्रद्धेय मुकुर - भागवत - दिवाकरक त्रिमूर्त्ति दूरे सँ देखा गेल छल । डऽरें बगल मे दोसर दिस देखैत आगू बढ़ि गेल रही किन्तु, चौक पर सँ झोरा भरने जखन घुरैत रही तँ भीड़ कें नहुँ - नहुँ चलैत देखि पाछू लागि गेलहुँ । ओ भव्य पुरुष किछु सस्वर गाबि रहल छलाह आ अगल - बगल चलैत मित्र - मण्डली सुनि रहल छल । कोनो दोसर बच्चा सँ ज्ञात भेल जे ई कविवर आरसी प्रसाद सिंह छथि आ कोनो सद्य: रचित रचना लोक कें सुना रहल छथिन । हम स्वर दिस अकानलहुँ । कान मे पड़ल –'हम मरण के द्वार पर भी गीत जीवन के सुनाते ही रहेंगे ।' एहि तरहें हुनक ई प्रसिद्ध कविता, जे बाद मे कलकत्ता सँ प्रकाशित होमऽ वला 'नया समाज' मे छपल आ चर्चित भेल छल, हमरा सड़क पर चलैत सुनऽ केर सौभाग्य भेटि गेल छल ।

आरसी बाबू कोशी कॉलेज, खगड़िया मे हिन्दीक प्राध्यापक छलाह आ मास मे दू - एक बेर मुकुरजी, भागवतजी एवं दिवाकरजी सँ भेंट करऽ बरौनी आबि जाइत रहथि । हमरा हुनक दर्शन एवं कविता सुनऽ केर अवसर बेर - बेर भेटैत छल । श्रद्धेय श्री लक्ष्मी नारायण शर्मा 'मुकुर' चमड़िया स्कूल (आर. के. सी. एच. स्कूल, फुलबड़िया) मे शिक्षक छलाह आ कविक रूप मे विख्यात भऽ चुकल छलाह । ओ हिन्दी पढ़ाबऽ काल आ 'नोट' लिखाबऽ काल प्रसिद्ध कवि सभक कविताक उद्धरण सुनबैत - लिखबैत रहथि । ओहि मे सर्वाधिक उद्धरण दिनकर जी एवं आरसी बाबूक कविता सँ रहैत छल । बीच - बीच मे अपनहुँ कविता सुना दैत छलाह, स्थानीय कवि सभक कवितांश सेहो ।

हुनक सम्पर्क आ देल संस्कार सँ स्कूलक अधिकांश विद्यार्थी मे कविताक आंकुर फुटऽ

लागल छलैक । प्राय: सभ घर मे कोठी पर आ कि चार मे खोंसल कविताक कॉपी रहैत छलैक ।

मुकुरजी बारहो - तेरह वर्षक विद्यार्थी कें 'आप' कहि सम्बोधित करैत छलथिन आ जँ कविता दिस ओकर अभिरुचि रहलैक तऽ नाम क आगाँ मे 'जी' लगा दैत छलथिन । हुनक कृपा सँ हम छोटे वयस मे 'कीर्त्तिनारायणजी' भऽ गेल रही ।

बरौनीक आकाश मे काव्य - वितान हरदम तनल रहैत छल । दिनकर, विकट, शक्र, सुहृद, आनन्द नारायण शर्मा, कर्नशील, मुकुर, भागवत, दिवाकर, हरिनारायण, प्रलयंकर, पुष्प आदि चर्चित कवि सभक अतिरिक्त प्रत्येक गाम, विद्यालय, महाविद्यालय मे कवि‌ये-कवि । सौंसे क्षेत्रक सभ इनार मे कविताक भाँग घोरायल । जतय कविएबाक एहन उन्मादक वातावरण हो, ओतय ककरो कवि भऽ जायब राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्तक शब्द मे 'सहज संभाव्य' छल । हमहुँ संक्रमित भए 'तुकबन्दी' करऽ लागल छलहुँ । पारिवारिक वातावरण आ बाहर सँ पँच - पँच साहित्यकार सभक आवागमन उत्तरोत्तर रोग कें असाध्य बनौने गेल ।

एक दिन आरसी बाबूक 'आरसी' नामक कविता संकलन मुकुरजी पढ़ऽ लेल देलनि । ओहि मे हुनक विभिन्न प्रकारक 796 कविता संकलित छलनि आ ओकर प्रकाशन स्वयं आरसी बाबू फरवरी 1942 मे मुजफ्फरपुर सँ करौने रहथि । ताधरि हिन्दी मे छपल ओ कविताक सभ सँ मोट पोथी छल । विद्यालय आ गामक पुस्तकालय सँ ओकरा 'इशू' करैबाक लेल सभ मारि कऽ लैत छल । ओ विशाल ग्रन्थ मुकुर जीक कृपा सँ हमरा सहजे प्राप्त भऽ गेल छल ।

'आरसी' देखि हमर बालमन कें कल्पनालोकक 'मानसरोवर' आ कविता पढ़ि ओहि मे विचरण करैत 'राजहंस' मोन पड़ल छलैक । घर मे संस्कृत साहित्य, विशेष कए कालिदासक चर्चा होइत रहैत छल । तें कैलाश पर्वत, मानसरोवर, राजहंस आदि मोन मे आ कल्पना मे बराबरि आबि जाइत छल ।

'आरसी'क सरल, सुबोध आ मर्मस्पर्शी कविता सभ हमरा राजहंस सन कियैक लागल छल — ओकरा लेल आइ कोनो तार्किक आधार जोहब मोसकिल किन्तु, 'आरसी' मानसरोवर झील जकाँ शान्त, प्रवहमान आ मोती सँ भरल अवश्य लागल हैत आ कविता पढ़ैत काल कैलाश पर्वतक हिम - धवलता आ राजहंसक शुभ्रता, सौन्दर्य एवं गरिमा ध्यान मे आबैत हैत ।

भारतक कोनो कोन सँ स्तरीय अथवा नव - सँ - नव हिन्दी पत्र - पत्रिका बहराइत छल, ओहि मे आरसी बाबूक कविता रहिते छलनि । गीति - काव्यधाराक शीर्षस्थ कविक रूप मे ओ आदरपूर्वक चर्चित-विश्लेषित होइत रहथि । हुनक तुलना कालिदास, शेक्सपीयर, वर्डस्वर्थ, शैली, कीट्स, रवीन्द्र आदि सँ कैल जाइत रहनि । हुनक कविता मे वर्णित प्रकृति, प्रेम, राष्ट्रीय भावना, जन एवं जनपद, विरह - मिलन, आशा - निराशा आदि पर चर्चा - परिचर्चा होइत रहय ।

1957 मे हमर नाम पटना कॉलेज मे लिखाओल गेल । होस्टल मे 'सीट' भेटितहि पूर्वपरिचित पटनाक साहित्यकार सभ सँ भेंट करबाक लालसा जागि उठल ।

'नवराष्ट्र' कार्यालय चला रस्ता सँ सटल मुख्यमार्ग पर किरायाक मकान मे आरसी बाबूक डेरा छलनि आ ओकरे एक हिस्सा मे तारामंडल प्रकाशन । हम एकदिन भिनसरे-भिनसर हुनक दर्शन लेल पहुँचैत छी । महाकवि बरण्डे पर भेटि गेलाह । हमरा देखि आह्लादित होइत प्रकाशनक भितरिया भाग मे लऽ गेलाह । 'रैक' सभ खाली आ पोथी गेंठिआएल । आकाशवाणीक विशेष गीतकारक रूप मे पुनः कार्यारम्भ करक लेल ओ लखनऊ केन्द्र जा रहल छलाह, जतय ओ 1965 धरि रहलाह । एहि मध्य 1961 मे हम एम. ए. कए ओहि वर्षक अन्त मे कलकत्ताक एक गोट फर्म मे नोकरी धऽ लेलहुँ । तकर बाद कतेक वर्ष धरि हुनक कविते सँ भेंट होइत रहल ।

कलकत्ता आरसी बाबूक पाठक, प्रशंसक एवं मित्र सँ भरल छल । 'मिथिला दर्शन' बहराइत छल । राजकमल छलाह । प्रवासी - मैथिल सभ मे मैथिलीक विकासक लेल उत्सर्ग - भावना छलनि । प्रायः कोनो - ने - कोनो आयोजन होइते रहैत छल । हरिश्चन्द्र मिश्र 'मिथिलेन्दु', प्रबोधनारायण सिंह, उदितनारायण झा, दिनेश मिश्र, बाबूसाहेब चौधरी, सत्यनारायण लाल, पीताम्बर पाठक, राजनन्दन लाल दास सन कर्मठ मैथिली - सेवीक उद्योगेँ मैथिली केँ भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे स्थान दिअयबाक लेल आन्दोलनक आयोजन होइत छल, मिथिलाक गाम - गाम जाकऽ लोक केँ जागृत करबाक लेल कार्यकर्त्ताक दल पठाओल जाइत छल, पोथीक प्रकाशन कैल जाइत छल आ 'अछि सलाइ मे आगि जरत की बिना रगड़ने ? पायब निज अधिकार कतहु की बिना झगड़ने ?'- संकल्प - मंत्र जकाँ सभ केँ अनुष्ठानबद्ध कैने रहैत छल । किन्तु, आरसी बाबू केर दर्शन कोनो आयोजन अथवा समारोह मे नहि होअय ।

एक दिन स्थानीय दैनिक 'सन्मार्ग' मे पढ़ल जे महाकवि आरसी प्रसाद सिंहक सम्मान मे हावड़ा होटल मे संध्याकाल कवि - गोष्ठी आयोजित हैत । हम ऑफिस सँ बहरा हावड़ा होटल पहुँचैत छी । ताधरि कवि - गोष्ठी शुरू भऽ गेल छल, बहुतरास कवि कविता सुना चुकल छलाह आ आरसी बाबूक काव्य - पाठ चलि रहल छल । हम पछिला दरबज्जा सँ सभागार मे प्रवेश करैत छी जे चुपचाप पाछाँ जा कऽ बैसि जाइ किन्तु, आरसी बाबूक दृष्टि हमरा पर पड़िये गेलनि । ओ कविता पढ़ब रोकि अपना लग बजा लेलनि आ अपूर्ण कविता केँ पूरा कए श्रोता सभ सँ कहलथिन—'आज इतना ही । और कविताएँ फिर कभी सुनाऊँगा ।' आ हमरा कहलनि— 'चलू ।' हम आश्चर्यचकित ! जकरा लेल गोष्ठी आयोजित सैह उठबाक लेल तैयार । संयोजक एवं साहित्यकार सभक क्षुब्ध दृष्टि हमरा पर गड़ल । हम अपना कारणेँ उत्पन्न व्यतिक्रमक परिणामक अनुमान करैत अनुरोधपूर्वक कहलियनि—'अपनेक थोड़ेक काल आओर रहि गेने गोष्ठी नीक जकाँ सम्पन्न भऽ जयतैक ।' ओ कहलनि— 'कोनो बात नहि । ई सभ तँ एहिना होइत रहैत छैक । हमरा अहाँक बासा पर जाय कनिआ केँ आशीर्वाद देबाक अछि ।'

हम हुनका सङ अपन तत्कालीन बासा 36, मणिलाल चटर्जी लेन, हावड़ा पहुँचैत छी । श्रीमतीजी विस्मय-विमुग्ध । महाकवि सँ पारिवारिक मित्रताक मादे तऽ ज्ञात छलनि किन्तु दर्शन, सेहो अप्रत्याशित, पहिले बेर भऽ रहल छलनि । चरण - स्पर्श कैला पर ओ हुनका अपन परिचय दिअऽ लागलथिन । श्रीमती बाजलीह—'हम अपने सँ परिचित छी ।'

कोना ? अहाँक बिआह मे तँ हम नहि गेल रही ।' ओ कहलथिन — 'कोर्सक किताब मे अपनेक कविता आ परिचय दुनू रहैक । पोथी मे फोटो देखने रही आ हिनका घर मे सभक मुँहे अपनेक चर्चा सुनैत रही ।' ओ कहलथिन—'कोनो कविता सुनाउ ।' आ श्रीमती कोर्स मे पढ़ल हुनक कोनो सौंसे कविता सुना देलथिन । आरसी बाबू गद्गद् होइत हुनका आशीर्वाद देलथिन आ परिवार एवं कलकत्ताक मादे पूछऽ लागलथिन ।

श्रीमतीजी चाह - जलखइक ओरिआओन मे लगलीह आ हमरालोकनि साहित्य - चर्चा मे । समय - सीमा पहिनहि बान्हि देल रहय तेँ रात्रि - भोजनक लेल आग्रहो करबाक उपाय नहि छल ।

वार्ताक क्रम मे 'परिवेश'क चर्चा चलि गेल । ओहि लघु - पत्रिका केर चारियेटा अंक बहरायल छलैक कि ओकरा बन्न करऽ पड़ल । अर्थाभाव सभ साहित्यिक पत्रिका केँ रहैत छलैक, ओकरो छलैक मुदा, ओकरा बन्न करबाक कारण सहयोगी - मित्र सभक विचार सँ हमर असहमति छल ।

चीनी आक्रमणक बाद साम्यवादी दृष्टिकोण आ प्रगतिशील विचारधारा पर पुन-र्विचारक प्रयोजन छलैक । हमरा दृष्टियेँ चीनी आक्रमण आ ओकर विस्तारवादी नीतिक स्पष्ट शब्द मे साहित्यकार द्वारा विरोध आवश्यक छलैक किन्तु, मित्रवर्ग ओकरा प्रति प्रच्छन्न रूप सँ समर्थन - भाव रखैत छलाह । 'परिवेश' कोनो पार्टीक पत्र भए अधोगति प्राप्त करय - ई हमरा स्वीकार नहि छल । एकसर पड़ि गेलहुँ । 'परिवेश' केँ बन्न कऽ देबाक अतिरिक्त तत्काल कोनो उपाय नहि सूझल ।

हम आरसी बाबू केँ कहियो रचनाक लेल आग्रह नहि कऽ सकल छलियनि । हमर विवशता सँ ओ परिचित छलाह । 'परिवेश' सन साठिक उभरल साहित्यिक प्रवृत्तिक प्रतिनिधित्व करैत छल । ओहि मे कुमारेन्द्र पारसनाथ सिंह सन नवकविक (ई बात 1963 क थिकैक) कविता छपि सकैत छल किन्तु, आरसी बाबू सन प्रतिष्ठित - प्रख्यात कविक पारम्परिक गीत - कविता नहि । ओ हमरालोकनिक विचारधारा आ 'परिवेश'क दृष्टिकोण सँ असहमति राखितहुँ ओकर बन्न होयबाक बात सुनि दुखी भऽ गेलाह । ओ कहलनि— 'अहाँ असहयोग आ विरोधक पूर्वानुमान अवश्य कैने हैब तखन चारिये अंकक बाद हतोत्साह कियैक भऽ गेलहुँ, साहित्यिक काज मे तँ एहि तरहक समस्या आबिते छैक ।'

हुनक सहानुभूति आ उत्साह-वर्द्धन बड़ीकाल धरि ओकर पुनर्प्रकाशनक मादे सोचऽक लेल बाध्य कऽ देने छल किन्तु, से संभव नहि भेल । हमरा होइत छल जे ओ अपन पीढ़ीक आन मूर्धन्य साहित्यकार केँ, 'परिवेश' केँ 'नोटिश' मे नहि लैत हयताह । किन्तु वैचारिक विरोधक अछैत अपन साहित्यिक प्रयासक प्रति हुनक साकांक्षता हमरा हतप्रभ कऽ देने छल ।

तकर बाद हमरा कलकत्ता मे हुनक दर्शन नहि भेल । ओ प्रकाशनक काज सँ ओतय अबैत छलाह किन्तु, पूर्व सूचनाक अभाव मे हम हुनक दर्शन सँ वंचित रहि जाइत छलहुँ । दू-तीन बेर पटना गेला पर आ मुजफ्फरपुर जाकऽ हुनका सँ भेंट करबाक प्रयास कयलहुँ किन्तु, कोनो खेप हुनक गाम चल जयबाक तऽ कोनो खेप आन कतहु जयबाक सूचना भेटैत रहल ।

एकबेर पटना पहुँचलहुँ तऽ भीमनाथ जी सँ हुनका मादे पूछलियनि। ओ कहलनि– 'आरसी बाबू हमर पड़ोसे मे रहैत छथि आ सम्प्रति पटने मे छथि।'

'मिथिला मिहिर' सँ दुनू गोटे हुनका डेरा पर पहुँचैत छी। भीमनाथ जी फूजल खिड़की सँ हुलकी मारैत छथि आ दरबज्जा खट-खटबैत छथि। आँखिक सोझ मे आरसी बाबू ठाढ़। हमरालोकनि केँ देखि ओ कोनो निर्दोष चंचल बालक जकाँ उत्फुल्ल होइत छथि। हम चरण - स्पर्श करैत छियनि आ ओ कुशल - क्षेम पूछैत छथि।

भौतिक सम्पन्नताक छद्म मे बोरल कृत्रिम हास-विलास आ विवेकान्ध आभिजात्यक दंश सँ आ हमर मनप्राण पर हुनक आन्तरिक आह्लाद मे डूबल सहज - निश्छल हास्य अमृत वर्षा करैत अछि। टकटकी लगऔने मात्र हम हुनका देखैत रहैत छियनि। भीमनाथजी हिमाच्छादित कैलाश पर्वतक शुभ्रहास आ मृगशावकक हत चांचल्य अबोधता केँ विस्मित भऽ देखैत रहैत छथि। ओ हमरा सन कतेक मृगशावक केँ एहि कैलाशक चरण-तल पर एहिना कतेक बेर देखने हयताह किन्तु, हमरा तऽ अपन स्रष्टाक स्नेहिल दृष्टिक मानसरोवर सौंदर्य-विद्ध कैने छल। ओ हमर ध्यान तोड़ैत छथि आ चलबाक संकेत करैत छथि आ हमरालोकनि विदा भऽ जाइत छी।

ओहि वर्ष 1979 मे, पटना सँ हमर कविता - पुस्तक – 'हम स्तवन नहि लिखब' छपल। पोथी भीमनाथ जीक सहयोग सँ बहरायल छल। ओकर प्रति आरसी बाबू केँ अवश्य भेटल होयतनि। हुनक कोनो प्रतिक्रिया नहि भेटल तऽ भेल जे पोथी नीक नहि लागल हेतनि तऽ सम्मति देब ओ आवश्यक नहि बूझने हेताह। आठ-नओ वर्ष बीति गेल। 1989 क फरवरी मे वागीशक (डा. वागीश कुमार मिश्र, रमेश्वर लता संस्कृत कॉलेज, दरभंगा) पत्र सँ ज्ञात भेल जे विद्यापति - स्मृति पर्व समारोहक अवसर पर डा. रामदेव झाक सम्पादन मे बहरायल स्मारिका 'संकल्प' मे 190 पांतिक आरसी बाबूक कविता— 'अहाँ केँ स्तवन लिखय पड़त' – 'हम स्तवन नहि लिखब' केर संदर्भ मे छपल छनि। सूचना तऽ भेटल किन्तु, 'संकल्प'क प्रति नहि।

कोनो पोथी पर प्रतिक्रिया व्यक्त करबाक आरसी बाबूक ई पद्धति अद्भुत लागल। साधना-सर्जनाक शिखर पर पहुँचि गेल एहि महाकवि केँ 'हम स्तवन नहि लिखब' सन सामान्य कृति कोना आकृष्ट कऽ लेलकनि, से जानबाक लेल 'संकल्प' देखब आवश्यक छल। हम जीवकान्त केँ लिखलियनि। ओ हुनक उक्त कविताक मादे अपन विचार व्यक्त करैत लिखलनि जे अंकक लेल सोझे आरसी बाबू अथवा रामदेवजी केँ लिखिऔन। हमर पत्र भेटलाक बाद आरसी बाबू 4.4.89 केँ पटना सँ एकटा कार्ड पठौलनि—'अहाँक 24/3 दिनांकित पत्र प्राप्त भेल। जीवकान्तजी जे लिखलनि, से यथार्थ छै। आइकाल्हि कवि एवं साहित्यकारक प्रति समाज तथा सरकारक की धारणा छै, ताहि आधार पर हम चर्चित कविताक रचना कैने छी। आ कवि एवं साहित्यकारक स्वाभिमान, सम्वेदना तथा रचनाधर्मिता केहन होइत छै, तेकर जीवंत चित्र अहाँ अपन कविता मे प्रस्तुत कैने छिये। हम ओहि मानसिकता केँ वास्तविकता मे उतारि देने छिये। 'सकल्प'क प्रति लेल अहाँ डा. रामदेव झा केँ लिखिऔन। विशेष अपन समाचार दिअऽ। की, केहन रचना भऽ रहल छै। अहाँक – आरसी'

पछाति हमर पत्र भेटितहि रामदेवजी संकल्पक अगिला-पछिला सभ अंक आ अपन पोथी सभ पठा देलनि।

उक्त कविता पढ़लाक बाद भावनाक सङ - सङ कतेक रास प्रश्न जागि उठल। आरसी बाबूक प्रतिक्रियामूलक कविताक समक्ष क्रियामूलक कविता (मूल कविता) तेजहत लागऽ लागल। हमरा लक्ष्य कए कहियो यात्री जी 'पिता - पुत्र संवाद' लिखने रहथि। ओहने सौभाग्य मैथिली केँ महाकवि आरसीक 'अहाँके स्तवन लिखय पड़त' पाबि भेटलैक। हमरा जनैत ई कविता 'स्मारिका' मे बहरयलाक कारण बहुत कम पाठकधरि पहुँचल हेतैक किन्तु, जहिया ओ पढ़ल जायत– एहि श्रेष्ठ कविताक निमित्त होयबाक लेल हम अवश्य स्मरण कैल जायब। दू - दू गोट महाकवि केर दू गोट श्रेष्ठ कविता मैथिली केँ भेटलैक– हमर कवि कर्मक एहि सँ बढ़ि कऽ सार्थकता की हैत ?

हुनक मैथिली मे आगमन आ अवदान

महाकवि आरसीक प्रथम दर्शन हमरा हुनक वयसक पूर्वार्द्धक अंतिम चरण मे भेल छल। ओ प्रसिद्धि, लोकप्रियता आ उत्कर्षक शिखर पर पहुँचि गेल रहथि। तत्कालीन साहित्यिक परिवेश मे ओ सर्वाधिक लिखऽ-छपऽ आ पसिन्न कैल जायवला कवि मानल जाइत छलाह। हमर बालमन हुनक प्रतिमा गढ़ि मोनक सिंहासन पर एक गोट आदर्श कविक रूप मे हुनका प्रतिष्ठित कऽ लेलक।

विद्यार्थी जीवन मे छलहुँ तऽ 'माटिक दीप' पढ़ने छलहुँ। 'पूजाक फूल' प्रकाशित भेलनि तऽ 'आखर' बहार करैत छलहुँ। ओकर समीक्षा 'आखर'क छठम अंक (अप्रैल 1968) मे बहार करबाक सौभाग्य भेटल छल। ताधरि हमर काव्यादर्श बदलि गेल छल आ भाव - विह्वलताक स्थान वैचारिक संघर्ष लऽ लेने छल। किन्तु, आरसी बाबू ओहिना सहज - सरल, प्रकृति, जीवन आ मनुक्खक गरिमाक गीत गाबैत, अपन आन्तरिक आह्लादकेँ कोनो शिशु जकाँ निश्छल हास्यक माध्यमसँ सभपर लुटबैत,आस्था प्रेम विश्वासक स्रोतस्विनी बहबैत। हमरा लेल हुनक ई सहज व्यापार रहस्य सँ भरल छल। परिवर्त्तित मानसिकताक कारण हुनक आत्म-राग मे वर्त्तमान विमुखताक दर्शन होइत छल, हुनक जीवन - संगीत वास्तविक जीवन सँ पलायनक संकेत दैत छल आ ओ हमरा 'अतीतजीवी' कवि लागऽ लागल छलाह। ई सभ धारणा ताधरि प्रकाशित आरसी - साहित्यक आधार पर बनल छल। किन्तु, कालान्तर मे प्रकाशित हुनक हिन्दी कविता संकलन सभ – 'मैं किस देश में हूँ', 'रजनीगंधा', 'युद्ध अवश्यम्भावी है' आदि हमर ओहि धारणा केँ निर्मूल सिद्ध कऽ देलक। ओकर स्पष्टीकरणक लेल हमरा हिन्दी मे फराक सँ लिखबाक चाही। एतय तँ मात्र मैथिलीक सम्बन्ध मे हुनका पर विचार करब उचित हैत।

आरसी बाबूक रचना बहुआयामी एवं द्विभाषी (हिन्दी एवं मैथिली) अछि। प्रकृतिक सुकोमल उपहार पुष्प आ मानवक कोमलतम रूप शैशव हुनका प्रारम्भहि सँ आह्लादित - आन्दोलित एवं सर्जनारत करैत रहलनि। प्रकृतिक हुनक कविता मे आलंबन उद्दीपन भए नहि, आत्मरूप मे प्रकट भेल अछि। तहिना शैशव वर्णित अभिव्यक्ति नहि, देह धारण कऽ उपस्थित भेल अछि। परिमाण मे कोनो भारतीय कवि आरसी बाबू सँ

बेशी कविता नहि लिखने हैताह — हिन्दी - मैथिली मे तऽ नहियें ।

आरसी बाबूक मातृभाषा मैथिली छलनि आ मित्र छलथिन अपना समयक विख्यात हिन्दी - मैथिली कवि एवं मैथिलीक अनन्य हितैषी बाबू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' जे स्वयं स्वच्छन्दतावादी कविता लिखैत छलाह । ओ एहन चतुर छलाह जे हिन्दीक मंच पर मैथिलीक मान - प्रतिष्ठाक लेल हिन्दीयेक एक गोट विख्यात कवि कें मैथिली मे कविता लिखऽक लेल आग्रह कैलनि । कविक क्षमता एवं प्रतिभाक आधार पर ओ कविता लिखयबाक पहिनहि ओकर श्रेष्ठताक अन्दाज लगा नेने हेताह । आ मैथिलीक प्रसिद्ध कविता— 'शेफालिका' विरचित भऽ गेल आ काव्य जगत मे एकटा 'माइलस्टोन' गड़ि गेल । लोक कें कवि मे रवीन्द्रनाथ टैगोरक दर्शन होमऽ लगलनि ।

एतय विचारणीय ई अछि जे जें आरसी बाबू पहिनहि सँ हिन्दी मे कविता नहि लिखैत रहितथि तऽ की मैथिली मे हुनक प्रथमे प्रयास मे 'शेफालिका' सन श्रेष्ठ आ सर्व-ग्राह्य कविता लिखा जइतय ? हिन्दी मे पहिनहि जड़ि जमाकए मान - प्रतिष्ठा अर्जित नहि कऽ लेने रहितथि तऽ अपन मातृभाषाक लोक हुनका ओहि रूप मे शिरोधार्य कए आदर - अभिनन्दन करितनि ?

आरसी बाबू ककरो आग्रह पर कोनो आन भाषा मे 'शेफालिका' सन कविता लिखितथि तऽ ओकरा ओहिना मान्यता भेटितैक जेना मैथिली मे भेटल छैक । रचनाक श्रेष्ठता रचनाकारक प्रतिभा, क्षमता आ अभिव्यक्ति - कौशल पर निर्भर करैत छैक आ ओकर प्रसिद्धि भाषाक व्यापकता पर । से जँ नहि रहितैक तऽ रवीन्द्रनाथ 'गीतांजलि'क अंग्रेजी मे भाषान्तरणक मादे नहि सोचितथि ।

आरसी बाबूक समक्ष हिन्दीक प्रशस्त मार्ग छलनि आ हुनक मातृभाषोक लोक हिन्दीये मे भेटल मान - प्रतिष्ठाक कारण सम्मान दैत छलनि । सुमन - मधुप - अमर - मोहन सेहो सभ हिन्दी आ मैथिली दुनू मे लिखैत छलाह, किन्तु हिन्दी मे नहि जमि पयबाक कारण मैथिली मे अपन सम्पूर्ण चेतना लगा देलनि । मुदा ओ तऽ हिन्दीक प्रतिष्ठित कवि मे अग्रगण्य भऽ चुकल रहथि आ राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृति पयबाक मेल रचनारत रहथि । ओ कियैक राष्ट्रभाषाक राजमार्ग त्यागि मातृभाषाक एकपेरिया पर चलैत दू - चारि जिला मे प्रसिद्धि पयबाक लेल प्रयासरत होइतथि ?

निश्चित रूप सँ भुवनजी, डा. अमरनाथ झा एवं आन मैथिली प्रेमी कें शेफालिका सँ प्रभावित भए आरसी बाबू सँ आओर श्रेष्ठगीतक अपेक्षा रहल होइतनि । आरसी बाबू स्वयं एहि बात कें बूझैत हेताह । कहियोकाल आग्रह विशेषवश अथवा स्वेच्छा सँ मैथिली मे लिखि दैत छलाह, किन्तु अपन मुख्य लक्ष्य राष्ट्रभाषाक सेवा सँ विचलित भए मैथिली मे नहि उतरलाह ।

हुनक पहिल मैथिली कविता शेफालिका 1936 मे छपल छल आ पहिल मैथिली कविता संकलन 'माटिक दीप' बहरायल छलनि 1958 मे । एहि 22 वर्षक अवधि मे ओ हिन्दी मे सहस्त्राधिक कविता लिखलनि, किन्तु मैथिली मे मेघदूतक अनुवादक अति-रिक्त मात्र 28 गोट । ओहि अवधिक लिखल मात्र एकटा आओर–मधुयामिनी (1944) छलनि जे 1967 मे 'पूजाक फूल' मे संकलित भेल ।

एतय हमर उद्देश्य मैथिली मे नहि लिखि सकबाक हुनका पर आक्षेप लगायब नहि अपितु स्थिति स्पष्ट करब अछि ।

1960 - 61 धरि हिन्दी कविताक स्थिति बहुत बदलि गेल रहैक । नव काव्या-न्दोलनक बिहाड़ि कविताक अवस्थे कें नहि, अस्तित्ववादी युकिलिप्टस आ कैक्टसो कें जड़ि सँ हिला देने रहैक । स्थापितक प्रासंगिकता पर प्रश्नचिह्न लगाओल जा रहल छलैक । स्थापनाक लेल प्रतीक्षारत रचनाकारक शल्य - परीक्षा चलि रहल छलैक । आलोचनाक मापदण्ड बदलि गेल रहैक । मात्र कबीर, निराला, मुक्तिबोध आ नागार्जुन प्रासंगिक रहि गेल रहथि । ओ बिहाड़ि अज्ञेय धरि कें उखाड़ि कऽ राखि देने रहनि । अतल सँ केदार - नागार्जुन - शमशेर - त्रिलोचनक प्रतिमा कें बहार कऽ प्रतिष्ठित करबाक नामवरी प्रयास चलि रहल छलैक, एहना स्थिति मे आरसी बाबूक अतीत ऐतिहासिक आ अप्रासंगिक भऽ जायब स्वभाविके छल ।

'पूजाक फूल'क बाद आरसी बाबू मैथिली दिस उन्मुख भेलाह । अपन रचना-धर्मिता पर अखण्ड विश्वास रहितहुँ, 'राष्ट्रभाषा'क सर्वजन स्वीकृति आ ओकर साहित्यक समृद्धि मे आजीवन साधनारत रहबाक संकल्प आ दृढ़ निश्चयक बादो हिन्दीवला सँ हुनक मोह-भंग होमऽ लागल छलनि । जेना स्वतंत्रता-प्राप्तिक बाद स्वतंत्रताक अर्थ नौकरशाह एवं राजनेताक लूटि - मारि मे बदलि गेल, तहिना स्वतंत्रता - संग्रामक भाषा हिन्दी राष्ट्रभाषाक स्थान पर हमरालोकनिक औपनिवेशिक संस्कारक कारण एवं अंग्रेजी भक्त राजनेताक कुचक्र सँ 'सम्पर्क भाषा' घोषित भेल किन्तु, सेहो आइ धरि किछु राज्य मे मान्य नहि भेल । उनटे ओकर ठीकेदार सभ साम्राज्यवादी दृष्टिकोण अपना आधिपत्य बढ़यबाक चिन्ता मे लागि गेलाह । हिन्दीक सहयोगी क्षेत्रीय भाषाक विकास सँ हिन्दी आओर समृद्ध होइतय - ई मूढमति राजनेता केर प्रस्तरीभूत मस्तिष्क मे नहि प्रविष्ट भऽ सकलनि आ ओ भाषाक राजनीति शुरू कऽ देलनि । हुनका एतबो नहि बूझल छलनि जे सय - सवा सय वर्ष पहिने हिन्दी स्वयं क्षेत्रीय भाषा छल आ ओ संस्कृतमूलक विभिन्न क्षेत्रीय भाषाक समाहार सँ बनल अछि । कबीर, विद्यापति, जायसी, सूर, तुलसी, मीरा हिन्दी कवि मे कोनो परिगणित होमऽ लगलाह ओ तकरो अध्ययन नहि कऽ सकलाह आ मातृभाषाक अस्मिता कें राष्ट्रभाषाक बैरिन बूझि ओकरा पदाक्रान्त करऽ मे लागि गेलाह ।

कोनो रचनाकारक कार्य क्षेत्र भाषा नहि, साहित्य छैक किन्तु साहित्य जाहि भाषा मे लिखल जाइत छैक ओकर उन्नयन सँ तऽ साहित्य प्रभावित आ समृद्ध होइते छैक । साहित्यकारो कें विस्तार भेटैत छैक ।

दोसर बात– शिविर, प्रान्त, वाद, क्षेत्र मे बँटा कऽ साहित्यक रचनाधर्मिता आ साहित्यकारक संघर्ष दुर्धर्षिता ओहुना कम भऽ जाइत छैक । ताहू पर जँ भाषा एवं राजकीय सेठिया सम्मानक राजनीति लादि देल जाय तऽ ओ आओर अधोगति मे पहुँचि जाइत छैक ।

आरसी बाबू सन स्वतंत्रचेता, स्वाभिमानी आ साधना कें सर्वस्व बूझऽवला साहित्य-कारक संदर्भ मे उपर्युक्त कथन विशेष अर्थ रखैत अछि । ओ जाहि भाषाक संवर्धन मे

लागल रहलाह, ओहि मे साहित्य - साधना सँ बेशी साहित्यिक राजनीति महत्वपूर्ण भऽ गेलैक एवं जाहि मूल्यक लेल अद्यावधि संघर्षरत रहलाह, ओकर अवमूल्यन सँ जे दृष्टि विकसित भेलैक ओहि मे हुनका सन साहित्यकारक मात्र ऐतिहासिक महत्व रहि गेलैक ।

ओ एहि सभ सँ अप्रभावित रहि अपन साधना मे लागल रहलाह । वर्त्तमानक प्रति असन्तोष एक दिस अतीत मे आरम्भ कैल काज (वीरवर कुँअर सिंह, चाणक्य शिखा, रजनीगन्धा, आस्था का अग्निकुण्ड आदि, हिन्दी मे) पूरा करऽक लेल प्रेरित कैलकनि तऽ दोसर दिस मातृभाषाक प्रति ध्यान दिऔलकनि ।

आ अपन मातृभाषाक अन्हार घर मे आन्तरिकता, स्नेह - प्रेम आ नैसर्गिक सौन्दर्यक दीप (माटिक दीप) बारऽवला कवि आरसी 'पूजाक फूल' लए उपस्थित भेलाह । ओकर यथेष्ठ स्वागत - सम्मान भेलैक । एहि मे संकलित तीस गोट कविता मे 1944मे लिखल 'मधुयामिनी' केँ छोड़ि उनतीसो कविता 1960 कऽ बादक थिकनि । तकर बाद तऽ ओ मैथिलीयो मे निरन्तर लिखऽ लगलाह । परिणामतः प्रायः सय गोट कविताक संकलन 'सूर्यमुखी' 1981 मे प्रकाश मे आयल ।

'सूर्यमुखी'क विस्तृत भूमिका (प्रवेशिका) कतेक अर्थ मे महत्व राखैत अछि । एहि मे ओ अपन काव्य - संघर्ष, रचना - प्रक्रिया, चिन्तन आ सरोकार, आधुनिकताक प्रति अपन दृष्टिकोण स्पष्ट कैलनि अछि, कविताक प्रयोजन आ आधुनिक संदर्भ मे ओकर प्रासंगिकता एव मैथिली कविताक साम्प्रतिक स्थिति पर विचार कैलनि अछि, आओर अपन पुष्प - चेतना केँ स्पष्ट करैत आत्मस्वीकारक रूप मे 'शेफालिका' सँ 'सूर्यमुखी' धरिक यात्राक प्रसंग मे लिखैत छथि —

'तेँ कहल, जे 'शेफालिका' हमर जीवनक पहिल प्राते सँ तेना ने हमरा विमुग्ध करय लागल, जे परिपूर्ण यौवनक मादक - मांसल उद्वेगक कथे की ?- आइ वृद्धोपन धरि पिण्ड नहि छोड़लक अछि, एखनो हरसिंगारक फुलायल गाछक सान्निधि मे अबिते मन-प्राण जेना कोनो स्वप्न लोक मे जाकऽ मूर्च्छित भऽ जाइत अछि । ..... एहि प्रसंग मे जँ डूबि कऽ देखल जाय, तँ लागत जे हमरा जीवन मे फूल सँ जेना लगाव भऽ गेल अछि, तेना संसारक कोनो आन वस्तु सँ किएक ने ?'

संसारक आन वस्तु दिस सँ आँखि मूनि फूल अथवा प्रकृतिक प्रति एहने लगाव प्रायः सभ स्वच्छन्दतावादी प्रकृति प्रेमी रोमांटिक कविक रहनि । हिन्दीक उत्तर छाया-वादी काव्य परम्परा मे दीक्षित कवि आरसीक समक्ष वर्डस्वर्थ, कीट्स, शेली, बायरन रवीन्द्र, प्रसाद, पन्त आदिक आदर्श छलनि । एहि कवि - वर्गक लेल जीवनक वास्तवि-कता सँ बेशी रागात्मकता महत्वपूर्ण छल, प्रकृतिक ऐश्वर्यलोकक काल्पनिक आनन्दक समक्ष सभ किछु तुच्छ ।

महाकवि आरसी जाहि फूलक बात एतेक सरल - सुबोध ढंग सँ कहने छथि ओ गाछक डारि पर प्रस्फुटित होइवला सामान्य फूल नहि अछि । ओ संसारक सभ ऐश्वर्य, सभ दुख - दर्द, सभ समस्या, सभ विडम्बना - प्रताड़ना, सभ अभाव - अभियोगक माटि केँ मर्दित कए ओहि पर उगैत अछि, अपन सुगन्धि जीवनक दुर्गन्धि पर पसारि दैत अछि, काँट - कुश सँ क्षत - विक्षत शरीर पर परागक स्तर - पर - स्तर चढ़ा दैत अछि, आ

संसारक समस्त विकृति केँ स्मिति मे बदलि दैत अछि । ई फूल कविक आत्मदुर्बलता नहि, काव्य-सत्य थिकनि । ओकरे परिक्रमा, ओकरे विस्तार मे अपन सत्य-शिव-सुन्दरक अन्वेषण हुनक काव्य - यात्रा— ननु पुष्पमेव निदर्शनम् । हुनक ई फूल ब्रह्म जकाँ विराट अछि आ ओकरे जकाँ रहस्यमय । नहि तऽ की ओहिना साठि वर्षक पुष्प - साधनाक बादो ओ ओकरा लेल 'नेति - नेति' कहि रहल छथि ?

महाकवि आरसी केँ शैशव - किशोरावस्था मे बूझब जतबे सरल छल, आइ ओतबे कठिन । सम्पूर्ण आरसी - साहित्य हमरा लेल महासागरक विस्तार लऽ लेलक आ मल्लिनाथक श्लोक मोन पड़य लागल—

'करीन्द्र जीमूत वराह शंखमत्स्यादि शक्त्युद्भववेणुजानि
मुक्ताफलानि प्रथितानिलोके तेषांतु शुक्त्युद्भवमेव भूरि'

सितुआ - शंख, शार्क - ह्वेल सभ सँ लड़ैत - बचैत 'मुक्ताशुक्ति'क भण्डार धरि पहुँचियो कए जँ मोती बहार नहि कऽ सकी तऽ एकरा हमर व्यक्तिगत अक्षमताक अतिरिक्त आओर की कहल जा सकैछ ?

तीन - चारि पीढ़ी सँ लगातार बिहार मे हिनक कविता - गीत पढ़ल - गायल जा रहल छनि । हुनक जीवनी आ काव्य - यात्रा सँ बच्चा - बच्चा परिचित अछि । कोटि-कोटि हृदयक ओ स्पन्दन बनि गेल छथि, अपन निर्मल भावधारा सँ लोक - भावना केँ परिष्कृत - उत्तोलित कऽ रहल छथि ।

कविताक उद्देश्य, दिशा आ मापदण्ड समयक परिवर्त्तन आ आवश्यकताक अनुसार बदलैत रहैत छैक, किन्तु ओकर लोकपक्ष ओहिना रहैत छैक, कियैक तऽ ओकर सृष्टिक मूल मे प्राणि - जगतक श्रेष्ठतम रचना मनुक्ख ओकर कविताक विषय अथवा लक्ष्य भऽ जाइत छैक । कविक भाव पर जाहि तरहक प्रभाव, अनुभव, सौन्दर्य, रूप - रंग, यथार्थ एवं सत्य सँ अभिभूत - आन्दोलित होइत छैक, ओ ओकरे अभिव्यक्ति कविता मे करैत अछि । किन्तु अभिव्यक्तिक माध्यमक चयनक ओकरा स्वतंत्रता रहैत छैक तथापि ई काज ओ अपन रुचि, संस्कार आ आन्तरिक दबावक अनुसार करैत अछि । स्वयंभू कवि केँ प्राप्त असीमित स्वतंत्रता ओकरा निरंकुशो बना दैत छैक ।

महाकवि आरसी संकल्पक निरंकुश कवि छथि । विकल्प, बन्धन, अनुशासन, आवसरिक प्रयोजन, प्रलोभन – ककरो अपन ध्येय एवं निष्ठाक मार्ग मे अवरोधक नहि बनऽ दैत छथि । सभ तरहक बाहरी दबाव सँ असंपृक्त - अप्रभावित रहि ओ अपन भाव-साम्राज्यक सम्राट बनल छथि । हुनक सफलता एवं विफलता दुनूक कारण हुनक एही अनियंत्रित - निरंकुश स्वेच्छाचारिता मे ताकल जा सकैछ ।

प्रतिभा एवं मौलिकताक धनी कविक केँ अपन रचनात्मकता पर अटूट आस्था छनि । आ आस्था, प्रेम, करुणा, वात्सल्य आ सौहार्दक गीत गाबैत रहैत छथि– एकर बिना परवाहि कैने कि एहि सभ मानवीय वृत्तिक प्रतिकूल आइ कोन धारा बहि रहल छैक अथवा ओहि सभ केँ फाँस बना कए कोना सम्पूर्ण मानवीयता केँ ओहि पर लटका देल गेल छैक । अपन अदम्य उत्साह मे ओ बारूदक ढेरी पर फूलक गाछ रोपैत रहैत छथि ।

संभवतः हुनका ई बूझल होनि जे आधुनिक 'कसौटी' पर हुनक कविता अपन

तार्किक प्रयोजनीयता नहि सिद्ध कऽ सकैत अछि आ ने अणु एलेक्ट्रॉनिक संचालित हृदय कें स्पन्दित - उल्लसित । किन्तु ओ तऽ एही अतार्किकता, अप्रयोजनीयता एवं अप्रासंगिकता कें अपन लक्ष्य बना नेने छथि —

'यैह यदि आत्मा केर ज्योति स्वयं सिद्ध थिक ।
ओकरा सँ अन्हारे किये ने नीक गिद्ध थिक ?
पाँखि मे जकर आँखि मूनि कऽ नुकाइ छी ।
धुआँ जकाँ बन्न घर मे हम औनाइ छी ।'

आत्मज्योति (सूर्यमुखी)

अपन मित्र महाकवि दिनकर कें सम्बोधित हिन्दी कविता मे ओ लिखैत छथि—

'कौन है जीवन्त कवि ? यह प्रश्न जब कौंधा क्षितिज पर,
मैं अगत - परिणाम उस ललकार को स्वीकार बैठा ।
काल के प्रच्छन्न पट को कौन रेखांकित करेगा,
इस द्विधा में दाव पर सम्पूर्ण जीवन हार बैठा ।'

(मैं किस देश में हूँ)

अपन रचनाक लेल धुआँक घर मे औनाइत सम्पूर्ण जीवन कें हारऽवला ई विराट कवि अपनहु मादे तऽ सभ किछु स्वयं कहि रहल छथि ।

मैथिली जगत कें हुनका सँ बड़ पैघ आ युगान्तरकारी अवदानक अपेक्षा रहैत छैक । एहि मे कोनो संदेह नहि जे अद्यावधि हुनक अवदानक महार्घता चिर - स्मरणीय, चिर - अभिनन्दनीय रहतनि किन्तु, कोनो भाषा साहित्यक महती प्रतिभा सँ अपेक्षाक व्यापकता आओर बेशी होइत छैक । कहियो 'शेफालिका' मे रवीन्द्रक दर्शन करऽवला मैथिली जगत कें आरसी मे मात्र रवीन्द्रक गीतितत्वे नहि, हुनक दृष्टि - विस्तार आ वैविध्यक आभास सेहो भेटल होयतैक आ ओ बंगला भाषा जकाँ अपन साहित्यक समृद्धिक ओही अनुपात मे कामना कैने हैत ।

कवि मे अपार प्रतिभा, क्षमता, मौलिक दृष्टि, साधना - शक्ति आ सर्जनात्मक ऊर्जा छनि । हिन्दीक हुनक पचास - साठि टा पोथी हमर एहि धारणाक पुष्टि करैत अछि । मैथिलीक लेल हुनक ई उपलब्धि कम गौरवक बात नहि थिकैक किन्तु, अपनो लेल ओहने समृद्धिक कामना करऽ सँ ओकरा रोकल नहि जा सकैछ ।

पछिला किछु वर्ष मे हुनक बहुतरास पोथी (प्रायः सात-आठ गोट) हिन्दी मे छपल अछि । जँ ओ अगिला तीन - चारि वर्ष मैथिली कें दऽ दैत छथि तऽ ओकर भण्डार मे स्पृहणीय वृद्धि हैतैक । महाकविक मातृभाषा कें ओकर प्राप्य भेटि जयतैक ।

भाषाक स्तर पर अपनहि सन्तान सभक अदूरदर्शिता - उपेक्षाक कारण मैथिली आइ एहि अवस्था मे पहुँचि गेल अछि । पहिने ओकरा संस्कृतक दासी बना कए राखल गेलैक आब ओ हिन्दीक बहिकिरनी कहाइत अछि । बात एक्के छैक । लिपि, भू - भाग, जनशक्ति — क्रम - क्रम सँ सभ छीनि लेल गेलैक । ओकर अपनहि जनपदक 'बोली' सभ कें ओकरा विरुद्ध ठाढ़ कऽ देल गेलैक, अपनहि सन्तान सभक राजनीतिक लाभ -

लोभ आ राजनीतिक कुचालिक कारण ओकर पद प्रतिष्ठा सभ चलि गेलैक । ओकर अस्तित्व कें बन्हकी राखऽवला सन्तान सभ आइ अधिकार, मान्यता, विकास आदि नाटकक मंचन करैत अपन अभिनय - कलाक प्रदर्शन कऽ रहल छथि ।

मैथिली जँ आइयो जीवित अछि तऽ मात्र अपन साहित्यक कारण । साहित्य ओकरा कहियो मरऽ नहि देतैक । विद्यापति अपन मातृभाषाक लड़ाइ लड़ऽ लेल आइ जीवित नहि छथि, किन्तु हुनक साहित्य जीवित छनि । तहिना आरसी बाबू 'भाषाक योद्धा'क रूप मे भले नहि, अपन साहित्यक माध्यम सँ सभ दिन जीवित रहताह । जाहि भाषा मे अमर साहित्य छैक, ओकरा के मारि सकैत छैक ?

आइ सिद्धावस्था (वृद्धावस्था नहि) मे पहुँचऽवला महाकवि आरसी मात्र साधना कें जीवनक लक्ष्य आ सार्थकता मानैत रहलाह । के हुनका सम्बन्ध मे की कहैत, लिखैत छनि तकर बिना परवाहि कैने अपन संवेदनाक महासागरीय विस्तार मे भावनाक रत्न भरैत रहलाह । मिथिलाक एहि रत्नाकर सँ मैथिली अपन उचित प्राप्यक लेल एखनहुँ आशा लगओने अछि । हमर कामना जे ओ पूर्ण स्वस्थ रहथि, शतायु होथि आ मातृ ऋण सँ उऋण भए कृतार्थताक अनुभव करथि । हुनक सूर्यमुखी चेतना कें हुनकहि शब्द मे हमर प्रणाम —

'सूर्यमुखी, तों गाबह मंगल, करह कृतार्थ जनम तों
आलिंगन दऽ रहल केन्द्र - चैतन्य प्रकाश - परिधि कें'

(सूर्यमुखी)



प्रकाशित— संकल्प - 4 : अप्रील 1994

मैथिलीपुत्र मणिपद्मक ऊर्जस्वल व्यक्तित्व

हमर पिताक मित्र आ हमरा लेल पितातुल्य श्रद्धेय श्री बाबूसाहेब चौधरी 1960 क अन्त अथवा 1961 क आरम्भ मे, कलकत्ता सँ पटना आबैत छथि आ स्टेशन सँ सोझे हमर होस्टल पहुँचि जाइत छथि। पिताक समाचार - संदेश सुनौलाक बाद पूछैत छथि — 'मणिपद्म जीक उपन्यास 'विद्यापति' पठौने रही की पढ़लहुँ ?' हमर सकारात्मक उत्तर आ ओहि ऐतिहासिक उपन्यास पर हमर संक्षिप्त प्रतिक्रिया सुनि आह्लादित होइत छथि आ कहैत छथि — 'आदिकथा' आ 'बिहाड़ि पात पाथर' पर अहाँ 'मिथिला दर्शन' मे आलोचनात्मक लेख लिखने रही, अहू उपन्यास पर अहाँ कें लिखबाक अछि।'

ओ हमरा सद्यः प्रकाशित 'चर्चरी'क एक प्रति दैत छथि आ श्रद्धेय प्रो. हरिमोहन झाजीक बासा पर चलबाक लेल कहैत छथि। हमरालोकनि हुनका डेरा पर पहुँचैत छी तऽ ज्ञात होइत अछि जे ओ अस्वस्थ छथि। भीतर पहुँचैत छी। ओ लेटल आ एक गोट प्रौढ़ व्यक्ति लऽग मे बैसल। हम दुनू गोटे झाजी कें प्रणाम करैत छियनि। चौधरी जीक मुँह सँ बहराइत अछि — 'अहा, मणिपद्मजी, अहूँ एतहि छी ?' आ हमरा उज्जर बग - बग खादीक धोती - कुर्त्ता - टोपी मे कोनो नेता जकाँ लगैत व्यक्तिक परिचय भेटि जाइत अछि। हम हुनक चरण - स्पर्श करैत छियनि। चौधरीजी हुनका हमर परिचय दैत छथि— 'ई विद्यार्थी दिनेश बाबूक बालक थिकाह आ लेखन मे रुचि राखैत छथि।'

एम. ए. करितहि नौकरी पाबि हम कलकत्ता पहुँचि जाइत छी। मणिपद्म जीक आगमन कलकत्ता मे बराबरि होइत छलनि। पिताजी सँ घनिष्ठ परिचय छलनि मुदा, हमरा हुनका सँ ओतय एक्के बेर भेंट भेल। कालान्तर मे बेगूसरायक जी. डी. कॉलेज मे विद्यापति जयन्तीक अवसर पर हुनक ओजपूर्ण भाषण आ कविता पाठ सुनबाक संयोग लागल। ओ सुअवसर हमरा लेल अविस्मरणीय अछि। किछु बेर आओर साक्षात्कार भेल मुदा, ओ अति संक्षिप्त आ औपचारिक छल। हम चिर - प्रवासी, मंच आ मिथिला सँ दूर रहलाक कारण हुनक स्नेह - भाजन रहितो, सान्निध्य सँ प्रायः वंचित रहि गेलहुँ।

'आखर'क प्रकाशनक अवधि मे हुनक बहुतरास पत्र आयल छल। हुनक हस्तलेख अस्पष्ट होइत छलनि। प्रेस कॉपी प्रायः हमरे बनाबऽ पड़ैत छल, यद्यपि हमरो लिखल कें कम्पोजीटर हमरे सँ आबि कए पढ़बाबैत छल। पुनर्लेखन करऽ काल हुनक वैचारिक तीव्रता आ उत्तेजक भाषा हरदम बान्हने रहैत छल। 'आखर'क प्रत्येक अंक पाबितहि ओ अपन प्रतिक्रिया पठबैत छलाह।

फरवरी '68 क अंक मे जीवकान्तक कथा– 'टिल्हाक धुकधुकी' प्रकाशित भेल। अंक लोकक हाथ मे पहुँचैत देरी ओहि पर अश्लीलताक आरोप लागऽ लागल। हमर बुद्धि - विवेक पर सन्देह व्यक्त कैल गेल। मात्र मैत्रीक निर्वाहक लेल ओहि कथा कें छापि पत्रिकाक स्तर कें खसयबाक लेल किछु पाठक द्वारा परतारल गेलहुँ। हमरा खुशी भेल जे लोक पढ़लक तखन ने अश्लीलता जोहलक। मैथिली मे तऽ अधिकांश रचना अपठिते रहि जाइत अछि।

हम मणिपद्मजी कें पाठकक आक्षेप कें ध्यान मे राखि प्रतिक्रिया व्यक्त करबाक अनुरोध कयलियनि। ओ लगले– 'टिल्हाक धुकधुकी : आलोचना दृष्टि' – लिखि कए पठा देलनि जे आखरक अक्तूबर 1968 क अंक मे प्रकाशित भेल। ओकरा पढ़लाक बाद कतेक पाठक हुनक आलोचकीय प्रतिभा आ निष्पक्षताक प्रशंसा करैत पत्र लिखने छलाह।

प्रो. राधाकृष्ण चौधरी सँ हुनक घनिष्ठ मैत्री आ सम्बन्ध छलनि। जहिया कहियो बेगूसराय जाइ अथवा श्रद्धेय राधाबाबू शोकहरा आबथि, मणिपद्म जीक चर्चा चलय। दुनूक रुचि आ विचारधारा मे अदभुत साम्य छलनि। दुनू कें प्राचीन लोकजीवन, पुरातत्त्व, इतिहास आ मिथिलाक अतीत मे सर्वत्र अमूल्य निधिक दर्शन होइत छलनि। दुनूक मैत्री अपना पीढ़ी सँ बेशी नवका पीढ़ी सँ एवं दुनू मे अध्ययन, चिन्तन तथा लेखकीय ऊर्जा केर अपार भण्डार। राधा बाबूक 'कुसुमावलीक नीलकमल'क प्रकाशन पर हुनक अदभुत प्रतिक्रिया कतेक मास धरि चर्चाक विषय रहल छल।

हमर मित्रवर्ग मे सोमदेवजी एवं जीवकान्तजी हुनक बेशी सम्पर्क मे रहैत रहथि। तन्त्र पर आधारित हुनक लघु जासूसी उपन्यास 'कोब्रागर्ल' (पॉकेट बुक) पठबैत सोमदेवजी लिखने रहथि जे मैथिली कें सभ दिस सँ भरबाक अछि। सामान्य मैथिली पाठक हिन्दी दिस भागैत अछि। जँ मैथिली मे ओ विविधता, सामान्य पाठक कें ध्यान मे राखि, आनल गेल, तऽ मैथिलीक विकास पर ओकर व्यापक प्रभाव पड़तैक। हिन्दीक जासूसी उपन्यास लोक कें स्टेशन आ सड़क पर सेहो भेटि जाइत छैक। मणिपद्म जीक 'कोब्रागर्ल' आ 'पॉकेट बुक' मे प्रकाशित आन - आन एकटकही पोथी सँ पाठकक संख्या मे खूब वृद्धि हैत।

डा. बी. झा आ सोमदेव जीक 'पॉकेट बुक' योजना बन्न भऽ गेलनि किन्तु, मणिपद्मजी द्वारा लोक रुचि जगाबऽ वला लेखकीय अभियान चलैत रहल। ओ एक-पर-एक उपन्यास, कथा, नाटक, विज्ञान एवं तंत्र कथा, बाल नाटक, यात्रा - वृतान्त आदि लिखैत गेलाह। मैथिली समाज कें हुनक कथा - भूमि सँ जन्मजात आ संस्कारगत सम्बन्ध छलैक। साहित्य मे ओकरा व्यापक आ सर्वग्राह्य बनाबऽक लेल, ओ जाहि तत्परता आ परिश्रम सँ काज कैलनि, ओ विरल अछि। साहित्यिक आभिजात्य कें तोड़ि साहित्य कें सामान्य जन अथवा 'सोलकन्ह' धरि पहुँचौलनि। एहि हेतु हुनका द्वारा कैल गेल प्रयास सर्वविदित अछि।

ओ समस्त लेखन योजनाबद्ध रूप सँ कैलनि। चाहे 'अनलपथ' हो अथवा 'विद्यापति' अथवा 'लोरिक विजय', 'राजा सलहेश', 'लवहरि कुशहरि', नयका बनिजारा', 'राय रणपाल', 'दुलरा दयाल', 'कोब्रागर्ल', 'अर्धनारीश्वर', 'कनकी', 'कंठहार' सभक लेल ओ मासक मास अथवा सालक साल सामग्री जुटाबऽ मे लगौलनि। निम्न - उपेक्षित शोषित - दलित वर्गक सङ मात्र हुनक सहानुभूतिये नहि छलनि अपितु ओकर जीवन - शैली, हर्ष - विषाद, राग - द्वेष, लोकाचार, आस्था- अन्धविश्वास सभक सङ ओ एकात्म छलाह, ओकर भावलोक आ कर्मक्षेत्रक प्रत्यक्ष अनुभव छलनि। एहि वर्गक अदम्य उत्साहक मूल स्रोत धरि पहुँचऽक लेल ठाम - ठाम भटकऽ लगलाह। सामग्रीक संचयन

आ ओकर परीक्षण - विवेचन - विश्लेषण आ ओहि आधार पर साहित्यक -प्रणयन ओ अपन मुख्य लक्ष्य बना लेलनि। हुनक प्रत्येक रचना एकटा खोजी, अनुभव सम्पन्न आ चिर उत्साही लेखकक विराट व्यक्तित्व सँ साक्षात्कार करबैत अछि। विभिन्न विधा मे दू सय सँ बेशी पोथी लिखनिहार मणिपद्म जीक प्राय: 20 / 22 टा संकलनें प्रकाशित भेल छनि। अप्रकाशित पौने दू सय संकलन छपि गेने, परिमाणक दृष्टि सँ, समस्त भारतीय भाषा मे सर्वाधिक लिखऽ वला किछु शीर्षस्थ लेखकक कोटि मे आबि जयताह। किन्तु, अपन भाषा मे प्रकाशनक वर्त्तमान स्थिति केँ देखैत ई विश्वास नहि होइत अछि जे कहियो सम्पूर्ण मणिपद्म - वाङमय अथवा मणिपद्म रचनावली प्रकाशित भऽ सकत एवं मैथिलीक ई सपूत अखिल भारतीय स्तर पर भारतीय भाषा मे अपन योगदानक लेल चर्चित - विश्लेषित हेताह।

ई बात मणिपद्मोजी केँ बूझल छलनि तथापि पोथी परं पोथी लिखैत गेलाह आ आगामी लेखनक लेल सामग्री जुटबैत रहलाह। एक अवस्था आ बोधक बाद, भाव आ विचारक संसार मे जिअइत लेखक लेल लेखन विवशता भऽ जाइत छैक। प्रकाशन, मूल्यांकन, पुरस्कार, सम्मान सभ ओहि आन्तरिक बाध्यताक समक्ष अविचारणीय, नगण्य। ओकर लक्ष्य मात्र लिखब रहि जाइत छैक, उपलब्धि अथवा सिद्धि - प्रसिद्धि नहि। सिद्धि - प्रसिद्धि आ प्राप्तिक वर्त्तमान बुभुक्षा जँ आइ सँ हजार - पाँच सय वर्ष पहिनहि जागि गेल रहितय अथवा वर्त्तमानो कालक समस्त साहित्यकार केँ क्षुधार्त्त कैने रहितय तऽ एक्को टा महान रचनाकार आइ नहि भेटितथि आ साहित्य 'मिडिओकर' सँ भरि जइतय। मुदा, स्थिति से नहि छैक। प्रत्येक युग मे मणिपद्मजी सन महान रचनाकार जन्म लैत रहलाह अछि आ रहताह। विश्व वाङमय एहिना समृद्ध होइत रहत।

हुनका मे अदम्य आत्मविश्वास छलनि। एक बेर राजनन्दन लाल दास हुनका पूछने छलथिन — 'मैथिली मे एतेक जे लिखि रहल छी से के छापत आ के पढ़त ?' हुनक उत्तर छलनि— 'हमरा विश्वास अछि, हमरा मरणोपरान्त लोक घर सँ आलमारी तोड़ि कऽ हमर पांडुलिपि लऽ जेतैक, छापतैक आ पढ़तैक।' एहन दृढ़ आत्मशक्ति वला व्यक्ति केँ कोन भौतिक कष्ट, सांसारिक बाधा आ अभाव - विपत्ति लक्ष्य धरि पहुँचऽ सँ रोकि सकैत छैक ?

एहि शताब्दीक पूर्वार्धे धरि ओ एतेक काज कऽ गेल रहथि जे उत्तरार्धक शेष वर्ष मे ओकरा भजबैत रहि सकैत रहथि किन्तु, हिन्दीमे लेखन आ स्वतंत्रता संग्राममे योगदान कैलाक बाद अपन मातृभाषाक बहुविध विकासकेँ लक्ष्य बना आजीवन लेखनरत रहि प्रचुर साहित्यक सृजन कैलनि। आइ जे उच्च एवं मध्यवर्गीय दर्प आ नायकत्व पर सर्वहारा मूलुंठितक वर्चस्व अछि, ओकर सामाजिक एवं भावनात्मक भूमिका तैयार करऽ तथा साहित्यक आदर्श आ सरोकार केँ बदलऽ मे मणिपद्म जीक अद्वितीय भूमिका छनि। हुनक विपुल साहित्य एकर साक्ष्य प्रस्तुत करैत अछि।

हुनक सक्रियता लेखने धरि सीमित नहि रहनि। मैथिलीक अस्मिताक रक्षा आ ओकर अधिकारक प्राप्तिक लेल लेखनक सङ - सङ आन्दोलनो हुनका आवश्यक बुझयलनि। ओ मिथिलाक गौरवपूर्ण सांस्कृतिक, भाषिक एवं साहित्यिक परम्परा केँ विभिन्न

मंच सँ तथ्ययुक्त, तर्कपूर्ण आ ओजस्वी शैली मे सभक समक्ष राखि मैथिली केँ अनुपेक्षणीय समर्थ भाषा सिद्ध कैलनि, अपन निष्ठा आ भाषा - विवेक सँ मातृभाषाक उत्थानक लेल अपना केँ आजीवन संघर्षोन्मुख राखलनि। विराट व्यक्तित्वक रचनात्मक दृष्टि आ महनीयता ओकर प्रत्येक क्रियाकलाप आ मानवीय व्यवहार मे प्रकट होइत छैक। मणिपद्मक रूप मे मैथिली केँ एकटा आओर विराट व्यक्तित्व भेटलैक — ई ओकर सौभाग्य छैक।

□

रचनाकाल— 5 अगस्त 1995.

संवाद - सेतु श्री सुधांशु शेखर चौधरी

सन साठिक उत्तरार्धक कोनो भिनसर मे छात्रावासक अधिकांश मैथिली छात्रक हाथ मे एकटा नव पत्रिका देखल। नयनाभिराम आवरण पृष्ठ आ माछक पार्श्व पर मिथिलाक्षरमे 'मिथिला मिहिर' लिखल। लगले एकटा अंक हमहुँ कीनि कए लऽ आनलहुँ आ आद्यंत पढ़ि गेलहुँ। छपल सामग्री आ ओकर स्तरीयता सँ ततेक प्रभावित भेलहुँ जे परवर्त्ती प्रत्येक अंकक लेल प्रतीक्षा रहऽ लागल। किछु सप्ताहक बाद अपन एकटा गीत – 'हमर आशा केर गगन पर' ओहि मे छपऽ लेल पठौलियैक। ओ 16 अप्रैल 1961क अंक मे छापल गेल - भाव चित्रक सङ।

हिन्दीक पत्र - पत्रिका मे पहिनहि सँ छपैत छलहुँ। 'मिथिला दर्शन' आदि किछु मैथिलीक पत्र - पत्रिका मे सेहो, दू - चारि टा रचना छपि चुकल छल। 'आर्यावर्त' क रविवासरीय अंक मे प्रायः नियमित रूप सँ लिखैत छलहुँ आ श्री श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकारक स्नेह - भाजन भऽ चुकल छलहुँ।

एक दिन 'आर्यावर्त' सँ घुरैतकाल सीढ़ी पर सँ उतरैत 'मिथिला मिहिर'क तख्ती पर नजरि पड़ल। कक्ष मे प्रवेश करितहि जे व्यक्ति हमरा प्रति साकांक्ष भेलाह, ओ रहथि श्री सुधांशु शेखर चौधरी। हम अपन परिचय देलियनि तऽ हुनक कुतूहलपूर्ण दृष्टि स्वागत दृष्टि मे बदलि गेलनि। ओ आत्मीयतापूर्वक अध्ययन, लेखन आ रुचिक मादे किछु - किछु पूछैत रहलाह। तावत हुनक किछु सहायक कक्ष मे प्रवेश कैलथिन। ओ सभ केँ हमर परिचय दैत जखन हमरा मादे कहऽ लागलथिन तऽ बुझायल जे आर्यावर्तक माध्यम सँ हमरा नाम सँ सभ गोटे पूर्व परिचित रहथि।

शेखर जी सँ ओ हमर पहिल साक्षात्कार छल। पत्र - पत्रिका, विशेष कए 'वैदेही' क माध्यम सँ हुनक नाम सँ हम परिचित छलहुँ, ओ हिन्दी मे पत्रकारिता करैत छथि – संभवतः से हमरा ज्ञात नहि छल।

मिथिला मिहिरक नियमित प्रकाशन, स्तरीयता आ शेखर जीक सम्पर्क हमर मैथिली लेखन मे नियमितता आ गति आनने छल।

कलकत्ता सँ बरौनी जाय तऽ पटना अवश्य जाइत रही आ हमरा लेल पटनाक अर्थ होइत छल – आर्यावर्त आ मिथिला मिहिर।

साल मे कय गोट रचना छपऽ लेल पठौलियनि – शेखरजी तकर हिसाब राखैत रहथि। मासक मास अथवा एकआध साल खाली चलि जाय तऽ हुनक उपराग सुनऽ पड़ैत छल। अपन असमर्थताक लेल क्षमा याचना करैत छलियनि आ भविष्य मे क्रम केँ अटूट रखबाक आश्वासन दए हुनका सँ चाह अथवा पानक दोकान पर सँ विदा लऽ लैत छलहुँ। किन्तु, क्रम छल जे टूटिते रहैत छल आ शेखर जीक उपराग एवं हमर क्षमा - याचनाक चक्र चलैत रहैत छल।

हुनका बूझल छलनि जे हंसराज जी हमर घनिष्ठ मित्र छथि। थोड़बे काल मे ओ आन - आन साहित्यिक मित्र केँ बजा कए हमरा सङ विदा भऽ जयताह। तेँ कुशलादि पूछलाक बादे कोनो - ने - कोनो साहित्यिक प्रसंग उठा दैत छलाह। प्रत्येक भेंट मे हुनक कार्यालये मे छोट - मोट विचार - गोष्ठी सम्पन्न भऽ जाइत छल आ मैथिलीक

समस्त साहित्यिक गतिविधि केर परिचय भेटि जाइत छल।

बरसठि मे 'सीमान्त' छपल तऽ हमरा प्रति हुनक धारणा आ स्वर किछु बदलि गेलनि। मिथिला मिहिर मे ओकर समीक्षा ओ स्वयं लिखलनि आ हमरा मूर्तिभंजक करार देलनि, यद्यपि ओकर अधिकांश कविता-अकविता ओ स्वयं मिथिला मिहिरमे छापने रहथि आ आर्यावर्त अपन विस्तृत समीक्षा मे ओहि सँ एकटा नव काव्य - प्रवृतिक सूत्रपात मानने छल। तत्पश्चात हुनका सँ भेंट भेल तऽ ओ 'सीमान्त'क कोनो चर्चा नहि केलनि।

पछाति 'आखर'क प्रकाशन शुरू भेल। हंसराज जी नव लेखन आन्दोलन सँ सम्बद्ध रहथि किन्तु, अकविताक हमर अवधारणा सँ हुनक पूर्ण सहमति नहि रहनि - यद्यपि हमर आग्रहक रक्षाक लेल अकविता समवेत मे ओ अपन कविता छपौने रहथि। हमरा होमऽ लागल छल जे मिहिर कार्यालयक लेल हम 'फोरेनर' अथवा 'पतिआ' लागल कवि भऽ गेल छी तथापि बेर - बेर जाइ आ हंसराज जीकेँ लऽ कए विदा भऽ जाइत छलहुँ।

एहि मध्य राजकमलक प्रथम पुण्यतिथि पर 'आखर'क 'राजकमल स्मृति अंक' बहार करबाक वृहद योजना बनल। एक गोट साधनहीन पत्र द्वारा एहि महायज्ञक लेल समिधा कोना जुटाओल जाय – एहि मुख्य प्रश्न केँ तत्काल गौण अथवा हमर व्यक्तिगत समस्या मानि, रचना जुटायब आवश्यक बुझना गेल।

हंसराज जी कहलनि– 'हमर रचना अहाँ केँ भेटि जायत मुदा, सम्पादक जी (शेखरजी) सँ लिखयबाक लेल अहाँ केँ स्वयं प्रयास करऽ पड़त।'

हम राजकमल जीक अनुज सुधीरजी सँ भेंट कए पुनः मिहिर कार्यालय अबैत छी आ शेखर जीक समक्ष जाकेँ बैसि जाइत छी। ओ किछु पूछथि ओहि सँ पहिनहि स्मृति अंकक योजना हुनका लऽग राखि दैत छियनि आ राजकमलजी पर संस्मरण लिखऽक लेल निवेदन करैत छियनि। ओ 'हूँ - नञि' किछु नहि बाजैत छथि आ हमरा विस्मय - युक्त दृष्टिञेँ देखऽ लगैत छथि। हम आश्वस्त भऽ जाइत छी जे ओ अवश्य लिखताह।

रस्ता मे एक गोट मित्र आशंका व्यक्त कैलनि जे 'अहाँ कोना मानि लेलहुँ जे ओ 'आखर'क लेल लिखताह ?' हम कहलियनि– 'ओ आखरक लेल भलेँ नहि लिखथि, किन्तु राजकमल पर अवश्य लिखताह, ई बात दोसर थिक जे ओ जे लिखताह ओ आखर मे छपत।'

हमर एहि दृढ़ विश्वासक दू टा कारण छल। पहिल तऽ राजकमल सँ हुनका अगाध स्नेह छलनि – व्यक्तिगत दुर्बलताक स्तर धरि। ओ हुनक समस्त तथाकथित चारित्रिक दौर्बल्य एवं मिथ्यात्व सँ परिचित रहितहुँ, हुनक रचनाकारक प्रतिभा - तेजस्विता - अद्वितीयता पर मुग्ध रहैत रहथि। हुनक समानधर्मा - समवयसी सभ राजकमल केँ मिथिला - मैथिलीक कलंक बूझैत रहथि आ हुनका विरुद्ध घृणाक प्रचार करैत रहथि जे हुनका पसिन्न नहि रहनि। जरदगव (राजकमलक शब्द मे) सभ केँ खौंझाबऽक लेल राजकमल अपन वाणी एवं व्यवहार केँ असामान्य आ घृण्य बना लेबा मे पटु छलाह। अपना विरुद्ध दुष्प्रचार मे हुनका आनन्द आबैत छलनि, बड़ नीक लगैत

छलनि जखन क्यो परोक्ष मे हुनका अबारा कहैत छलनि। शेखरजी सँ परिचयक शुरुआती दिन मे ज्ञात भऽ गेल छल जे ओ राजकमलक सच आ स्वांग दुनू सँ परिचित छथि। प्रसंग कोनो हो, घुरि - फिरि कए चर्चा राजकमल पर केन्द्रित भऽ जाइत छल।

दोसर कारण अपना प्रति हुनक स्नेह आ प्रोत्साहन छल। हमर परम्परा - विरोध आ उग्र आधुनिकता केर ओ परम विरोधी रहथि आ 'आकथूः' एवं 'विद्रोही अहम' कविता केँ परम्परा तथा पुरनको पीढ़ी पर सोझ प्रहार मानि ओकर भर्त्सना कैने रहथि, तथापि आग्रहपूर्वक रचना मङा कए मिहिर मे छापैत रहथि। भऽ सकैत अछि एहि मे मात्र हमरा प्रोत्साहित करबाक भावना रहल होनि अथवा नवका पीढ़ी केँ उपेक्षित छोड़ि देबाक आरोप सँ बचबाक उद्देश्य होनि किन्तु, हम हुनक अनेक आदेशक पालन कऽ चुकल छलियनि। तेँ विश्वास छल, हमर एकटा अनुरोध अवश्य मानताह।

ओ हमर विश्वासक रक्षा कैलनि। 'कैक व्यक्तिक सम्मिश्रण राजकमल' लिखि पठौलनि, जे स्मृति - अंक मे छपल। ओहि अतिसंक्षिप्त भावनापूर्ण लेख मे ओकर लेखक आ राजकमल दुनू केर अनवगुंठित रूप प्रकट भेल छल।

श्री सुधांशु शेखर चौधरी केँ मैथिल परम्परा, संस्कृति आ साहित्यक गहन अध्ययन रहनि। पेशा सँ ओ पत्रकार रहथि एवं प्रवृत्ति सँ सृजन - धर्मी चिन्तक। ई एकटा गौरवशाली संयोग छल जे ओ मिथिला मिहिर सन नियमित साप्ताहिकक सम्पादक छलाह। अद्भुत वाकपटुता एवं विश्लेषण - क्षमताक ओ धनी छलाह। समसामयिक समस्याक प्रति जागरूकता छलनि किन्तु, प्रारम्भ मे ओ हमरा घोर परम्परावादी आ नव लेखनक (हुनका शब्द मे नवतावाद) विरोधी बुझयलाह तथापि मिहिर मे प्रकाशनार्थ अपन रचना पठबैत रहियनि। ई हमर विवशता छल। जखन ओ छपैत छल तऽ होइत छल जे ओ साहित्यिक करुणावश छापल गेल अछि। मैथिली मे पत्र - पत्रिकाक संख्या नगण्य होयबाक कारण महत्त्वहीनो पर सामन्ती कृपा - वृष्टि करबाक निर्देश होइतनि। की ओ नवलेखन अथवा नवतावाद केँ मधुर माहुर चटा कए मारि दिअऽ चाहैत छथि, जाहि सँ हुनक पीढ़ीक वर्चस्व अक्षुण्ण रहनि ?'

पछाति जखन भेँट भेल तऽ पुछलियनि—'नवका पीढ़ी पर ई अहेतुक कृपा कियैक ? ई कतहु प्रोत्साहन - प्रशंसा द्वारा विरोध केँ निष्प्राण कए सामन्ती परम्परावादक मार्ग केँ निष्कंटक बनायब तऽ नहि ?

ओ कहलनि—'ई कृपा नहि, नऽव केँ प्रश्रय देब थिक, ओकरा बुझऽक लेल ओकर अन्तर्प्रक्रिया सँ पाठक एवं अध्येता केँ परिचित करायब थिक, सोन आ पित्तड़ि केर अन्तर स्पष्ट करब थिक, आइ जे नवका पीढ़ी द्वारा मूर्त्तिभंजन भऽ रहल अछि ओकर उद्देश्य मात्र ध्वंस थिक आ कि नव मूर्त्तिक स्थापनो तकरा बेकछाएब थिक।'

हमर प्रतिक्रिया छल— 'अदौ सँ मैथिल समाज सामन्तवादक पूजक रहल अछि। आइ जखन कि सामन्तवादी परम्पराक लोप भऽ गेल छैक, ओ एकटा बौद्धिक सामन्तवाद केँ ओढ़ि लेलक अछि। ओकर निघेंसो ओकरा लेल रत्नवत छैक तखन तऽ नऽवक प्रति कोनो उदारता ओकरा कृपाश्रय मे आनबाक प्रयासे कहल जयतैक ?'

'से बात नहि छैक ? नवका पीढी केँ ई सिद्ध करऽ पड़तैक जे ओकर विद्रोहक

लक्ष्य की थिकैक ? कोन मूल्य, कोन स्थापना, कोन उपलब्धिक लेल ओ सभ पुरान केँ ध्वस्त करऽ चाहैत अछि ? आन्दोलनक दिशा की छैक ? जेँ परम्परा केँ ओ नहि मानैत अछि तऽ पारम्परिक परिवार - समाज मे कियैक रहैत अछि ? परम्पराक बिना ओकर जन्म कोना भेलैक ?'

—'अपने मानवीय विकासक परम्परा एवं काव्य - परम्परा दुनू केँ एक कऽ कए देखि रहल छियैक। कोनो परम्परा विकसित होइत सैकड़ो - हजारो वर्ष मे जातीय संस्कृतिक अभिन्न अंग बनि अपन वैशिष्ट स्थापित कऽ लैत अछि जँ ओकर जड़ि लोक-जीवन पर आधारित रहैत छैक। मिथिलाक समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा आ अनुकृति रूढ़ि, धर्म, आत्मदया एवं अलौकिक चिन्तन पर आधारित काव्य - परम्परा केँ एकके निकष पर नहि परेखल जा सकैत छैक।'

—'हम विद्रोह अथवा अस्वीकारक विरोधी नहि छी जँ ओकर दिशा विकासोन्मुख हो। विद्यापतियो अपना समय केर बड़का विद्रोही छलाह किन्तु, ओ परम्परा अथवा पूर्व स्थापनाक मूलोच्छेदनक प्रयास नहि कैलनि।'

—'सद्यःजात शिशु सँ अपने सम्पूर्ण जीवनक लेखा - जोखा माङि रहल छियैक ? साहित्यक कोनो विधाक लेल 5 / 10 वर्षक अवधि बड़ छोट होइत छैक। नवका पीढ़ी अपन रचनात्मक क्षमता आ काव्य दृष्टिक परिचय रचनाक माध्यम सँ दऽ रहल अछि किन्तु, ओकर उपलब्धि पर विचार करऽक लेल धैर्यपूर्वक थोड़ेक प्रतीक्षा करब आवश्यक। विद्यापति पण्डित समुदाय द्वारा कैल गेल विरोधक परबाहि करितथि तऽ समृद्ध संस्कृत-काव्य परम्परा सँ अपना केँ फराक कए अपन अभिव्यक्ति भाखा मे नहि करितथि। ओ अपन ज्ञान आ पाण्डित्य केँ भावना तथा काव्य विवेक पर आरूढ़ नहि होअए देलनि। जे पण्डित समाज हुनका उपहासक पात्र बूझैत छलनि, ओहो हुनका मान्यता देलकनि। किन्तु, दुर्भाग्यवश हुनको एक परम्परा बनि गेल आ परवर्ती काव्य - बोध प्रकारान्तर सँ बेशी भाग हुनकहि परिक्रमा कऽ रहल अछि। अपवाद - स्वरूप किछु नाम आ कृतित्व भलेँ गना देल जाय।'

—किन्तु, राजकमल केँ तऽ सद्यःजात काव्य - शिशु नहि मानल जा सकैत छनि ओ चर्चा केँ विषय - केन्द्रित करैत छथि।

—'राजकमल जाहि तीव्रताक सङ मैथिलीक काव्य-परम्परा एवं संस्कार पर प्रहार कैलनि ओ सर्वथा अप्रत्याशित तथा अपूर्व छल। एक बेर सभक ध्यान हुनक कथ्य, शिल्प एवं प्रयोग दिस आकृष्ट भेल। ओ पाठक केँ यथार्थक क्रूर पक्ष सँ अवगत करौलनि एवं ओकरा देखबाक लेल नव दृष्टि देलनि। ओ जानैत छलाह जे पुरनका पीढ़ी केँ बुझाबऽ मे जतेक समय आ शक्ति नष्ट हैत तकर अपेक्षा बड़ कम समय मे नवतुरिया वर्ग मे आधुनिकता केँ बूझऽ केर चेतना जगाओल जा सकैछ। ओ एहि वर्गक दिशा - निर्देश कैलनि। जागृति आबि गेल रहैक, अंध परम्परा आ कुसंस्कारक नाग - फांस केँ तोड़ब आरम्भ भऽ गेल छल। राजकमलक लेल एहि तैयार होइत धरती पर विद्रोहक बीज - वपन बेशी सुविधाजनक छलनि। हुनक एहि प्रयास केँ अभूतपूर्व सफलता भेटलनि।'

ओ हमर बात केँ राजकमलक सन्दर्भ सँ मोड़ैत छथि। कहलनि– 'कोनो मान्यता विरोधक सङ जन्म लैत छैक। जँ ओ सशक्त भेल तऽ विरोध विलीन भऽ जाइत छैक। परम्पराक आँकुस भलेँ स्वीकार करय किन्तु, अहाँक छिड़िआएल पीढ़ी तऽ कोनो अनुशासन स्वीकार करऽक लेल तैयार नहि अछि। संयम आ वस्तुस्थितिक ज्ञानक अभाव मे ओ भटकि रहल अछि। दर्पेषणा केँ उपलब्धि तऽ नहि मानल जा सकैछ? ओहि लेल साधना चाही। एहि पीढ़ी मे तकरो अभाव छैक।'

वार्ताक क्रम आओर चलैत रहितय किन्तु, घड़ी पर नजरि पड़ैत, हम हड़बड़ा उठलहुँ। ओ एकरा लक्ष्य कए बात केँ समाप्त करैत कहलनि— 'व्यक्तिगत रूप सँ हम नवलेखनक प्रति आस्थावान छी आ हमरा एकर भविष्यो पर सन्देह नहि अछि। ई साहित्य केँ नव धरातल देलक अछि, एहि मे कोनो सन्देह नहि।'

शेखर जी मे अदभुत नमनीयता छलनि। ओ अपन मान्यता पर दृढ़ रहितहुँ दोसर केर तर्क आ विचार केँ सुनैत रहथि आ ओहि मे जँ हुनका तथ्य बुझयलनि तऽ अपन मान्यता पर पुनर्विचार करऽ मे विलम्ब नहि करैत रहथि। अध्ययन एवं मनन हुनक बड़का गुण छलनि। सम्पादकीय विवशतावश पढ़ब वा ककरो सँ पढ़बा लेब एकटा प्रविधि थिकैक किन्तु, कोनो रचना मे डूबि कए ओकर आस्वादन करब व्यक्तिक आन्तरिक विवशता होइत छैक। ओ गम्भीग्तापूर्वक कोनो रचना केँ पढ़ैत रहथि आ ओकर गुण - दोष एवं प्रवृत्तिक विश्लेषण करैत रहथि। हुनका पीढ़ीक साहित्यकार नव लेखकक रचना पढ़ब प्रतिष्ठाक विरुद्ध बूझैत रहथि किन्तु, विना पढ़नहुँ रचना केँ घृण्य घोषित करऽ मे विलम्ब नहि करैत रहथि। ठीक एकर विपरीत शेखर जी नवतुरिया वर्ग मे रुचि लैत रहथि, ओकर साहित्य केँ पढ़ैत रहथि, ओकरे सभक सङ बेशी समय बितबैत रहथि आ ओकर प्रहार एवं प्रशंसा दुनू केँ समान रूप सँ सहन करैत रहथि। साहित्यिक चर्चा - परिचर्चा, गोष्ठी - सेमिनार सभ मे हुनका देखल जा सकैत छल। सभ केँ ध्यानपूर्वक सुनबाक अवसर भेटैत रहनि, सङहि सभक रिक्तता - सम्पन्नता सँ परिचित होयबाक अवसर सेहो। समय - समय पर आक्रमण आ प्रहार सेहो सहऽ पड़ैत छलनि किन्तु, एहि सभक नकारात्मक प्रतिक्रिया हुनका पर कम होइत छलनि आ विचार - पुनर्विचार - संशोधनक प्रक्रिया अनवरत चलैत रहैत छलनि। इएह कारण छल जे शुरू-शुरू मे नवतावादक विरोध तथा राजकमलक खिधांश करऽ वला शेखर जी अन्ततः ओकर प्रबल समर्थक भऽ गेलाह आ ओकर स्थिति केँ स्पष्ट करऽक लेल एक - पर - एक लेख लिखऽ लगलाह।

हुनक अवदान पत्रकारिता एवं आलोचनाक अतिरिक्त कथा, कविता, एकांकी, नाटक, निबन्ध, समीक्षा, उपन्यास आदि अनेक क्षेत्र मे अनेक नाम (शेफालिका देवी, पराशर, कामरूप आदि) सँ छनि। सभ विधा मे ओ अपन विलक्षण प्रतिभाक परिचय देलनि किन्तु, हमरा दृष्टिञेँ हुनक सभ सँ बड़का अवदान छनि अपना केँ पुरान एवं नऽव पीढ़ीक मध्य एकटा मजगूत संवाद - सेतुक रूप मे ठाढ़ करब।

□

प्रकाशित – आरंभ : मार्च 1995

हुनका जेना देखलियनि

किसुन जी, 'आखर'क संदर्भ आ हुनक पत्र

1967 सँ पूर्व किसुन जी सँ हमर पत्राचार नहि छल। मुदा, एक दोसर सँ रचनाक माध्यम सँ परिचित छलहुँ।

हमरा ओ पहिल पत्र राष्ट्रीय सार्वजनिक मेला, सुपौल दिस सँ जनवरी 1967 मे लिखने छलाह कलकत्ताक पता पर आ अन्तिम पत्र फरवरी 1970 मे, जे हमरा बरौनी मे प्राप्त भेल छल। एहि तीन वर्षक अवधि मे हुनक साक्षात्कार, आत्मीयतापूर्ण पत्र आ अकुण्ठ स्नेह हमर त्रिवर्षीय अस्वस्थताक यंत्रणा - सहनक लेल कतेक शक्ति आ मैथिली मे लेखनक लेल कतेक प्रेरित - प्रोत्साहित कैलक–से हमरा लेल शब्दातीत अछि। अनेक घटना - दुर्घटना केर ओ मात्र साक्षिये नहि, सूत्रधारो छलाह। 'सीमान्त' आ 'आखर'क प्रकाशन मे राजकमल आ किसुन जीक प्रेरणा, सहयोग आ निर्देशन हमरा समान रूपेँ प्राप्त भेल छल। सत्त तऽ ई जे हिन्दीक सङ - सङ मैथिली मे क्रमबद्ध लेखनक लेल येह दुनू व्यक्ति हमरा अग्रसर कैने छलाह।

राजकमल संस्कारतः क्रान्तिकारी आ आधुनिक छलाह। आधुनिकता बोध हुनक चिन्तन - प्रक्रिया मे छलनि। आचरण भलेँ असाधारण आ कखनहुँ असामाजिक भऽ जाइत छलनि मुदा, हुनक जीवन आ विचार मे कतहु आडम्बर अथवा आरोपित विडम्बना नहि छलनि। जीवन आ साहित्य मे ओ शत - प्रतिशत आधुनिक छलाह तथा आजुक जीवन - विपर्यय एवं क्रूरता केर निर्भीक वक्तो।

किसुन जी सहज मानवीयता केर महान उदगाता छलाह। हुनक आडम्बरशून्य निश्छल जीवन आ व्यवहार सभ केँ आकृष्ट करैत छलैक — खाहे ओ कोनो अत्याधुनिक नवतुरिया साहित्यकार हो अथवा चानन - चद्दरि - पागधारी कोनो कर्मकाण्डी पण्डित। ओ एक सङ परम्परा-प्रेमी आ आधुनिकता केर पक्षधर छलाह। परम्परा आ आधुनिकता केर एक गोट संगम, दुनू केर बीच एक गोट जीवन्त सन्तुलन। हुनक दस वर्ष पूर्वक रचना सभ मे परम्पराक प्रति अगाध मोह तथा संस्कार - संवेदित भावुकता केर दर्शन होइत अछि, जे हुनका साहित्यक यजमनिका मे व्यस्त पण्डित सभक प्रिय - पात्र आ मित्र बनौने छलनि, तँ दोसर दिस जीवनक अन्तिम दशक मे ओ उग्र आधुनिकतावादी तथा सड़ल परम्परा एवं कुसंस्कारक विरोधी बनि गेल छलाह। पण्डित लोकनि (एहिठाम पण्डालोकनि कहब उचित हैत) पर कुठाराघात भेलनि। हुनक पूर्ववर्त्ती मित्रवर्ग केँ आश्चर्यक ठेकान नहि। किसुन जी सन गम्भीर साहित्यिक आ विनीत विद्वान आधुनिकता केर बिड़रो मे कतय भसिया गेलाह ! जेना कोनो कुलवधू केर अवैध गर्भपातक पता गामक कुटनी माउगि सभ केँ लागि गेल हो। सभतरि दुर - दुर, छिः - छिः ! मुदा, किसुन जी केँ जड़ परिवेश सँ समस्त अवैध सम्बन्ध तोड़बाक छलनि, तोड़ि लेलनि। ओ भारतीय आ पाश्चात्य साहित्यक समुद्रमे डुबकी मारि आधुनिक बोध केर रत्न बहार कऽ चुकल छलाह, पोखरिक काश - सेमार मे ओझड़ाएल रहब कोना नीक लगितनि ?

हुनक पहिल पत्र सँ हमरा बड़ आश्चर्य भेल छल। मैथिली मे नवकविता पर सेमिनार, आ सेहो सुपौल मे। मुदा, किसुन जी सन कर्मठ आ दृढ संकल्पक व्यक्तिक लेल किछुओ असंभव नहि छल। आब तँ रामानुग्रह झाक सत्प्रयासेँ प्रकाशित 'मैथिलीक नवकविता' किसुन जीक नवकविता सम्बन्धी दृष्टिकोण केँ स्पष्ट कए चुकल अछि।

सुपौलक नवकविता सेमिनारक पूर्व ओ पुरनका पीढ़ी सँ असम्पृक्त नहि भेल छलाह। नवीन बोध केँ स्वीकार कऽ चुकल छलाह आ सस्त लोकप्रियताक लेल साहित्य केँ सीढ़ीक रूप मे प्रयोग कयनिहार व्यक्ति सभक नियति सँ ओ परिचित भऽ चुकल छलाह, तथापि पूर्ण रूप सँ मोह - भंग नहि भेल छलनि।

किसुन जी मैथिली नवलेखनक मार्ग प्रशस्त करए चाहैत छलाह, नवतुरिया वर्गक रचनात्मक क्षमता आ वैचारिक नवीनता, शिल्पगत नवीन प्रयोग आ निर्भीक अभिव्यक्ति सँ मैथिली केँ सम्पन्न देखए चाहैत छलाह। एहि सभक लेल एक गोट स्वस्थ मंचक प्रयोजनीयता पर एक्के सङ्ग राजकमल, जीवकान्त, रेणु जोर देलनि। 'आखर'क योजना तेँ सफल भऽ सकल। 'राजकमल स्मृति अंक' बहार करए मे सोमदेव जी द्वारा पठाओल सुझाव तथा किसुन जीक अथक प्रयास सँ राजकमलक परिवारिक जीवन पर लिखल लेख सँ बड़ मदति भेटल छल।

'आखर'क नियमित प्रकाशनक लेल किसुन जी बड़ उद्योगशील छलाह। मुदा, 'राजकमल स्मृति अंक' बहार कैलाक बाद जे 1968 सँ हमर अस्वस्थता आरम्भ भेल तकर क्रम 1970 क अंत धरि चलैत रहल। एहि बीच 'आखर' बन्द भऽ गेल, किसुन जी विदा भऽ गेलाह आ मैथिली मे जे नवीन विद्रोही स्वर, स्वस्थ साहित्यक सर्जनाक मार्ग केँ प्रशस्त करऽक लेल संघर्षरत छल, प्रकाशन तथा संघटनक अभाव मे घबरा केँ अपन सुविधा आ विज्ञापनक लेल समझौतापरस्त भऽ गेल।

किछु व्यक्तिगत पत्र उद्धृत कऽ रहल छी, जाहि मे हुनक व्यवहार, विचार, कर्मठता तथा 'आखर'क लेल उद्योगशीलता स्पष्ट होइत अछि।

प्रियवर, सुपौल 10.3.67

अहाँक 7 - 3 क पत्र काल्हि भेटल। सुपौल सँ गेलाक बाद जे एको टा पत्र नहि आयेल छल से चिन्तित छलहुँ।

संकलनक काज चलि रहल अछि। निबन्ध सभक प्रतीक्षा अछि। सुपौल मे जे निबन्ध सब प्राप्त भेल छल, तकरा बाद सँ कोनो नहि आयेल अछि। कविता - संकलन लेल सर्वश्री जीवकान्त, श्रीकान्त, गंगेश गुंजन, रेणु जी अपन दस गोट कविता, अधुनातन पासपोर्ट साइज फोटो, वक्तव्य आ परिचय पठौलनि अछि। अहाँक उक्त वस्तु सभक प्रतीक्षा अछि।

अहाँक
किसुन

प्रियवर, सुपौल, 22.11.67

कार्ड (14.11.67 क) भेटल। 10 प्रति 'आखर' सेहो। धन्यवाद। जेना उत्साह आ लगन सँ काज भऽ रहल अछि, आखर अवश्ये नवलेखनक प्रतिमान सिद्ध होयत। शर्त्त जे उद्देश्य मे अवान्तर भेद नहि हो। रचना लेल आग्रह करबनि। अपन कथा यथाशीघ्र पठा देब। संकलन सुपौल मे छपत। कवर आनठाम छपायब।

स्नेहाधीन
किसुन

प्रियवर,

'आखर'क पाँचम अंक भेटल। सामग्री सब नीक। केवल प्रूफ पर कने ध्यान राखी से आवश्यक। 'आखर'क लोकप्रियता बढ़ि रहल अछि। वार्षिक ग्राहक बनयबाक उद्योग मे छी।

श्री मायानन्द केँ पुनि पत्र देलियनि अछि कि ने ?

हम अप्रैल धरिक हेतु क्षमा चाहैत छी। तकरा बाद लिखब।

राजकमल अंक लेल श्री सोमदेव जी सँ पटना मे गप्प भेल छल। कार्यारम्भ अछि कि ने ? रचना संग्रह भऽ रहल अछि ?

सुपौलक चर्चा लेल एहिठामक सब क्यो बड़ आयल प्रकट कऽ रहल छथि।

अहाँक
किसुन

प्रियवर, सुपौल, 23.4.68

पत्र आ आखर भेटल। अहाँक अस्वास्थ्यक चिन्ता अछि। स्वास्थ्य पर ध्यान राखी। अहाँक स्वास्थ्य केवल अहीँक नहि, मैथिलीक आ हमरा सभक स्वास्थ्य थिक।

राजकमल - स्मृति - अंकक हेतु हमहुँ आवश्यक पत्राचार आइ सँ आरम्भ कऽ देल अछि। प्रायः सब केँ अहूँ पत्र देनऽ हेबनि।

'आखर'क टाकाक की स्थिति छैक— से बूझल नहि अछि ! रचनाक अभाव नहि होमक चाही—से विश्वास अछि।

10 मइ धरि जे रचना मङलियैक अछि से बड़ कम समय भेलैक तथापि प्रयत्न कऽ रहल छी।

किसुन

प्रियवर, सुपौल, 16.5.68

पत्र भेटल। पटना आबि सकी तकर प्रयत्न मे छी। छुट्टी पर निर्भर करैछ प्रोग्राम। श्री जीवकान्त जी रचना सब पठा देलनि से लिखने

छलाह। डा. बालगोविन्द झा के' कहने रहियनि। ओ रचना कलकत्ता पठा देलनि अछि। श्री रामानुग्रह के' रचनाक सेहो तगेदा कयने छियनि। श्री धीरेन्द्र जी के' जनकपुर पत्र देलियनि अछि। महिषी जयबाक अछि। हमर सर्वविध सेवा उपलब्ध हो, तकर समग्र चेष्टा मे छी।

स्वास्थ्य नीक नहि रहैत अछि। दरभंगाक प्रतिक्रिया बूझि हर्ष भेल अछि।

अहाँक
किसुन

प्रियवर, राँची, 12.6.68

अहाँक 29 मइ '68 वला कार्ड हमरा सुपौलहि मे भेटल छल। मुदा अत्यधिक अस्वस्थ रहक कारणे' तत्काल उत्तर नहि दऽ सकलहुँ। एम्हर फरवरिये सँ हमर स्वास्थ्य ह्रासोन्मुख भेल जा रहल अछि। मइक अन्तिम सप्ताह धरि बेशी अस्वस्थ भऽ गेलहुँ। तखन 7 जूनके' सुपौल सँ एतय चलि आयल छी। एहिठाम जमायक डेरा मे ठहरल छी। मेडिकल काँलेजक ख्यातनामा डाक्टर के. के. सिन्हाक चिकित्सा चलि रहल अछि। बीच मे मरणासन्न भऽ गेल छलहुँ। मरय नहि चाहैत छी से आब क्रमश: नीके भेल जाइत अछि।
अस्वस्थताक कारणे' किछु नहि लिखि - पढ़ि सकल छी, से बूझाइत अछि जे एतेकरास जिनगी हेरा गेल अछि।

अहाँक
किसुन

प्रियवर, काँके, 26.6.68

कतय राजकमल - स्मृति अंक लेल सम्पादन, संकलन आ आरो-आरो अनेक आयोजनक योजना बनौने छलहुँ आ कतय अपनहुँ रचना एतेक विलम्ब सँ पठा रहल छी। शरीर-दौर्बल्य सब तरहेँ निरस्त कऽ देलक।

इहो रचना रोग - शय्ये सँ अनेक दिनक प्रयासे' लिखने छी—थोड़ेक-थोड़ेक कऽ के'। तहिना जे चाहैत छलहुँ से नहि लिखि सकलहुँ। विचार आ योजना किछु छल आ भऽ सकल किछु।

तैयो हमरा जनैत स्मृति अंक के' ई बेशी दूरि नहि करत से विश्वास अछि। आ कि नहि !

रचनाक प्रसंग हमर एकेटा हार्दिक अनुरोध जे एकरा बिनु काट-छाँटक अक्षुण्ण प्रकाशित कऽ देबैक। कारण जे एहि मे बहुत रास एहन सूत्र सब अछि - जे हमरहुँ आ अहूँ के', मने आखर के'— मैथिलीक आन्दोलन के', कहियो काज देतैक। 24.6 के' तार पठबौने छलहुँ। अहाँ अपन

स्वास्थ्यक हालति लिखब।

अहाँक
किसुन

प्रियवर, काँके, 27.6.68

राजकमल - स्मृति अंक लेल काल्हिये निबन्धित डाक सँ अपन निबन्ध आ चिरंजीवी ओझा जीक कविता पठौने छी।

आइ श्री शैलेश कुमार पाठकक एकटा रचना 'राजकमल चौधरीक अन्तिम साहित्यिक मंच' पठा रहल छी। एहि मे सुपौल सेमिनारक सम्पूर्ण विवरण, राजकमलक योजना सब आ राजकमलक असामान्य चरित्रक एकटा घटना (जकर साक्षी आ भोक्ता एकटा अहूँ छी) सभक उल्लेख अछि। हमरा विचारे' ई स्मृति अंक मे अवश्य छपक चाही।

अहाँक
किसुन

प्रिय बन्धु, सुपौल, 2.7.68

काल्हिये राँची सँ अयलहुँ। आब पूर्वापेक्षया स्वस्थ भेल जाइत छी। एहिठाम अयला पर पता लागल जे प्राय: अहाँ सुपौल आयल छलहुँ आ सङ मे आरो क्यो रहथि। की बात थिकैक, कृपया सूचित कए जिज्ञासा निवृत्त करी।
राजकमल चौधरीक प्रसंग किछु बेशी प्रामाणिक जानकारीक प्रयत्न हुनका परिवार सँ कयने रही, मुदा हमरा से उपलब्ध नहि भऽ सकल छल। गाम अयला पर प्राप्त भेल अछि। तेँ से लिखि के' पठा रहल छी। जँ हमर वला निबन्ध मे एखन गुंजाइश भऽ सकय तँ तकर उपयोग कऽ लेब। ई भेने बड़ प्रामाणिक विवरण एहि मे आबि जायत।

पत्र देब। देब कि ने ? अपन स्वास्थ्य केहन अछि ?

अहाँक
किसुन

प्रियवर, सुपौल, 2.8 68

अहाँक 27.7 क कार्ड भेटल। 'आखर'क चिन्त्य आर्थिक स्थिति सँ दुख भेल। वस्तुतः एकर उपाय करहि पड़त। एहि प्रसंग पूर्व पत्र मे हम एकटा योजना लिखने छलहुँ।

विशेषांक सनगर बहरायल अछि। पुनि दोसर खेप।

अहाँक
किसुन

प्रियवर, सुपौल, 29.11.68

पाँच टा कविताक सङ अहाँक चिन्ताप्रद पत्र भेटल । अहाँक अस्वास्थ्य बड़ चिन्तित कऽ देलक । ओना हमहुँ, आइ चारि - पाँच मास सँ अस्वस्थ रहैत छी । अतीव दुबरा गेलहुँ अछि । बन्धुवर राजकमलक बाद आब जँ कोनो साहित्यकार बन्धुक अस्वास्थ्य - संवाद पबैत छी तँ मन बड़ घबड़ा उठैत अछि । स्वास्थ्य पर बेशी ध्यान राखू । बीच मे मधुबनी गेल छलहुँ । श्री जीवकान्त जी सँ गप्प भेल । वीरेन्द्र जीक प्रसंग हुनका सँ ज्ञात भेल छल । एम्हर सुपौल सँ एकटा कथा त्रैमासिक बहार कऽ रहल छी । जनवरी मे प्रवेशांक भेटय, से नेआरने छी । सहयोग मङैत छी ।

अपन कविता - कथा पठा देब । बिसरि गेल छलहुँ । पाँच टाक अतिरिक्त शेष कविता शीघ्र पठाबी । संकलन ठीके अहाँ लऽग आबि कें अटकल अछि । श्री जीवकान्त जी 15-16 दिसम्बर कें कलकत्ता जयताह ।

किसुन

प्रियवर, सुपौल, 6.2.70

आइ बहुत दिन पर अहाँक पत्र पाबि भाव - विभोर भऽ उठलहुँ ।

एम्हर श्री जीवकान्त जीक पत्र सँ अहाँक सम्बन्ध मे यदा - कदा समाचार भेटैत छल, जाहि सँ दुख एवं औत्सुक्य बढ़ैत रहैत छल ।

हमहुँ मरणासन्ने छलहुँ । अस्पताल मे भरती छलहुँ । ऑपरेशन सँ पूर्व आत्महत्याक प्रयास मे पकड़ल गेलहुँ आ अतीव दुर्बल रहक कारणें ऑपरेशन नहि भेल ।

एखन होमियोपैथी चलि रहल अछि । सुधरि रहल अछि ।

श्री हंसराज हमरे सङ भरती छलाह । आब पटना छथि । सुधरल ।

पत्र सँ सब ज्ञात कऽ दुखी छी । मुदा आब नीके भऽ रहल छी, से जानि सन्तोष अछि । हमर शुभकामना ।

स्नेहाधीन
किसुन

प्रियवर, सुपौल, 28.2.70

15.2 क कार्ड पहिनहि भेटल छल, मुदा उत्तर एहि सँ पूर्व नहि दऽ सकलहुँ ।

हमर स्वास्थ्य ठीके अछि । अहाँ सँ भेंट करऽक बड़ उत्कण्ठा भऽ रहल अछि । यदि पटना दिसुक यात्रा भेल तँ बरौनी उतरि अवश्य भेंट करब । हमरा राँची प्रवास (रोग क्रम मे) आर्थिक दृष्टियें तेना थकुचि देलक अछि, जे होश नहि भऽ सकल अछि । अपन कुशलादि लिखैत रही ।

शुभैषी
किसुन

एकर बाद ने कोनो पत्र, ने साक्षात्कार । एहि सँ पूर्व आओर बहुत रास पत्र आयल छल, जकर उद्धरण अनावश्यक बुझना गेल । सोमदेव जी बरौनी आबि कहलनि जे हमरा सङ किसुन जी, गंगेश गुंजन, जीवकान्त आदि सेहो आबऽ बला छलाह मुदा, हुनका सभक कार्यक्रम बदलि गेलनि । 15 जून 1970 । सोमदेव जी, जीवकान्त, श्री रामानुग्रह झा आदिक एक्के सङ पत्र - टेलिग्राम— 'किसुन जी हमरा सभ कें छोड़ि विदा भऽ गेलाह ।' 19 जून राजकमल चौधरीक पुण्य-दिवस । 15 जून कें किसुन जी द्वारा महाप्रयाण । एकरा की कहल जाय ? अनुजक असहनीय मृत्यु-शोक मे अग्रज द्वारा मृत्यु-वरण !

□

प्रकाशित— वैदेही : फरवरी 1973

किसुन जी, आगि, सुमन – मधुप – अमरक भनसाघरक चूल्हि आओर...

सरल, सोझ आ निश्छल व्यक्ति सँ बड़ सहजता सँ सम्पर्क स्थापित कैल जा सकैछ अथवा भऽ जाइत छैक । ताहू मे जँ ओ व्यक्ति ग्रामीण परिवेश आ संस्कारक हो, सहृदय आ विद्वान हो, छल - छद्म सँ दूर आ मानवीय सम्बन्ध कें सर्वोपरि बुझऽ बला हो, स्नेह श्रद्धा आ आत्मीयता मे डूबल रहैत हो, तखन तँ ओकरा संग मात्र सम्पर्क नहि स्थापित कैल जा सकैछ, अपितु स्वार्थो साधल जा सकैछ, थोड़ बहुत मान - सम्मान दऽ ओकरा सँ सेवा - टहल सेहो कराओल जा सकैछ । कहबाक अभिप्राय जे नागरिक कुटिलता आ ग्रामीण वंचकताक हाथ मे ओकर सरलता कें औजार जकाँ व्यवहृत होइत देखल जा सकैछ ।

किसुन जीक मादे सोचऽ काल ई बात कियैक हमरा मोन मे आयल ? की हुनक विद्वता, कवि - हृदयता आ आन्तरिक निश्छलता हुनका बुड़बकीक सिमान पर ठाढ़ कऽ देने छलनि, जतय सँ हुनका केओ केम्हरो पटा - फुसला कें लऽ जा सकैत छल, केहनो काज करबा सकैत छल आ काज निकालि लेलाक बाद 'डिस्पोजेबल पेकिंग' जकाँ हवा मे उड़ऽ लेल छोड़ि दऽ सकैत छल ?

संभवतः हमर एहि विचारक उत्स किसुन जीक किछु समकालीन आ प्रायः समवयसी पंडित - सह - साहित्यकार द्वारा व्यक्त एवं प्रचारित एहि धारणा मे अछि जे— 'किसुन जी भसिया गेलाह । काव्य ककहरो केर अवगति नहि राखऽ बला नवतुरिया आ नवसिखुआ कवि सभक अगुआ बनऽक लेल, काव्य - परम्परा मे स्थापित - स्वीकृत भऽ गेलाक बादो अपना कें अग्रणी कहयबाक लेल ओ आधुनिकता, नवकविता, अकविता आदिक नाम पर दिग्भ्रमित आ मूर्त्तिभंजक कवि सभक संग दऽ रहल छथि, ओ पथभ्रष्ट भऽ गेलाह ।'

हमरा जनैत किसुन जी ने बुड़िबक जकाँ सोझ छलाह, जकरा प्रलोभित - प्रभावित कए लोक कोनो काज करबा सकैत छल, आ ने भसिया कें मैथिलीक नवीन काव्य - धारा

मे सम्मिलित भेल रहथि। हुनक व्यक्तित्वक निश्छलता - सरलता - सहजता, आत्मानु-शीलन एवं सामाजिक - साहित्यिक अध्ययन सँ प्रतिफलित जीवनक सहज व्यवहार अथवा व्यवहार बनि गेल छलनि। इएह गुण कोनो व्यक्ति केँ वास्तविक अर्थ मे महान बनबैत छैक। ई गुण प्रतिकूल परिस्थिति, अभाव, रोग आ नानाविध कष्टक मध्यो मृत्युपर्यन्त हुनक संग नहि छोड़लकनि।

सभक लेल सहज - सुलभ रहितो कतेक व्यक्ति द्वारा ओ बुझल गेलाह ? खाहे हुनक गाम - घर हो अथवा मैथिली साहित्यक समाज— कतेक व्यक्ति हुनका चीन्हि सकलनि ?

जतय धरि मैथिलीक नवीन काव्य - धारा मे भसिया केँ हुनक सम्मिलित होयबाक प्रश्न अछि — ई बात बड़ हास्यास्पद लगैत अछि।

संस्कार, परम्परा, अध्ययन आ अध्यापन सँ हुनका संस्कृत - साहित्यक विशाल भण्डार प्राप्त भेल रहनि। देश - विदेशक विभिन्न भाषा - साहित्यक अध्ययन-अनुशीलन ओ करैत रहैत छलाह। हुनका मे सर्जनात्मक प्रतिभा छलनि आ विश्लेषणक अदभुत क्षमता। मैथिल समाज मे ओतेक आदर - सम्मान पाबि अपन समानधर्मा सभ जकाँ आत्मतुष्ट अथवा आत्ममुग्ध रहि सौखिया लेखन करैत रहि सकैत छलाह आ कवि - सम्मेलन केँ 'पार्ट - टाइम' केरियर बना अपना केँ 'ग्लेमेराइज्ड' कऽ लोकप्रियता आ वाहवाही लूटैत आजीवन प्रसन्न रहि सकैत छलाह। किन्तु, से हुनका स्वीकार नहि छलनि।

समवर्त्ती सँ बेशी हुनका पूर्ववर्त्ती आ परवर्त्ती आकृष्ट करैत छलथिन। पूर्ववर्त्ती यात्री जी अपन समकालीन कवि सभ केँ संस्कृत साहित्यक पीठिका पर पद्मासन लगा हिन्दी आ बंगला साहित्य सँ प्राण - वायु लैत, पारम्परिक साहित्य - सर्जन करऽ लेल छोड़ि, सर्जनाक नव मार्गक अन्वेषण कैने छलाह। क्षेत्रीय गंध सँ अनुप्राणित रहितहुँ, हुनका राष्ट्रीय - अन्तर्राष्ट्रीय मुक्तिकामी जन - आन्दोलन आओर व्यवस्था सँ लड़ैत एवं शोषणक देबाल केँ तोड़ैत श्रमजीवी आ सामान्य लोक बेशी प्रभावित करैत छलनि। शुरू - शुरू मे पण्डित - समाज द्वारा उपहासक पात्र बनि गेलाक बादो यात्री जी चित्राक प्रकाशनक उपरान्त मैथिली साहित्यक लेल आधुनिकताक विशाल स्तम्भ बनि गेलाह।

तहिना किसुन जी केँ परवर्त्ती राजकमल प्रभावित - आकृष्ट कैलथिन। मैथिल समाज आ साहित्य द्वारा निन्दा - कुचर्चाक पात्र बनल रहितहुँ वैचारिक क्रान्ति, देह - दर्शन, निम्न - भूख - नारीक परिक्रमा करैत फोंक आदर्शक नग्न चित्रण करैत राजकमल नवतुरिया वर्गक 'मसीहा' बनि गेल छलाह।

यात्री जी एवं राजकमलक माँझ छुटि गेल रिक्तता केँ भरबाक लेल किसुन जी संवेदनात्मक सेतु बनाबऽ मे लागि गेलाह।

डॉ. भीमनाथ झाक शब्द मे, 'यात्री अपन चूल्हि आदियें सँ फराक कऽ लेलनि आ राजकमल - ललित अपन चूल्हि दोसर घर (अंग्रेजी) मे गाड़ि लेलनि किन्तु, किसुनक चूल्हि छलनि गाड़ल मधुप - सुमन - अमरक भनसाघर मे। यात्री - राजकमल जकाँ अपन कौलिक घर मे किसुन केँ गारि नहि सुनऽ पड़लनि, गरदनियाँ नहि भेटलनि अपितु

अन्त धरि स्नेह आ आदर भेटैत रहलनि। तेँ प्रायः नवका घर, मैथिलीक नव कविता मे, हिनक स्वागत तँ भेलनि मुदा यात्री - राजकमल जकाँ कान्ह पर उठा कऽ हिनक जय - जयकार नहि कैल गेलनि, हिनक हाथ मे झण्डा तँ देल गेलनि मुदा हिनका झण्डा नहि बूझल गेलनि।'

अस्वस्थ परम्पराक विरोध आ नव यथार्थ केँ स्वीकार कऽ नवीन मान - मूल्यक स्थापनाक लेल सदति झण्डा उठायब, झण्डा बनब आ झण्डा गाड़ब आवश्यक नहि होइत छैक। ई काज व्यक्तिगतो स्तर पर अनुभव केँ विस्तार दऽ आ अपन सर्जनात्मक प्रतिभा केँ युगानुकूल मोड़ दऽ कैल जा सकैछ।

किसुन जीक समक्ष बड़का 'चैलेंज' छलनि। यात्री जी आ राजकमल जाहि पारम्परिक काव्य - चिनुआर सँ फराक भऽ अपन सर्जनात्मक व्यंजन दोसर चूल्हि पर बनाबऽ लगलाह, किसुन जी ओहि चिनुआर पर बैसि नानाप्रकारक देशी - विदेशी, नवीन आ स्वास्थ्यप्रद मानसिक खाद्य बनाबऽ मे लागि गेलाह आ ओकर आधुनिकता बोधक 'न्युट्रिशन सँ युक्त करऽ लगलाह।

संस्कृतक विशाल आ विश्वव्यापी काव्य - परम्परा पर मुग्ध आ ओकर वैभव आ क्षमता सँ आह्लादित - आतंकित पण्डित - समुदाय केँ वाल्मीकि, व्यास, दण्डी, भारवि, भास, शूद्रक, माघ, कालिदासक समक्ष विद्यापति झूस लगैत छलथिन। ओहि वर्ग केँ हुनक 'कोमलकान्त पदावली' नहि, हुनक पाण्डित्यपूर्ण संस्कृत रचना प्रभावित करैत छलनि। तथापि अपन रचनाक बल पर हुनका लोकप्रियता आ लोक - स्वीकृति भेटलनि आ अन्ततः ओ पण्डितो समाज द्वारा स्वीकार कैल गेलाह।

किसुन जीक समक्ष दू टा विकल्प छलनि। सुमन - मधुप बला परम्परागत शैली मे संस्कृत - साहित्यक भावधारा मे बहैत तथाकथित उत्कृष्ट आ शाश्वत काव्य - सृजन मे लागल रहब अथवा यात्री - राजकमल जकाँ नव यथार्थ केँ स्वीकार कऽ आधुनिक भाव बोध केँ नवीन शैली मे अभिव्यक्त करब।

पूर्व संस्कार आ परम्परागत रूढ़ि केँ तोड़ब बड़ कठिन काज होइत छैक, तहिना कठिन होइत छैक आधुनिकताक नाम पर पसरैत अतिवाद केँ स्वीकार करब। किसुन जी व्यक्तिगत चेतना, अनुभव, आत्ममंथनक आधार पर अपन साहित्यिक दायित्व केँ बूझैत मध्यम मार्ग अपनौलनि।

भीमनाथ जी जकरा सुमन - मधुप - अमरक चूल्हि कहैत छथि, मिथिला मे चूल्हि आ भनसाघरक बड़ व्यापक रूढ़िवादी अर्थ छैक। ओ किसुन जीक लेल मात्र 'आगि' रहि गेलनि। पजरैत आगि पर खिच्चड़ि बनाओल जाय आ कि 'पोलाव', रोटी आ कि 'नन, साग आ कि 'करी'— सभ भनसिया पर निर्भर करैत छैक। आगि व्यक्ति-व्यक्ति अथवा वस्तु - वस्तु मे भेद नहि करैत छैक। ओकर उपयोग भानस बनाबऽ धरि सीमित राखल जाय आ कि ओहि सँ ऊर्जा सेहो प्राप्त कैल जाय, ओकरा ऊकधरि सीमित राखल जाय आ कि समिधा सेहो बना देल जाय — ई उपयोग करऽवला पर निर्भर करैछ।

आगिक धर्म मात्र ताप छैक। ओकर संयोग सँ निर्माण आ नाश दुनू होइत छैक। की हो, ई प्रयोगकर्त्ता निश्चित करैत अछि।

निष्क्रिय समाज मे आगि छाउर तर मे तोपल रहि जाइत छैक आ लोक अनन्तकाल धरि यथास्थिति केँ स्वाभाविक अवस्था बुझैत ठिठुरैत रहि जाइत अछि ।

आगि स्वयं उत्पन्न कैल जा सकैछ आ दोसर ठाम सँ माँगि, आनि कतहु तेसर ठाम पजारल जा सकैछ । मिथिला मे माँगि केँ पजारऽ वला रेबाज बेशी छैक ।

यात्री जी आ राजकमल अपन ऊर्जाक लेल आगि स्वयं उत्पन्न कैलनि किन्तु, किसुन जी सुमन - मधुपक भनसाघर सँ लऽ आनलनि ।

एतय मुख्य प्रश्न ई अछि जे किसुन जी ओहि आगिक उपयोग कोना कयलनि, कतेक दूर धरि पूर्वाग्रह आ परम्पराक व्यामोह सँ दूर रहि ओहि सँ युग - धर्मक निर्वाह कैलनि ? ओ मैथिलीक नव कविताक भूमिका मे लिखैत छथि— 'ककरा पलखति छैक एहि उद्दाम प्रवाह (आजुक जीवनक अवकाश विहीन दौड़ा - दौड़ी) सँ किछुओ क्षणक हेतु अपना केँ फराक राखि एहि अयथार्थ गप्प (अतीतक भ्रामक आ बाँझ गौरव अथवा सामंती शोभा वा पारम्परिक काव्य रचना) सँ झूमि उठय ? सोझाँ मे पसरल छैक जिनगी आ जिनगीक नीक - अधलाह चित्र, चित्र सभक अनेक दृष्टिकोण— तकरा सह-बाक आ भोगबाक यथार्थता केँ अनठा - फुसिया कऽ पुरना परम्पराक प्राचीन कविलोकनिक भावुकता जर्जर - सड़ल लहास केँ पँजिऔने रहब — कोना संभव छेक आजुक कवि सभक हेतु ? तेँ मैथिलीक नव कविता केँ, नव कवि केँ अपन कवि - काव्यक परम्परा सँ कटबाक आ परम्परा केँ काटबाक प्रश्ने निरर्थक थिक····। मैथिलीक नव - कविता एहि दृष्टि भ्रमोत्पादक कुहेस केँ फाड़ि कऽ, मिथ्या अवधारणा केँ, हटा कऽ वास्तविकताक दर्शन करबैत अछि ···। ओकर (नवकविताक) मापदण्ड आ मानदण्ड नितान्त परिवर्तनशील आ अस्थिर छैक, तेँ परम्पराक पोखरिक हरियरका - सड़लाहा पानि केँ अवगाहन योग्य नहि बूझि कऽ, ओकरा बहा देबऽ चाहैत अछि आ नवका पानि ओहि मे खसबऽ चाहैत अछि, जाहि सँ ओ स्वच्छ आ टटका बनल रहैक, से खाहे ओहि सड़लाहा पानिक संग किछु पोसल - पालित रोहु - भुन्नो कियैक नहि बहरा जाउ !'

अपना समयक साक्षात्कार आ साक्ष्य प्रस्तुत करऽ मे आ युगधर्मक निर्वाह करऽ मे किसुन जी अपना पीढ़ी मे सभसँ आगाँ छलाह । ओ सभसँ बड़का विद्रोही आ क्रान्तिदर्शी सिद्ध भेलाह । परम्पराक विरोध ओ नवका पीढ़ीक अगुआ बनबाक लेल नहि, आन्तरिक विवशतावश कैने रहथि । परम्पराक गतानुगतिकता, पिष्टप्रेषण - पद्धति, कुण्ठाकीर्ण विचारधारा आदिक एहन घटाटोप छलैक जे ओहि मे नवका पीढ़ी दिग्भ्रमित भऽ सकैत छल । किसुन जी केँ साहित्यक गहन अध्ययन छलनि एवं मैथिल मनोभूमि तथा परम्परा केर पर्याप्त ज्ञान । अपन अनुभव, चिन्तन आ अध्ययन सँ ओ एहि निष्कर्ष पर पहुँचलाह जे 'अयथार्थ गप्प'क आनन्दक लेल उद्दाम प्रवाह ने रूकि सकैत अछि आ ने ओकरा रोकल जा सकैछ (द्रष्टव्य उपर्युक्त उद्धरण) । ओ स्पष्ट शब्द मे अपन पूर्ववर्त्ती आ तत्कालीन पारम्परिक लेखन केँ 'दृष्टि भ्रमोत्पादक कुहेस' कहैत छथि आ नव कविता केँ ओकरा फाड़ि वास्तविकताक दर्शन कराबऽ वला प्रयास । ई दुस्साहस करऽ वला हुनका पीढ़ी मे कतेक रचनाकार रहथि ?

ई दुस्साहस आ बोध हुनका आत्म-मंथन आ आत्म - संघर्ष सँ प्राप्त भेल छलनि ।

बड़ कठिन छैक पूर्वार्जित ज्ञान, बुद्धि - सम्पदा आ अनुभव सभ केँ अस्वीकार कऽ देब, सभ केँ एकहि धक्का मे अपना सँ दूर भगा देब आ बीच चौबटिया पर दिगम्बर भऽ जायब । किसुन जी सन ताहि समय केर स्थापित - सम्मानित कविक लेल आओर कठिन ।

किसुन जीक मनोभूमि प्रारम्भहि सँ भिन्न छलनि । ओ पारम्परिक लेखनक स्थान पर नव लेखन केँ प्रतिष्ठित करऽ चाहैत छलाह आ तेँ समतुरिया सँ बेशी नवतुरियाक प्रति साकांक्ष छलाह आ यैह कारण छल जे कोशीक अभिशाप भोगैत सुपौल सन सुदूर देहात मे रहियो कऽ मैथिली नव लेखन पर, आइ सँ पच्चीस - छब्बीस वर्ष पूर्व, 1967 क शुरुआती दिनमे,पहिल विचार-गोष्ठी अथवा सेमिनार आयोजित कैलनि । एहि तरहक दुस्साहस ओहि समय मे, किसुन जी सन दुर्द्धर्ष संकल्प - शक्ति वला व्यक्ति कऽ सकैत छल । गोष्ठीक आयोजन सँ लऽ कऽ दूर - दूर सँ खर्चा दऽ साहित्यकार सभ केँ बजायब बड़ बेशी खर्चा वला काज छलैक, जकर व्यवस्था सुपौल सन स्थान मे कऽ लेब कठिन तथापि किसुन सेमिनारक आयोजन नहि, ओहि मे पढ़ल जाइवला 'पेपर' केँ पुस्तकाकार छपयबाक निर्णयो लऽ लेलनि । जेना - तेना सुपौलक राष्ट्रीय मेलाक सांस्कृतिक विभाग सँ सहयोगक आश्वासन लेलनि । सहकर्मी आ मित्रवर्ग केँ मदतिक लेल तैयार कैलनि आ अपन व्यक्तिगत प्रभावक उपयोग करऽ लगलाह ।

ताधरि हम मैथिली मे अत्यल्प लिखने रही । हिन्दीक 'नयी कविता'क कवि, आलोचक आ प्रवक्ताक रूप मे चर्चा मे आबि गेल रही आ 'परिवेश'क सम्पादनक कारण सम्पर्क - विस्तार सेहो भऽ गेल छल । किन्तु, मैथिलीक लेल अपरिचित नहि तँ अल्प-ख्यात अवश्ये छलहुँ । तथापि किसुन जी औपचारिक निमंत्रण - पत्रक संग व्यक्तिगत पत्र लिखि 'सेमिनार' मे भाग लए 'पेपर' पढ़बाक आग्रह कैलनि । अपन योजनाक प्रारूप तैयार करऽ मे राजकमलक सहयोग लेलनि— ई बात कतेक बेर लोक सभ केँ कहने रहथि । अपन संकल्प केँ क्रियान्वित करबा मे ओ कतेक गम्भीर छलाह तकर अन्दाज ओहि सभ कवि केँ होयतनि जे 'मैथिली नवकविता' मे संकलित छथि आ जिनका बेर - बेर किसुन जीक पत्र भेटल होइतनि ।

सुपौलक सेमिनार मे नवलेखन पर मात्र विचार, चर्चा भेल छल । कविलोकनि दस - दस गोट कविता आ वक्तव्य पठयबाक आश्वासन दऽ विदा भऽ गेलाह । आब ई किसुन जीक दायित्व छलनि, हुनका सभ सँ आ आन - आन संकलनीय कवि सँ रचना कोना आबय । ओ सभ केँ पत्र - पर पत्र लिखऽ लगलाह । कतेक मास बीति गेलनि । किछु व्यक्ति केँ छोड़ि किनकहु उतारा नहि । एम्हर ओ अस्वस्थ रहऽ लगलाह आ चिकित्साक लेल बेर - बेर राँची - पटनाक अस्पताल जाइ लगलाह । सभठाम एकहि चिन्ता — पोथी कोना बहरायत । अन्ततः रचना जुटा आ भूमिका लिखि ओ प्रेस कॉपी तैयार कऽ लेलनि किन्तु, छपय सँ पहिनहि विदा भऽ गेलाह । पोथी छपलाक बाद लोक केँ ज्ञात भेलैक जे किसुन जी केहन ऐतिहासिक काज कऽ गेलाह आ केहन छलनि हुनक लेखकीय प्रतिभा आ संगठनात्मक क्षमता ।

कोनो भाषा मे साहित्यिक विधा केर लेखक कवि केँ एतेक शीघ्र मान्यता नहि

भेटैत छैक। किसुनो जी कें नहि भेटितनि, जँ रोग हुनका संसार छोड़ऽक लेल बाध्य नहि करितनि। आब जखन ओ विदा भऽ गेलाह तऽ लोकक लेल हुनक प्रशंसा मे स्तुति-गान, बाजब - लिखब, रचनावली बहार करब, श्रेष्ठ आ महान कहब आवश्यक भऽ गेलैक। हमहुँ अपना कें ओहि वर्ग सँ बाहर नहि बुझैत छी आ हुनका पर अपन संस्मरण, लेख, कविता लिखि कर्त्तव्यक इति-श्री बुझि लैत छी — 'किसुन जी / कोना लागत जँ हम अहाँ कें / पनरह अगस्त अथवा छब्बीस जनवरी जकाँ / स्मरण करी / सौंसे वर्ष / विस्मृति केर धूरा तोपि / एक दिन / झाड़ि कए सुखा कए / आत्मनेपद सँ / चौपहरा पुरश्चरण करी

अहाँ चौंकब नहि किसुन जी / एहिना होइत छैक / आस्था अधः गमन करैत पाबनि बनि जाइत छैक / आ प्रेम / झण्डा मे बान्हल फूल जकाँ झड़ि जाइत अछि / ओना अहाँ भाग्यवान छी / वर्षक पक्ष - विशेष मे / पितर जकाँ स्मरण कैल जाइत छी / ई बात दोसर थिक जे अहाँ कें / कवि सँ समाधि बना देल गेल / आ सभ लिखलाहा कें / शिलालेख मे जड़ा देल गेल

आब अहाँ एहिना दाबल रहि जायब / पाथर कें संवेदनशील बनयबा मे / जिनगी उत्सर्ग करऽवला केर / इएह नियति होइत छैक / अहाँ तऽ देखि गेल छी / कोना भुवन जी आ राजकमल / प्रस्तरीकृत भऽ गेलाह

अहाँक प्रतिमा कें माला पहिरा / लोक सभ कीर्त्तन मे लागल अछि / किछु कीर्त्तन करैत अछि / आ किछु मात्र सुनैत अछि / किन्तु, आँखि मूनि सभ केओ मूड़ी डोलबैत अछि / झालि - मजीरा ढोलक केर ताल पर

केहन लगितय किसुन जी अहाँ कें / ई आवयविक संलग्नता / आ अष्टयामी मुद्रा/ केहन लगितय / अपन अभूतपूर्व समानधर्मा सभक / ई अभूतपूर्व भक्तिभाव'

हुनक सुपुत्र केदार कानन अपन पिताक 'संकल्प' कें लोक घरि निष्ठापूर्वक पहुँचा रहल छथि। नेना छथि। हुनका बुझल नहि छनि, हुनक पिताक आदर्श केहन आत्मघाती छलनि ?

□

प्रकाशित— संकल्प – 4 : अप्रील 1994

किसुन जी सत्त कें सत्त कहैत रहथि

राजकमल जीक प्रति किसुन जी मे अपरिमित स्नेह छलनि। हुनक दुर्बलतो कें ओ दुलार करैत छलाह। हुनक रोग, पीड़ा, अभाव, यायावरी, परिवार, बाल - बच्चा, मित्र - वर्ग सभ हुनका प्रिय छलनि। एकर कारण आओर जे किछु हो, हमरा जनैत ओ छल दुनू मे अदभुत समानता। दुनू निस्सारताक उपासक छलाह। स्वास्थ्यक सङ निरन्तर अत्याचार करऽ वला राजकमल कें लोक आत्महंता मानैत छलनि आ किसुन जी

आत्महत्याक प्रयास मे पकड़ल गेलाह (हमरा नाम हुनक 6.2.'70 क पत्र). [illegible] अथवा नऽवक स्थापनक लेल अवांछित पुरातनक ध्वंस कें दुनू आवश्यक मानैत छलाह आ दुनूक साहित्य आ समाजक प्रति दृष्टि एवं विचार अत्युग्र छलनि।

राजकमल जीक मृत्युक बाद बहुतरास हिन्दीक पत्र - पत्रिका हुनका पर केन्द्रित अंक आ विशेषांक बहार कैलक। हुनक मित्र आ शत्रु दुनूक भावोद्रेक मे स्नेह आ द्वेषक आत्यन्तिक प्रवाह छलैक जाहि मे हुनक व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं साहित्यिक स्वरूप कें तथ्याधार पर कम, अतिरंजना तथा राजकमल द्वारा प्रचारित भ्रमोत्पादक सूचनाक अनुसार विवरण प्रस्तुत कैल गेल छलैक।

कुमार प्रिन्टर्सक मालिक आ हमरालोकनिक घनिष्ठ मित्र जयन्त कुमार 'युयुत्सा'क राजकमल विशेषांक बहार कैलनि। हुनकहि प्रेस आ सहयोग सँ 'आखर' सेहो बहराइत छल। हमरालोकनिक लेल 'राजकमल - स्मृति अंक' बहार करऽ काल ई आवश्यक छल जे वस्तुस्थितिक पूर्वाग्रहरहित आकलन प्रस्तुत कैल जाय, जाहि सँ भ्रान्तिपूर्ण चर्चाक खण्डन हो।

किसुन जी ई भार अपना ऊपर लेलनि। किन्तु, अनवरत अस्वस्थ रहलाक कारण लिखब कठिन भऽ गेलनि। रोग - शय्यो पर स्मृति अंकक लेल लिखब एवं लिखयबाक चिन्ता लागल रहैत छलनि।

ओ किछु अंश लिखि कए पठौलनि किन्तु पाठकक भ्रम - परिहारक लेल जे लिखब आवश्यक छलनि ताहि हेतु आवश्यक छलनि, राजकमल जीक परिवार सँ सम्पर्क कए स्पष्टीकरण करब। राँची सँ सुपौल अबितहि अपन शोचनीय शारीरिक अवस्थाक बिनु परबाहि कैने सम्पर्क साधलनि आ अपेक्षित अंश लिखि कए पठा देलनि। राजकमल पर ओहन प्रामाणिक लेख ने हिन्दी मे बहार भेल, ने बंगला मे, ने मैथिली मे दोसर।

गद्य लेखन मे किसुन जी पारंगत छलाह। चाहे आलोचनात्मक, समीक्षात्मक आ सामयिक विषय पर लेख हो अथवा कथा, संस्मरण रिपोर्ताज, नाटक, सम्पादकीय आ पत्र - लेखन, सभ मे हुनक गद्य - शैली विलक्षणता नेने रहैत छल। एहि सँ बड़का लाभ नव लेखन तथा 'आखर' कें भेटलैक। हुनक जीवनक अन्तिम दशक नव कविताक प्रतिष्ठापन, व्याख्या आ समालोचना मे व्यतीत भेलनि। एही मध्य सुपौल मे नव कविता पर द्विदिवसीय सेमिनार आयोजित भेल छल आ 'आखर' बहरायल। हुनक योगदान आइ सर्वविदित अछि।

यात्री, किसुन, सोमदेव, मायानन्द आ राजकमल नव कविताक लेल वातावरण तैयार करऽ वला छथि। रूढ़िवादिता आ कविता - सम्बन्धी पारम्परिक मान्यता पर प्रहार करैत ई लोकनि परवर्ती पीढ़ी कें परिवेशक प्रति जाग्रत आ वायवीय आदर्श सँ बहार कए जीवनक कठोर वास्तविकताक प्रति सावधान कैलनि।

कविक रण - क्षेत्र, ओकर भाव, विचार आ अनुभूति होइत छैक। समस्त वाद - संवाद, जय - पराजय ओही पर निर्भर करैत छैक। युद्ध क्षेत्र, शिविर आ सेना तीनू वैह होइत अछि। सिपाही आ कमाण्डर दुनूक काज एकसरे करऽ पड़ैत छैक। किसुन जी सेहो मोर्चा पर संघर्षरत एहने सिपाही, कमाण्डर अथवा सेनानायक छलाह।

हुनक अवदान विशेष उल्लेखनीय अछि। हुनका द्वारा तैयार कैल गेल मंच अथवा मोर्चा सँ जे भावनात्मक, वैचारिक एवं साहित्यिक परिवर्तन आयल ओ निर्णायक सिद्ध भेल। सामान्यतः आधुनिकता आ अधुनिक बोध शहर सँ गाम मे पहुँचैत अछि, किसुन जी ओकरा गाम मे परीक्षित - प्रतिष्ठित कए मिथिलाक शहर धरि पहुँचौलनि। ओ साहित्यक क्षेत्र मे आधुनिकताक सामाजीकरण अथवा व्यावहारिक आधुनिकता विकसित कैलनि। ई अवदान हुनक रचनात्मक उपलब्धि सँ बेशी महत्व राखैत अछि। उद्देश्यक प्रति हुनका मे जे सजगता आ समर्पण - भाव छलनि, ओकरे आन्तरिक शक्ति एकटा सामान्य सेमिनार कें नवता बोधक ऊर्जा - स्रोत सिद्ध कऽ देलक, ओकरा साहित्यिक अनुष्ठानक मर्यादा दिया देलक।

हुनक सौम्य - शान्त - सुदर्शन व्यक्तित्व मे दुर्धर्ष इच्छा - शक्ति छलनि। ग्रामीण वातावरण, रोग, अभाव – तीनू सँ संघर्ष करैत ओ भावात्मक एवं क्रियात्मक प्रयोग करैत रहैत छलाह। प्रयोगे हुनक प्रतिरोधक एवं प्रेरक शक्ति छलनि।

सुपौलक सेमिनार मे किसुन जी हमरा मैथिलीक नव कविता पर आलेख तैयार करऽक आदेश देने छलाह। हम हुनका लिखलियनि–– 'कविता पर नहि, अकविता पर लिखऽ आ पढ़ऽ चाहैत छी।' ताधरि बहुतरास अकविता मैथिलीक पत्र - पत्रिका मे छपि चुकल छल। राजकमल, किसुन, वीरेन्द्र मल्लिक, जीवकान्त समेत अनेक कविक अकविता पाठक धरि पहुँचि चुकल छल। अतः किसुन जी हमर प्रस्ताव कें सहर्ष स्वीकार कैलनि आ हमरा मंच सँ अपन बात राखऽ आ ओहि पर चर्चा करयबाक अवसर देलनि। ओ स्वयं नव लेखन, नव कविता, अकविता, नवतावाद आदिक अवधारणा कें स्पष्ट करऽक लेल अनेक लेख लिखने रहथि। हुनका द्वारा तैयार कैल गेल वातावरण मे कोनो तरहक प्रयोगक लेल प्रचुर संभावना रहैक।

नवका पीढ़ीक लेल प्रमुख छलैक 'एक्शन'। तदुपरान्त रुक्ष यथार्थक संवेदनात्मक अभिव्यक्ति। रचनात्मक संवेग मे अभिव्यक्ति प्रमुख रहलैक आ कला, भाषा तथा सम्प्रेषण गौण पड़ि गेलैक। एहि अभावक अनुभव करैत ओ सम्प्रेषणक समस्या पर बेर - बेर लेखनी चलौलनि। 'आत्मनेपद'क भूमिका मे सम्प्रेषणक नवीन बिम्ब योजनाक चर्चा करैत ओ लिखने छलाह— 'ई स्पष्ट वा दुरूह नहि होइत अछि; मुदा बुझल जाइत अछि, एहि कारणें जे एहि कविता सभ मे अपूर्व - अपरिचित, नवीन आ सघन बिम्ब सभक अधिकता रहैत अछि, जकरा लेल अधिक सुसंस्कृत आ सहृदय पाठकक अपेक्षा अछि। हर्षक विषय जे नव कविताक साधारणीकरण भऽ रहल अछि आ ओकर रसानुभूति कयनिहार पाठक समुदाय खूब बढ़ि रहल अछि।'

एहि समस्या पर पुनः विचार करैत ओ 'नव लेखनः किछु विचार' मे ओ लिखैत छथि–– 'ई निर्भ्रान्त अछि, जे कोनो क्षण - विशेष मे तीव्र संवेगक सूक्ष्म भाव - वहन करबाक क्षमता शब्द मे नहि होइत छैक, जे ओ कथ्यक सम्पूर्ण संवेग कें अक्षुण्ण रूपें अभिव्यक्त कऽ सकत। तें नव लेखन भाषाक उक्त अक्षमता कें तथा ओकरा सँ पूर्वक असहज व्यक्ति कें बुझि, मानि कऽ एकदम अनिवार्य युगानुरूप, आपाततः यथार्थ आ नवबोधानुकूल नवीन बिम्ब, नवीन प्रतीक, नवीन उपमान आदि कें स्वीकृत कऽ नवीन

संकेत - अंक आ नव रेखा कें प्रयुक्त कयलक अछि, जे जन सामान्य द्वारा पूर्ण परिचित तथा अभिशात नहि रहबाक कारणें दुर्बोध आ दुरूह कहि कऽ बदनाम कयल जाइत अछि।'

'ई मानबा मे हमरा कनेको दुविधा वा आपत्ति नहि अछि, जे नव लेखनक नाम पर एहनो लिखल जाइत अछि, जे केवल शब्द - जाल मात्र थिक, जाहि मे अनेको रेखा मात्र अछि, नवीन होयबाक उपक्रम - आकांक्षा अछि आ अनेक अंश मे फालतू वा निरर्थको अछि।

नव लेखन आ नव कविताक नाम पर अनुत्तरदायित्वपूर्ण लेखन हुनका पसिन्न नहि रहनि। अपन लेख, कविता, वक्तव्य आ पत्रक माध्यम सँ एहि दिस सभक ध्यान ओ आकृष्ट करैत रहैत छलाह। नवतावाद अथवा आधुनिकता मूल्यबोध आ नव मूल्यक सृष्टि थिकैक किन्तु, जखन ओकरा 'फैशन'क रूप मे लेल जाइत छैक तऽ ओ रचनात्मकता कें रचना-हमन (इनफेक्टेड) कए सर्जनाक संभावना कें 'अबसर्डिटी' धरि सीमित करैत ओकारक भावावेश, अन्तः संगति तथा अन्तर्दृष्टि कें दिशा - भ्रष्ट कऽ दैत छैक। ओ एहि दिशा - भ्रष्टताक विरोधी छलाह सङहि, सत्त कें सत्त कहबाक दुस्साहस सेहो हुनका मे छलनि। हुनका शब्दावली मे, ई गदहा कें गदहा कहब थिक— 'सरिपहुँ आइ-काल्हि / गदहा कें बाप कहबाक एहि युग मे /ओ थिक दुस्साहसी / अथवा थिक गदहा/ जे गदहा कें बाप कहबाक बेगर्त्ते मे/ बाप नहि कहिकऽ / गदहा कहि दैत अछि।'

कोनो क्षेत्र मे ने गदहाक कमी होइत छैक, ने गदहा कें बाप कहऽ वला केर। किसुन जी एहि अवसरवादिताक प्रति नवका पीढ़ी कें सावधान कैलनि आ गदहा कें गदहा कहबाक साहसिकता सँ युक्त कैलनि।

हुनक कविता तऽ अकविता भइए गेल छल, विरोधो 'अ-विरोध' भऽ गेल छल— 'कोनो फूल / कोनो निर्झर / कोनो वन्याक गीत जे गबै छथि / तनिका सँ कोनो विरोध हमरा कहाँ अछि ? / मुदा, पुरनका प्रतीक आ सन्दर्भ / जनिक कल्पनाक विषय थिक/ अज्ञान वा आज्ञान/ दोहरबैत रहब जनिक रचना थिक / ओहि मे कोनो शोध कहाँ अछि ?...गतिमान इतिहास, धन्न रहू/पुरना उच्चैः श्रवा पर चढ़ब अहाँकें पसिन्न अछि / हमरा अहाँ सँ कोनो प्रतिशोध कहाँ अछि ? / विरोध कहाँ अछि / किन्तु / कनरसियाक साधुवाद सँ गर्वित / मंचाधीशी काव्यक पराजित स्वर छोड़ि / दोसर की संज्ञा छैक / आ जँ केओ परम्पराक जंगल तोड़ि / नवका फसिल कें पटबैत अछि। तऽ अहाँक माथ मे दर्द कियैक होइत अछि ?/ आजुक युगसत्य सँ परिचय करू हे गीत - बन्धु / कनेक जीवनक यथार्थ कें बुझू / चीन्हू ई कुण्ठित / ओझरायल / संत्रस्त श्वास अहाँक थिक आ कि नहि ?' (अ–विरोध, 1969)

□

प्रकाशित— आरंभ : जून 1995

मिथिला - मैथिलीक महान विभूति : प्रो. राधाकृष्ण चौधरी

अपन पिता, मधेपुरा कोर्टक मोख्तार श्री राजकिशोर चौधरीक छओ गोट सन्तान मे दोसर अथवा तेसर प्रो. राधाकृष्ण चौधरीक जन्म 15 फरवरी 1924 कें भेल छलनि। हिनक पितामह श्री श्यामलाल चौधरी रामपट्टी, दरभंगा केर मूल निवासी छलाह जे मधेपुरा केर विद्यापुरी मोहल्ला मे आबि कए बसि गेल रहथि।

श्री राधाकृष्ण चौधरी केर प्रारम्भिक शिक्षा मधेपुरा केर कोनो सामान्य विद्यालय मे भेल रहनि। मैट्रिकुलेशन ओ सुपौल सँ कैने रहथि। पटना विश्वविद्यालय सँ इतिहास मे 'ऑनर्स'क सङ ग्रेजुएशन 1943 मे आ एम. ए. 1946 मे कैने रहथि।

ओ 1946 मे, जी. डी. कॉलेज, बेगूसराय मे, इतिहास विभाग मे लेक्चररक पद पर नियुक्त भेल छलाह आ जनवरी 1955 मे इतिहास एवं प्राचीन इतिहास तथा संस्कृति विभागक अध्यक्ष भऽ गेल छलाह। ओहि पद पर ओ 1970 क जनवरी धरि रहलाह। 1959 सँ 1970 धरि ओ कॉलेजक वाइस प्रिंसिपल सेहो रहथि। पछाति ओ प्राचार्य भए एस. एस. बी. कॉलेज, कहलगाँव, भागलपुर चलि गेलाह। किन्तु बेगूसरायक मोह पुनः हुनका 1973 मे घुरा कए जी. डी. कॉलेज लऽ आनलकनि। ता धरि बेगूसराय आ जी. डी. कॉलेज–दुनू राजनीतिक दाव - पेंचक आओर पैघ अखराहा भऽ गेल छल। राधाबाबू एति परिवर्त्तित वातावरण कें एक्को वर्ष सहन नहि कऽ सकलाह। एहि मध्य 1974 मे रीडर भए ओ टी. एन. बी. कॉलेज, भागलपुर चलि गेलाह जतय सँ ओ पुनः एस. एस. बी. कॉलेजक प्रिंसिपलक पद 1978 मे स्वीकार कैने छलाह आ फेर अप्रैल 1981 मे घुरि कए भागलपुर आबि गेल छलाह। 1982 मे भागलपुर विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर इतिहास विभागाध्यक्षक पद कें सेहो सुशोभित कैने रहथि।

गणेशदत्त कॉलेज, बेगूसराय मे 1955 मे तुलसी जयन्ती मनाओल जा रहल छल। हम जयन्ती समारोह सँ किछुए दिन पहिने आइ. ए. क प्रथम वर्ष मे नामांकन करौने छलहुँ। हमर बालसखा आ वर्ग मित्र श्री वासुदेव दास बरौनी आबि कए सूचित कैलनि जे कॉलेज मे तुलसी जयन्तीक अवसर पर कविता प्रतियोगिता आयोजित कैल गेल छैक। ओ हमर कविता लऽ कए विदा भऽ गेलाह। तेसर दिन समारोह मे महाविद्यालयक साहित्य परिषद आ समारोहक मुख्य अतिथि डा. शिवबालक रायक अभिमत सँ हमर कविता कें प्रथम पुरस्कार भेटलैक।

कविता पाठ आ पुरस्कार प्राप्तिक बाद श्रद्धेय राधाबाबू हमरा बजा कें प्रोत्साहित कैलनि आ कहलनि जे अहाँ आवश्यकता पड़ने निस्संकोच वाइस प्रिंसिपलक चेम्बर अथवा बासा पर आबि कए हमरा सँ भेंट कऽ सकैत छी।

राधाबाबू अपन छोट कद - काठी, साधारण वेश - भूषा, चिन्तनशील मुखमुद्रा आ निश्छल हँसी सँ सभ कें प्रभावित - अनुप्राणित करैत रहैत छलाह। अपन विद्वता, मिलनसारिता आ अनुशासन प्रियताक लेल ओ विख्यात छलाह। सभ बुझैत छल जे

देश - विदेश मे अपन अनेकानेक प्रामाणिक इतिहास - ग्रन्थक लेल प्रसिद्ध आ सम्मानित ई साधारण सन लागऽ वला व्यक्ति केहन असाधारण आ महान छथि।

हमर आइ. ए. क रिजल्ट देखि हुनका अपार प्रसन्नता भेलनि। ओ अपन आशीर्वाद दैत पटना कॉलेज सँ अर्थशास्त्र मे ऑनर्स लए ग्रेजुएशन करबाक परामर्श देलनि। नाम लिखयलाक बाद पटना जाइत - अबइत ओ हमरा सँ भेंट करब नहि बिसरथि। हुनकहि स्नेहक प्रभाव छल जे बरौनी निवासी एवं पटना विश्वविद्यालयक इतिहास - विभागाध्यक्ष, प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता डा. रामशरण शर्माक हम कृपा - पात्र बनि गेलहुँ।

श्रद्धेय यात्री जी हमर पारिवारिक मित्र छलाह। पितामह, पिता, पितृव्य, अग्रज सँ लऽ कए घरक प्रत्येक सदस्य, छोट - छोट नेना - भुटको सँ हुनका मैत्री छलनि। तहिना हुनक मैत्री छलनि राधाबाबू आ हुनक परिवारक प्रत्येक सदस्य सँ। जहिया बिहार आबथि, बरौनी आ बेगूसराय जायब नहि बिसरथि। बेर - कुबेर, कखन ककरा ओतय पहुँचि जयताह तकरो कोनो ठेकान नहि। किन्तु, जखन आ जकरा ओतय ओ पहुँचि जाइत छलाह, लोकक भीड़ लागिये जाइत छल। बूढ़ - बच्चा सभ यात्री जीक कविताक प्रेमी। बुढ़िया पुरनियाँ अपन काज - धाज छोड़ि, हुनक कविता सुनऽ बैसि जाइत छलीह तऽ नवकी - पुरनकी कनियाँ सभ भानस - भात छोड़ि, दरबाजाक अऽढ़ भए ठाढ़ि भऽ जाइत छलीह। यात्री जी कें ककरो कोनो 'फरमाइस' अथवा आग्रह सँ कोनो आपत्ति नहि होइत छलनि।

एक दिन ओ तन्मय भए अपन कविता 'नान्हि - नान्हि टा फूल' सुना रहल छलाह। हमरा लक्ष्य कऽ कें ओ बाजलाह, ई कविता आइये भिनसर राधाबाबूक डेरा पर लिखने छी।

राधा बाबू जा धरि बेगूसराय मे रहलाह, मैथिली साहित्य केर समस्त गतिविधि केर केन्द्र विन्दु बनल रहलाह। हुनक डेरा पर साहित्यकारक जमघट लागैत छल। यात्री जी कें बेर - बेर आबऽ पड़ैत छलनि।

राधा बाबूक प्रयासें बेगूसराय मे विद्यापति - जयन्ती मनाओल जाय लागल, कॉलेज, टाउनशिप एवं अन्यान्य स्थान पर सांस्कृतिक आयोजन एवं कवि - सम्मेलन होबऽ लागल। मैथिलीक प्रतिष्ठित साहित्यकार सभकें दूर-दूरसँ बजाओल जाय लागल। सभक स्वागत - सत्कार, यात्रा - व्यय एवं सम्मान - राशिक व्यवस्थाक सम्पूर्ण दायित्व राधा बाबू पर।

बेगूसराय, जे पहिने मुंगेर जिलाक एकटा सबडिवीजन छल, 1973 मे स्वतन्त्र जिला बनाओल गेल। पहिल जिलाधीश भऽ कए अयलाह श्री मन्त्रेश्वर झा। मन्त्रेश्वर जी छात्रावस्थे सँ खूब लिखैत छलाह आ एक गोट प्रतिभावान लेखक, विशेष कए व्यंग्य-लेखन क्षेत्र मे, अपन कृतित्वक आधार पर यशस्वी भऽ चुकल छलाह। पछाति प्रशासनिक सेवा मे आयल छलाह। हुनका अयने बेगूसरायक साहित्यिक गतिविधि मे आओर तेजी आबि गेल। राधाबाबू केर व्यवस्था आ मन्त्रेश्वर जीक सहयोग सँ कतेक अविस्मरणीय आयोजन भेल। एहि दुनू सज्जन केर हमरा प्रति तेहन अनुराग जे एतेक दूर सँ

बजा लैत छलाह। एहन संयोग जे प्राय: एकहि अवधि मे राधाबाबू आ मन्त्रेश्वर जी दुनू बेगूसराय सँ बाहर चलि गेलाह आ शहर फेर सनातन निष्क्रियता कें ओढ़ि लेलक।

संभवतः 1974 - 75 मे साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा अंग्रेजी मे 'मैथिली साहित्यक इतिहास' लिखयबाक योजना बनाओल गेल। ओकरा एहि काजक लेल राधाबाबू सँ बेशी उपयुक्त के भेटितैक ? मैथिली मे हुनक–मैथिली साहित्यिक निबन्धावली, 1956, मिथिलाक राजनीतिक इतिहास, 1960, मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहास, 1963, शारान्तिधा, 1969 आदि प्रकाशित भऽ चुकल छलनि। एकर अतिरिक्त हिनक 'मिथिला इन द एज ऑफ विद्यापति', 'हिस्ट्री ऑफ मुस्लिम रूल इन तिरहुत' सेहो प्रकाशित भऽ गेल रहनि।

इतिहास लेखकक रूप मे ओ सम्पूर्ण भारत मे विख्यात भऽ गेल छलाह तथापि, ई आवश्यक नहि छलैक जे कोनो पैघ इतिहास लेखक साहित्यिक इतिहासो ओहिना अधिकारपूर्वक लिखि सकैत अछि। साहित्य अकादमी हुनक साहित्यिक अवदान, लेखकीय क्षमता आ इतिहास - दृष्टि तीनू कें ध्यान मे राखि एहि महान काजक लेल हुनका सर्वाधिक उपयुक्त पौलक आ इतिहास - लेखन लेल अनुबन्धित कऽ लेलक।

अकादमी मे मैथिलीक प्रतिनिधि लोकनि कें ई कोना सह्य होयतनि। मैथिली साहित्य आ शिक्षा पर ब्राह्मण समुदायक एकाधिपत्य रहैत छैक। ताहू मे लाभ आ प्रतिष्ठा वला काज पयबाक लेल 'सोति' होयब आवश्यक। जाहि भाषा मे कोनो पोथी कें साहित्यिक मूल्य आ श्रेष्ठताक आधार पर पुरस्कारो नहि देल जाइत छैक अथवा पुरस्कारक निर्णय करऽ काल जतय जाति - वर्ग - क्षेत्र विशेष कें ध्यान मे राखल जाइत छैक, ओतय साहित्यक इतिहास - लेखन सन दायित्वपूर्ण आ लाभकारी काज करऽक लेल कोनो 'अब्राह्मण – अ-श्रोत्रिय' सँ अनुबन्ध कोना स्वीकार होइतैक।

एहन चक्र चलाओल गेल, जे अकादमी कें राधाबाबूक सङ कैल गेल अनुबन्ध कें आपस लिअऽ पड़लैक।

ई घटना राधाबाबू कें मर्माहत कऽ देलकनि। ओ पोथीक अधिकांश भाग तैयार कऽ चुकल छलाह किन्तु, साहित्य अकादमी सँ नहि छपलनि आ ने 'हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर' क नाम सँ। ओ व्यक्तिगत प्रयास सँ पटना सँ ओकरा 'ए सर्वे ऑफ मैथिली लिटरेचर' क नाम सँ छपौलनि। ओ अपन एहि प्रयास सँ साहित्य अकादमी एवं मैथिलीक मठाधीश सभक संकीर्ण राजनीति कें उदघाटित कैने छलाह।

ई कुचक्र सम्पूर्ण मैथिली जगत लेल कलंकक विषय छल। एकटा मातृभाषा प्रेमी, सहृदय साहित्य सेवी, अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिक प्रकाण्ड विद्वान आ सिद्धहस्त लेखक मात्र जातीय आधार पर कोनो राष्ट्रीय संस्था द्वारा अस्वीकृत करबा देल गेल छल। पछाति, किछु षडयंत्र - निष्णात मैथिलीक तथाकथित हितैषी द्वारा अनेकानेक कल्पित कारण लोक सभ कें सुनाओल गेल छलैक।

राधाबाबूक आक्रोश आ विरोधो मे रचनात्मकता रहैत छलनि। ओ एहि कुचक्रक प्रति बिना कोनो प्रतिक्रिया व्यक्त कैने पोथी कें घोर परिश्रम कए पूर्ण कयलनि। हुनक ई पोथी इतिहास दृष्टिक एकटा प्रामाणिक 'दस्तावेज' अछि जकर दर्शन अन्य साहित्यिक इतिहास - ग्रन्थ मे दुर्लभ।

हर अभिन्न मित्र आ मैथिलीक वरिष्ठ कथाकार राजमोहन झा जी अपन 'गल्ती-नामा' मे हुनक इतिहास मे अनेकानेक दोषक उल्लेख कयने रहथि किन्तु, राधाबाबूक लेखकीय भावनात्मक सहृदयता - आन्तरिकता आ निष्पक्ष इतिहास - दृष्टि पर ओ दृष्टिपात नहि कऽ सकल छलाह।

द्वितीय विश्वयुद्धक अवधि (1934 सँ 1945 इस्वी धरि) राधाबाबूक विलक्षण छात्र जीवनक कथा कहैत अछि।

ओ अपन अद्‌भुत प्रतिभा आ अध्यवसायक बल परप्रथम श्रेणीक छात्रक रूपमे प्रशंसा आ पुरस्कारक पात्र छलाह, अपन राजनीतिक जागरूकता आ साम्यवादी सिद्धान्तक प्रति अटूट प्रतिबद्धताक लेल सेहो विख्यात छलाह।

एहि अवधि मे ओ ऑल इण्डिया स्टुडेण्ट्स फेडरेशन, कम्युनिस्ट - कांग्रेस संयुक्त - फोरम केर प्रॉविन्सियल पार्टी कोरक सक्रिय सदस्य छलाह। हुनका भागलपुर जिला ए. आइ. एस. एफ केर सेक्रेटरी बनाओल गेलनि। ओहि अवधि मे ओ महान क्रान्तिकारी सुभाषचन्द्र बोस कें जिला सम्मेलन मे आमन्त्रित कैने रहथि।

1943 मे, बिहार मे बनल 'बंगाल फेमिन रिलीफ कमिटी', जकरा सँ डा. राजेन्द्र प्रसाद, डा. श्रीकृष्ण सिंह, डा. अनुग्रह नारायण सिंह आदि सन महान स्वतंत्रता सेनानी सम्बद्ध रहथि, केर जेनरल सेक्रेटरीक रूप मे बंगालक ऐतिहासिक अकालक अवधि मे अपन सेवा आ रिलीफ कार्य संचालनक क्षमताक लेल सर्वत्र चर्चित छलाह।

सुनील मुखर्जी, जगन्नाथ सरकार आदिक सम्पर्क मे आबि हुनक राजनीतिक चेतना आ साम्यवादी विचारधारा तीक्ष्ण सँ तीक्ष्णतर होइत गेलनि। हुनक परवर्ती जीवन पर एहि वैचारिक न्यों‌क प्रभाव सभ दिन बनल रहल।

राधाबाबू कट्टर कम्युनिस्ट छलाह। चिन्तन, लेखन आ व्यवहार तीनू मे, मात्र सामाजिके स्तर पर नहि, पारिवारिको जीवन मे। देश - विदेशक पैघ सँ पैघ साम्यवादी नेता सँ हुनका प्रत्यक्ष सम्बन्ध आ मैत्री छलनि। सुनील मुखर्जी, जगन्नाथ सरकार, भूपेश गुप्त, राहुल सांकृत्यायन, नागार्जुन आदि सँ हुनका अन्तरंगता साम्यवादी विचार-सूत्र सँ आबद्ध छलनि। अपन सिद्धान्तक मूल्य पर ओ कोनो तरहक समझौता नहि कऽ सकैत छलाह। तहिना दोसरक सिद्धान्तक ओ आदरो करैत छलाह, भले ओ हुनक अपनहि सन्तान कियैक नहि हो।

पिताक रूप मे हुनक सिद्धान्त आ व्यवहारक एकरूपताक एकटा एहन आदर्श प्रस्तुत करैत अछि जे नितान्त दुर्लभ।

सामान्यतः लोक अपन सन्तानक 'केरियर' बनयबाक चिन्ता मे लागल रहैत अछि। ओहि लेल ओ सभ किछु करऽक लेल, सभ त्यागऽक लेल तैयार रहैत अछि। अपन सिद्धान्त कें बिसरि जाइत अछि। किन्तु, राधाबाबू एहि कोटिक पिता नहि छलाह। ओ प्रत्येक सन्तान कें स्वतंत्र विकासक लेल प्रारम्भहि सँ स्वतंत्र छोड़ि देब आवश्यक

बुझैत छलाह।

हुनक पाँचो सन्तान प्रतिभा, परिश्रम, संघर्ष - प्रियताक सङ - सङ हुनका सँ कट्टर साम्यवादी विचारधारा सेहो ग्रहण कैलथिन। सभ के कट्टर सिद्धान्त - प्रियता आ उग्र साम्यवादी क्रियाकलाप आकृष्ट कैलकनि।

ताधरि बिहार मे नक्सलवादी आन्दोलन जोर पकड़ि नेने छल। सी.पी.आइ.सँ सी. पी. एम. एवं सी. पी. एम. सँ सी. पी. आइ. (एम. एल.) क जन्म भऽ चुकल छलैक। हुनक पहिल दुनू बालक इन्जीनियरिंग आ एम. बी. बी. एस. क अन्तिम वर्ष मे छलथिन। किन्तु दुनू नक्सली आन्दोलनक सरगना। कोनो पिताक लेल ई घोर चिन्ताक विषय भऽ सकैत छलैक किन्तु, राधाबाबू एहि सभ सँ एकदम अविचलित। हुनक व्यक्तित्वक दृढ़ता पर विचार करऽक लेल हुनक पाँचो सन्तानक विकास आ क्रियाकलाप पर एक बेर दृष्टिपात करब आवश्यक।

पहिल सन्तान : श्री प्रभात कुमार चौधरी। बी. आइ. टी., सिन्द्री मे इन्जीनियरिंगक अन्तिम वर्ष मे राजनीतिक प्रतिबद्धताक कारण अध्ययन सँ विरत। 1969 सँ सी. पी. आइ. (एम. एल.) सँ सम्बद्ध। कार्यक्षेत्र बिहार।

दोसर सन्तान : श्री प्रशान्त कुमार चौधरी। एम. बी. बी. एस. क अन्तिम वर्ष मे सी. पी. आइ. (एम. एल.) सँ राजनीतिक प्रतिबद्धताक कारण अध्ययन सँ विरत। 1970 क मइ मे पहिल बेर गिरफ्तार। दोसर बेर अगस्त 1970 मे। 1974 मे बांकीपुर जेल सँ 17 गोट सङीक सङ फरार। 1975 मे आपातकालीन घोषणाक बाद बाढ़ स्टेशन पर गिरफ्तार आ भागलपुर जेलक स्पेशल सेल मे बन्न। सी. पी. आइ. (एम. एल.) क राज्य कमिटीक मृत्युपर्यन्त सक्रिय सदस्य। 1975 मे भागलपुर जेल मे मृत्यु।

तेसर सन्तान : श्रीमती प्रणति लाभ। भागलपुर विश्वविद्यालय सँ मैथिली मे बी. ए. ऑनर्स। पटना विश्वविद्यालय सँ एम. ए.।

चारिम सन्तान : श्री प्रसन्न कुमार चौधरी। सी. पी. आइ. (एम. एल.) क सिद्धान्तक प्रति प्रतिबद्ध। नक्सली आन्दोलन सँ सम्बद्ध। प्री. यूनिवर्सिटी मे पढ़बाकाल अध्ययन सँ विरत। 1970 मइ अथवा जून मे पहिल बेर पटना मे गिरफ्तार। परीक्षा देबऽक लेल (कम अवस्थाक कारण) बेल पर रिहा। सितम्बर 1970 सँ पार्टीक 'होल टाइमर'। 1971 क मइ मे मुजफ्फरपुर मे गिरफ्तार। 1974 मे मुजफ्फरपुर जेल सँ फरार। 'सूट एट साइट'क निर्देश। सर्वत्र खोज। 24 घंटाक अन्दर पुनः गिरफ्तार। डंडा - बेरी। टार्चर। जेलक डंडा - बेरी सेल (सेपेरेट) मे सोलिटरी कन्फाइनमेन्ट। साढ़े छओ साल धरि बन्न। जनता पार्टीक शासनकाल मे 1979 मे रिहा। पार्टी सेन्ट्रल कमिटीक पोलित - ब्यूरोक सदस्य। कॉलेजक शिक्षा के अपूर्ण छोड़ियो कए राजनीति, समाजशास्त्र आ किसान - मजदूरक सामाजिक-आर्थिक समस्या केर विशद अध्ययन आ ओकर समाधानक लेल अपन सक्रियता आ विचार-दृष्टिक अद्भुत विकास। रक्तक्रान्ति द्वारा सामाजिक सुधारक लेल सत्ताक अधिग्रहणक पार्टीक सिद्धान्त मे विश्वास राखितो, पार्टीक भीतर पसरैत सुविधाभोगी दृष्टिक प्रबल

विरोधी। अपन उग्र क्रान्तिकारिता आ राजनीतिक सिद्धान्त मे मौलिकताक लेल राष्ट्रीय स्तर पर विख्यात।

पाँचम सन्तान : श्री प्रणव कुमार चौधरी। भागलपुर विश्वविद्यालय सँ इतिहास मे एम. ए., जे. एन. यू. दिल्ली सँ एम. फिल.। पत्रकारिताक क्षेत्रमे अपन मौलिक विचार धाराक लेल विख्यात। 1986 सँ पटना मे 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' केर स्टाफ रिपोर्टर।

जखन इन्जीनियरिंग आ मेडिकल मे पढ़ऽ वला दुनू पुत्र (प्रभात कुमार आ प्रशान्त कुमार) गिरफ्तार भए जहल मे रहथिन, राधाबाबूक मित्र, शुभचिन्तक आ सम्बन्धी लोकनि चिन्ताकुल भए हुनका सँ रेहाइक लेल प्रयास करबाक आग्रह कैलथिन। राधा बाबूक प्रतिक्रिया छलनि—'सरकार आन्दोलन के अपराध बूझि ओहि सँ सम्बन्धित व्यक्ति सभक गिरफ्तारी करा रहल छैक। दुनू भाइ पार्टीक कार्यकर्त्ता छथि आ पार्टी सुविचारित - सुनियोजित ढँग सँ भूमि आ किसान - मजदूर के शोषणमुक्त कराबऽ लेल ई आन्दोलन (तथाकथित अतिवादी) चला रहल छैक। सामाजिक चेतना जगाबऽ आ सर्वहारा वर्ग के अधिकार दिआबऽक लेल ई आन्दोलन अतिवादी आ रक्तरंजित होइतहुँ परमावश्यक छैक। हम स्वयं एहि सामाजिक क्रान्तिक पक्षपाती छी। ककरो - ने - ककरो एकर संचालन करऽ पड़बे करतैक। लोक एहिना जहल जायत आ जहल मे ओकरा 'टार्चर' कैल जयतैक, लोक एहिना मारल जाइत रहत। ओहो सभ व्यक्ति तऽ ककरो सन्तान, पति अथवा पिता अवश्ये हेतैक। तखन हमरालोकनि जँ एहि तरहें कमजोर पड़ि जायब तऽ आन्दोलन कोना चलतैक ? ई आन्दोलन थिकैक, आपराधिक कर्म नहि। किन्तु, रेहाइ कराबऽक लेल एकरा अपराध मानि ओहि सँ विरत रहबाक वचन दिअऽ पड़तैक। हम आन्दोलनक सिद्धान्त सँ सहमत रहि, रेहाइक प्रयास लेल कोना स्वीकृति दऽ सकैत छी। जंगलक आगि जकाँ पसरऽ वला एहि आन्दोलन के तऽ हजार - हजार बलिदान चाही। सरकार द्वारा चलाओल जा रहल दमन, गिरफ्तारी आ टार्चर तऽ एकटा सामान्य प्रक्रिया थिकैक। हमरा सभ के प्रभात आ प्रशान्तक रेहाइक बात नहि, आन्दोलनक संचालनक रचनात्मक पक्ष पर विचार करबाक चाही, आ एहि सर्वहारा वर्गक हथिआर के राष्ट्रीय स्तर पर चलैबा मे सहयोग देबाक चाही।'

हुनक विचार आ उत्तर सुनि सभ स्तब्ध रहि गेल रहथि।

हम निवेदन कैने छलियनि जे कम सँ कम परीक्षा देबऽक लेल दुनू के 'पेरोल' पर छोड़यबाक प्रयास करब आवश्यक। ओहुना जेल मे रहि ओ पार्टीक कोन काज कऽ सकैत छथि। हुनक उत्तर छलनि– 'ओ लोकनि सिद्धान्तक लेल जीवनोक त्याग करऽक लेल तैयार छथि, परीक्षा आ केरियर तऽ अतिसामान्य बात थिकैक। हम पिता भऽ हुनकालोकनि के अपन संकल्प आ निर्णय सँ अल्पकालिको विरतिक लेल कोना कहि सकैत छियनि ?'

हमरा वियतनामक गोरिल्ला युद्ध (जे ओहि समय मे चलि रहल छल) आ 'होची-मिन्ह' मोन पड़ऽ लागल छलाह। हम श्रद्धावेग मे बिना किछु बाजने हुनक चरण-स्पर्श कए विदा भऽ गेल छलहुँ।

1975 मे भागलपुर (जेल मे प्रशान्त बाबूक मृत्यु अथवा हत्या) क समाचार सँ विचलित भए राधाबाबूक दर्शन करऽ गेल रही तऽ हुनक अविचलित मुख - मुद्रा हमरा आश्चर्य सँ भरि देने छल । हमर मुँह फूजए ओहि सँ पहिनहि ओ हमर स्वास्थ्य आ परिवारक समाचार पूछि, साहित्य पर चर्चा आरम्भ कऽ देने रहथि । हम पुत्र - शोकक लेल सम्वेदना तऽ फराक, जहल मे बन्न ज्येष्ठ पुत्र प्रभात बाबूक समाचारो नहि पूछि सकलियनि ।

हुनक व्यक्तित्व कोनो अदभुत ठोस धातु सँ बनल छलनि । पैघ - सँ - पैघ विपत्ति आ आघातो मे ओ विचलित नहि होइत छलाह । कम्यूनिज्मक प्रति तेहन प्रतिबद्धता छलनि, जे अपनहि नहि अपन, सम्पूर्ण परिवारक होम करऽक लेल सदैव तत्पर रहि (एक गोट सन्तानक तऽ होम भऽ चुकल छलनि शेष बचल सन्तानो जेलक यातना भोगि रहल छलथिन अथवा जेल सँ पड़ा कए सम्पूर्ण व्यवस्था केँ चुनौती दैत, अण्डरग्राउण्ड रहि आन्दोलन केँ संचालित कऽ रहल छलथिन । तेसर पुत्र प्रसन्न कुमार, सोलिटरी सेल मे डण्डा - बेरीक यातना भोगि रहल छलथिन ।) त्यागक एकटा आदर्श प्रस्तुत करऽ चाहैत छलाह । ओ अपन अत्यन्त व्यस्त दिनचर्यो मे प्रतिदिन साढ़े सात घंटा पढ़ऽ - लिखऽक लेल समय बहार कऽ लैत छलाह आ उपर सँ पार्टीक काजक लेल सदैव तत्पर ।

राधाबाबू सँ हमर गुरु - शिष्यक सम्बन्ध छल, सेहो प्रत्यक्ष नहि । इतिहास हमर कहियो विषय नहि रहल, आ ने इण्टरमीडिएटक बाद बेगूसराय कॉलेज सँ हमर सम्बन्ध किन्तु, हमर मानसपटल पर हुनक व्यक्तित्व, चरित्र, विद्वता, सहृदयता आ लेखकीय क्षमता केर जे चित्र अंकित अछि, कहियो धूमिल नहि हैत ।

हुनक देहावसान 15 मार्च 1985 केँ देवघर मे भेलनि । प्रायः साल भरि पहिने हमरा ओ भेंट करऽक लेल देवघर बजौने रहथि । जून 1984 मे हम बरौनी जाइत छी, आ ओतय सँ देवघर पहुँचैत छी । परिवारक सदस्य सँ भरल जीप बम्पास टाउनक शान्ति - निवास (राधाबाबू अवकाश - प्राप्तिक बाद अपन शेष जीवन एतहि बितौने रहथि आ एखनहुँ हुनक धर्मपत्नी एवं परिवारक किछु सदस्य ओतय रहैत छथिन) पहुँचैत छी । 'रेड ऑक्साइड' सँ रंगल बड़का लौह कपाट पर ताला लागल देखैत छी । जीप आगाँ बढ़ैत अछि आ 'बाजोरिया हाउस'क मेन गेट पर जा केँ ठाढ़ होइत अछि । गेस्ट हाउसक दरबान बतबैत अछि जे मैनेजर श्री बजरंगलाल जी दू दिन सँ अहाँ-लोकनिक प्रतीक्षा कऽ रहल छथि ।

हमरालोकनि गेस्ट हाउस मे प्रवेश करैत छी कि एक व्यक्ति आबि कए पूछैत अछि – 'की अपने कीर्त्तिनारायण मिश्र छी ? प्रोफेसर साहब (प्रो. राधाकृष्ण चौधरी) अपने लोकनि केँ बजा रहल छथि ।' हम ओकरा किछु कहितियैक, ओहि सँ पूर्वहि श्रद्धेय श्री राधाबाबू लऽग मे आबि कए ठाढ़ भऽ गेलाह । आनन्दातिरेक मे हम आ ओ दुनू, बड़ी काल धरि निर्वाक ठाढ़ रहलहुँ । ओ घऽरक सभ सदस्य दिस देखैत कहैत छथि – 'हम तऽ अहाँलोकनिक रहऽक लेल अपना ओतय व्यवस्था कैने छी किन्तु, अहाँ तऽ एहि विशाल बंगला मे पहुँचि गेल छी । ओना बंजरंगलाल जी हमरा कहने छलाह

जे हुनका कलकत्ता सँ आदेश भेटल छनि जे अहाँलोकनिक रहऽक व्यवस्था 'बाजोरिया हाउस' (अथवा बिजली हाउस) मे कैल जाय । आब निर्णय अहाँलोकनि पर अछि ।'

हम कहैत छियनि— 'अपने लऽग रहबाक लेल हम एतय आएल छी । परिवारक सदस्य सभक एहिठाम रहने अपनेक बासा पर अपना लोकनिक वार्त्ता निर्बाध चलत ।'

ओ अपन स्वीकृति दऽ विदा भऽ जाइत छथि ।

दोसर दिन ब्रह्ममुहूर्त्त मे शान्ति - निवास पहुँचैत छी । श्रद्धेय राधाबाबू प्रतीक्षा मे 'मेनगेट' लऽग ठाढ़ भेटैत छथि । कहैत छथि— 'देखू बड़का गेट मे ताला लागल छैक मुदा, छोटका गेट नौक्सी पर अटकल छैक । अहाँ ओकरा फोलि कए भीतर आबि सकैत छलहुँ मुदा, कोना अबितहुँ ? अहाँक सौभद्र - निवास मे तऽ बड़का - छोटका, दुनू गेट मे ताला लागल रहैत छैक । लोक केँ प्रवेश पयबाक लेल पछिला गेटक पता लगबऽ पड़ैत छैक ।'

एतबे मे भीतर सँ बजाहटि अबैत अछि चाहक लेल ।

राधाबाबू सभ दिन लीकर आ नेबो बला चाह पीबैत छलाह । हम पहिल बेर एहन चाह यात्री जीक सङ हुनके डेरा पर, बेगूसराय मे पीने छलहुँ ।

बड़ी काल धरि साहित्य, साहित्यिक गतिविधि आओर प्रकाशन पर गप्प होइत रहल । दोसर खेप पुनः आबि विस्तार सँ बतिएबाक निर्णय होइत अछि । किन्तु, आठ-नौ मासक अभ्यन्तरे ओ एहि संसार सँ विदा भऽ जाइत छथि ।

हमरा प्रति हुनक कृपा - भाव सभ दिन बनल रहलनि । एकरा हम मात्र हुनक उदारता आ आन्तरिक विशालता बुझैत छी । हमर ई सौभाग्य छल जे मिथिला-मैथिली क एहि महान विभूति सँ एतेक निकटक सम्बन्ध रहल ।

स्व. राधाबाबूक व्यक्तिगत जीवन, परिवार, प्रकाशन तथा हुनका सम्बन्ध मे किछु अन्य महत्वपूर्ण सूचना संकलनक लेल हम 1989 मे पुनः शान्ति - निवास पहुँचैत छी । ओतय एकटा तरुण सँ हमर भेंट होइत अछि । ओ राधाबाबूक तेसर पुत्र श्री प्रसन्न कुमार चौधरी छलाह, जिनक उल्लेख एहि लेख मे पहिनहि कऽ चुकल छी ।

हम हुनका अपन अयबाक उद्देश्य बतबैत छियनि । ओ हमरा हुनक शयन-कक्ष, अध्ययन-कक्ष आ उपरका तल्ला मे लाइब्रेरी जकाँ लगैत एकगोट कोठली मे लऽ जाइत छथि । निश्शंक भए एक - एकटा छपल लेख, एक - एकटा पोथी आ शोधप्रबन्ध आ सभ महत्वपूर्ण कागत-पत्र देखबैत छथि । किन्तु, राधाबाबूक लिखल प्रकाशित सामग्रीक बहुत बड़का अंश देखऽ लेल नहि भेटल । ओ सभ ओ स्वयं विभिन्न पुस्तकालय आ संग्रहालय केँ दऽ चुकल छलथिन ।

प्राप्त सूचनाक आधार पर हुनक प्रकाशित पोथीक सूची नीचाँ मे दऽ रहल छी ।

मिथिला आ मैथिली सँ सम्बद्ध :

शारान्तिधा, कलकत्ता, 1969, मैथिली साहित्यिक निबन्धावली, पटना, 1956, मिथिला का राजनीतिक इतिहास, दरभंगा, 1960, मिथिला का सांस्कृतिक इतिहास, दरभंगा, 1968, धम्मपदक मैथिली अनुवाद, कलकत्ता, 1973, लालदास, पटना, 1981,

प्रसंग विद्यापतिक, कस्मे देवाय हविषा विधेयम् (निबन्ध संकलन), हिस्ट्री ऑफ मुस्लिम रूल इन तिरहुत, बनारस, 1971; मिथिला इन दऽ एज ऑफ विद्यापति, बनारस,1976, ए सर्वे ऑफ मैथिली लिटरेचर, पटना, 1982।

इतिहास, पुरातत्त्व, राजनीति, अर्थशास्त्र, बौद्ध दर्शन, संस्कृति, विधि एवं न्याय, शिलालेख आदि सँ सम्बद्ध अनेकानेक पुस्तक मे उपलब्ध सूचनाक अनुसार निम्नलिखित पोथी अंग्रेजी मे प्रकाशित छनि —

The Vratyas in Ancient India, Banaras, 1964, Kautilya's Political Ideas & Institution, 1971, History of Bihar, Patna, 1958, Select Inscriptions of Bihar, Patna 1958, Bihar, the Homeland of Buddhism, Patna, 1956, Studies in Ancient Indian Laws & Justice, The University of Vikramshila, Patna, 1976, Economic History of Ancient India, Patna, 1982, A speech on Socio-economic History of India, Political and cultural heritage of Mithila, Delhi, Important Inscriptions of Ancient India.

हिन्दी मे— सिद्धार्थ, पटना, 1956, प्राचीन भारत का राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास, विश्व इतिहास की रूपरेखा, पटना, 1955, भारतीय इतिहास की रूपरेखा, प्राचीन भारतीय राजनीति और शासन - व्यवस्था, बिहार की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परम्परा, पटना, 1972।

एकर अतिरिक्त विभिन्न विषय पर 200 सँ बेशी हुनक प्रकाशित लेखक सूची उपलब्ध अछि। ओकर उल्लेख स्थानाभावक कारण एतय संभव नहि। ओ 'मैथिली एज ए सोर्स ऑफ हिस्ट्री' लिखने रहथि जे छपलनि आ कि नहि, तकर सूचना नहि प्राप्त भऽ सकल। विभिन्न रिसर्च जर्नल, बुलेटिन, स्मारिका, पत्र - पत्रिका, संकलन, शोध-ग्रन्थ आदि सभ मे प्रकाशित ओहि सभ लेख केँ 10-12 वोल्यूम मे छापल जा सकैछ। तहिना देश - विदेशक अनेकानेक विद्वान द्वारा विभिन्न ग्रन्थ मे हुनक अनुसंधान आ पुरातत्त्व क क्षेत्र मे कैल गेल कार्य आ उपलब्धिक विशद वर्णन भेल अछि, तकरो उल्लेख स्वतंत्र लेख अथवा ग्रन्थ मे कैल जा सकैछ।

□

प्रकाशित— कर्णामृत : जनवरी - मार्च 1992

अनधिकृत राजकमलक अधिकार क्षेत्र मे

संभवतः 1958 मे राजकमल जी सँ पहिल भेंट पटना मे भेल छल आ 1959 मे श्रद्धेय यात्री जीक माध्यम सँ 'स्वरगन्धा' क प्रति प्राप्त भेल छल। 1960 क जनवरी। हम आ हमर बालसखा श्री मार्कण्डेय मिश्र, चारि नम्बर बस सँ टालीगंज, कलकत्ता क अन्तिम 'बस स्टॉप' पर उतरि पूर्व पुतिआरी, प्यारा बगान (जतय ओहि समय राजकमल जी रहैत छलाह) क पता लगबैत छी। एकटा पैघ नाला पर बनल, सड़ल काठक पुल केँ पार करैत छी आ बौआइत - बौआइत हुनक निवास स्थानक निकट पहुँचि जाइत छी।

ग्रामीण परिवेश आ बंगाली मोहल्ला। एकटा बंगाली 'मोशाय' केँ हिन्दी मे किछु पूछैत छियनि मुदा, ओ बिना कोनो उत्तर देने आगू बढ़ि जाइत छथि।

कनेक आओर ससरैत छी। एकटा दरबज्जा लऽग किछु महिला बतिआइत छलीह 'बंगला' मे। हमर दृष्टि आश्रम जकाँ लगैत एक गोट घर पर पड़ैत अछि। फेर खिड़कीक फूजल फाँक सँ भितरिया भाग पर नजरि गेल। सीमेन्ट आ काठ सँ बनाओल पैघ पलंग पर चौंकल बहुतरास पोथी - पत्रिका केँ देखि लागल जे ई राजकमल जी केर डेरा भऽ सकैत अछि।

मुदा, पुछियै कोना ? बंगला अबैत नहि अछि आ जिनका सँ किछु पुछबनि ओ सभ महिला ! सभ दिन सह-शिक्षा मे पढ़ने रही किन्तु, एतय तऽ बुद्धिबे हेरा गेल। मार्कण्डेय जी राजकमल जी सँ भेंट करबाक लेल उत्साह सँ भरल रहितहुँ, एहि भीषण - यात्रा लेल तैयार नहि रहथि। हुनक खौंझाएब स्वाभाविक छलनि किन्तु, हम मन्दिर केर अन्तिम सीढ़ी पर आबि, घुरि जयबाक बात कोना सोचितहुँ ?

दू गोट नवागन्तुक केँ एहि तरहेँ ठाढ़ आ हुलकैत देखि, ओहि महिला वर्गक मध्य एकटा नवयुवती साकांक्ष भेलीह। ओ आगू बढ़ि पूछैत छथि— 'आपका नाम ?' आ हमर नाम सुनितहि ओ स्नेहपूर्ण दृष्टि सँ देखि घर चलि गेलीह। लगले ओ बहराइत छथि आ अन्तःपुर मे प्रवेश करबाक संकेत करैत छथि।

हम पहिनहि बुझि गेल रही जे ई भौजी (शशि जी) थिकीह।

ओ हमरा दुनू केँ नेने शयनकक्ष मे प्रवेश करैत छथि आ दिवानिद्रा मे मग्न भाइ साहेब (राजकमल जी) केँ झमोड़ऽ लगैत छथि।

राजकमल जी हॉफी लैत उठैत छथि आ हमरा देखि प्रसन्न होइत छथि। कहलनि —'बड़ नीक भेल जे तोँ आबि गेलह। एकगोट महत्वपूर्ण निर्णय लेबाक अछि आ ओहि लेल तोहर परामर्श ओ सहयोग अपेक्षित।'

हमरा ठकविदोर लागल देखि ओ कहैत छथि— 'हम पिता बनय सँ पहिनहि नोकरी छोड़ऽ चाहैत छी।' (ओ तहिया भारतीय ज्ञानपीठ मे नोकरी करैत छलाह आ शशिजी गर्भवती छलीह। किछुए मासक बाद सितम्बर 1960 मे दिव्याक जन्म भेल छलैक।)

'मैं नहीं चाहता, जन्म के बाद मेरे बच्चे की नजर गुलाम बाप पर पड़े' — हुनक एहि वाक्य पर शशि जी मुस्काइत छथि आ सराइत चाह दिस संकेत करैत छथि। राजकमल जी अगिला योजना बताबऽ लगैत छथि। 'रागरंग' हिन्दी मासिकक

माध्यमसँ वाणी राय तथा किछु अन्य बंगालिन अभिनेत्री केँ 'लाइम लाइट' मे आनऽ केर अपन योजना केँ सविस्तार बुझौलनि। हम प्रकाशन - व्ययक सम्बन्ध मे पुछलियनि तऽ ओ कहलनि जे —'एक 'सेठ-शावक' (अभय कुमार जैन) पाइ लगाओत। ओना एखने एक गोट अभिनेत्री दू हजार टाका"लऽ केँ आबऽ वाली अछि। तीन - चारि दिन मे, तोरा पटना घुरऽ सँ पहिनहि, 15 हजार टाका आओर आबि जायत।'

हमरा ई बूझल छल जे राजकमल जी भारतीय ज्ञानपीठक नोकरी सँ सन्तुष्ट नहि छथि। कलकत्ता प्रवास मे हम प्रायः हुनक ऑफिस 18 बी, ब्रेबोर्न रोड जाइत छलियनि। वैह श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन आ शरद देवड़ा सँ हमर परिचय करौने छलाह। लक्ष्मीचन्द्र जैन भारतीय ज्ञानपीठक सर्वेसर्वा आ शरद देवड़ा 'ज्ञानोदय'क सम्पादक। राजकमल जी ओहि ऑफिस मे काज तऽ करैत छलाह किन्तु, सम्पादन - विभाग सँ कोनो प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहि छलनि। एकटा सामान्य अधिकारीक रूप मे रहितहुँ, अपन लेखन-क्षमता आ लेखकीय ख्याति सँ सम्पूर्ण परिवेश केँ आच्छादित कयने रहैत छलाह। अपन स्वच्छन्दता-प्रेमी संस्कार आ स्वाभिमानक कारण ओ आनक बनाओल नियम - अनुशासन (भलेँ ओ ओहि संस्था अथवा कार्यालयक हो, जतय जीविकोपार्जन लेल हुनक कार्य करब आवश्यक होनि) मे बान्हि केँ रहक लेल कोनो परिस्थिति मे तैयार नहि रहथि। ओहि सँ पहिनहुँ ओ पटना सचिवालयक सरकारी नोकरी छोड़ि चुकल छलाह। तेँ हमरा समक्ष हुनक निर्णयक प्रति सहमति प्रकट करऽक अतिरिक्त आओर कोनो विकल्प नहि छल। ताधरि हम स्वयं विद्यार्थी छलहुँ। नोकरीक विवशता, पारिवारिक दायित्व आ अनियमित आय सँ होमऽ वला कष्ट एवं असुविधाक अनुभव नहि छल। एकटा कल्पनालोक मे विचरण करऽ वला भावुक तथा व्यवहार - ज्ञान - शून्य व्यक्तिक लेल अग्रजक ई निर्णय, मात्र सूचना भऽ सकैत छल। मुदा, शशि जी तऽ हमर वला स्थिति मे नहि रहथि। ओ तऽ बीसे - बाइस वर्षक वयस मे पारिवारिक जीवन, महानगरक रहन-सहन, अनियमित एवं अल्प आय सँ होमऽ वला कष्ट तथा पतिक स्वच्छन्द प्रकृति सँ उत्पन्न होइ वला अनेकानेक समस्या सँ परिचित भऽ चुकल छलीह। किन्तु, ओहो हमरे जकाँ विस्मय - विमुग्ध रहि, अपन इच्छा - अनिच्छा बिना व्यक्त कयने, हरदम मुसकाइत रहैत छलीह।

शशि जी सँ 15 टाका लऽ राजकमल जी हमरा सभ केँ नेने घर सँ विदा भेलाह। धोबी ओतय गेलाह, बुश्शर्ट बदललनि आ चारि नम्बर बस पकड़ि 'चौरंगी' पहुँचि गेलाह।

राति मे एगारह बाजि गेलैक। टालीगंज जयबाक लेल अन्तिम बस कनिको देरी भेने छूटि जयबाक संभावना छलैक। हमरालोकनि बस स्टैण्ड पर आबि जाइत छी। भाइसाहेबक जेबीक पाइ खर्च भऽ गेल रहनि, से हमरा ज्ञात छल। हमरा किछु कहऽ सँ पहिनहि ओ चौअन्नी बहार कऽ देखा दैत छथि आ बस पर चढ़ि जाइत छथि।

ओहि कलकत्ता प्रवास मे प्रायः रोज साँझ मे 'केफे डिमो बिको' अथवा 'मेट्रो' सिनेमाक कात मे हमरालोकनिक भेंट होइत छल। तहिया ओतय रोज हिन्दी आ बंगला साहित्यकारक भीड़ लगैत छल। पृथ्वीनाथ शास्त्री, राजेन्द्र यादव, मन्नू भण्डारी,

शरद देवड़ा, ललित कुमार शर्मा 'ललित', मुद्राराक्षस, छेदी लाल गुप्त, हर्षनाथ, छविनाथ मिश्र 'पागल', शलभ श्रीराम सिंह, चन्द्रदेव सिंह, भगवान सिंह, सकलदीप सिंह, अवध नारायण सिंह, वीरेन्द्र मल्लिक, आलोक शर्मा, विमल वर्मा, इसराइल, मृत्युंजय उपाध्याय आदि प्रायः रोज आबऽ वला व्यक्ति मे छलाह। कॉफी हाउस मे बंगलाक साहित्यकार सुनील गांगुली, संदीपन चट्टोपाध्याय, सुविमल बसाक आदि सेहो हमरा सभक भीड़ मे सम्मिलित भऽ जाइत छलाह। बड़ी राति धरि हमरा सभक बैसार आ बौआएब चलैत रहैत छल। विदा होमय सँ पहिनहि दोसर दिनक भेंटक लेल स्थान आ समय निश्चित भऽ जाइत छल। बेशी काल राजकमल जी हमर डेरा 147, कॉटन स्ट्रीट आबि जाइत छलाह आ दुनू सङे-सङ विदा होइत छलहुँ।

राजकमल जी अपन असामान्य (नीक शब्द हैत अद्वितीय) व्यक्तित्व, प्रगाढ़ अध्ययन आओर विलक्षण लेखन - क्षमताक कारण, ताधरि सम्पूर्ण हिन्दी - मैथिली - बंगला क्षेत्र मे पर्याप्त ख्याति अर्जित कऽ चुकल छलाह। हुनका साहित्य - जगत मे एकटा पैघ चुनौती क रूप मे देखल जाइ लागल छलनि।

हिन्दी मे ओ प्रतिष्ठित भऽ चुकल छलाह, मैथिलीयो मे अपन अदभुत लेखन आ व्यक्तित्वक कारण कविता आ कथाक क्षेत्र मे प्रचुर आदर - सम्मान पाबऽ लागल छलाह। नवतुरिया वर्ग हुनका नव लेखन एवं आधुनिक बोधक अग्रदूतक रूप मे चर्चित - विश्लेषित करऽ लागल छलनि।

दुर्भाग्यक विषय जे ताधरि ओ मैथिली लेखन सँ प्रायः विरत रहऽ लागल छलाह। हिन्दी एवं बंगला केँ ओ अधिकांश समय दैत रहथि। एहि सँ पूर्व कलकत्ते प्रवास मे रहि 'आन्दोलन', 'आदिकथा' आ 'स्वरगन्धा' लिखने रहथि। आदिकथा आ स्वरगन्धा कलकत्ते सँ प्रकाशितो करौने छलाह (संयोगवश हुनक तेसर पोथी 'आन्दोलन' सेहो मरणोपरान्त कलकत्ते सँ प्रकाशित भेलनि)। अधिकांश महत्वपूर्ण लेखन ओ कलकत्ते सँ कयलनि। मैथिली समाज सँ थोड़ बहुत हुनका स्नेह - सहयोगो भेटैत छलनि। अपन मातृभाषा आ मैथिली मे नव दिशामूलक लेखनक प्रति ओ पूर्ण सचेतन आ प्रयत्नशील छलाह, तथापि ओ बेर - बेर कहैत छलाह— 'हम मैथिली सँ सम्बन्ध विच्छेद कऽ चुकल छी।'

एहि वाक्य मे हुनक अनास्था अथवा विरक्ति नहि, मनोव्यथा छलनि। से जँ नहि रहितनि तऽ हमरा हिन्दीक सङ - सङ मैथिलीयो मे लिखबाक लेल प्रेरित - उत्साहित नहि करितथि आ स्वयं विरोधक बादो लेखक आ संस्था सभ सँ ओहि तरहेँ सम्पर्क बनौने नहि रहितथि। ओना ओ हंसराज तथा किछु अन्य लेखक मित्र केँ मैथिली छोड़ि हिन्दी मे लिखबाक लेल कहि - लिखि चुकल छलाह, जकर अर्थ ओहि लेखक मित्र सभक प्रतिभाक हिन्दी मे विस्तार भऽ सकैत छल, मैथिलीक अहित नहि।

हम पटना आपस आबि राजकमल जी केँ पत्र लिखलियनि। हुनक उत्तर आयल —

प्रिय कीर्त्ति भाई, कलकत्ता, 16.2.60

पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। उस दिन इच्छा रहने पर भी आप से अधिक बातें न हो सकीं। मैथिली उपन्यासों के सन्दर्भ में 'आदिकथा' की चर्चा वाला लेख अप्प बाबूसाहेब चौधरी, मिथिला दर्शन, बामनपाड़ा लेन, कलकत्ता – 19 को भेज दीजिए। 'ज्ञानोदय' वाली कविताओं का निर्णय शीघ्र ही आपके पास पहुँच जायगी।

आशा है, सानन्द हैं। पत्र लिखा कीजिए। हमलोग कुशल हैं।

राजकमल चौधरी

नोकरी छोड़लाक बाद राजकमल जी अपन पहिल योजना कें कार्यान्वित कयलनि। 'रागरंग'क सम्पादकक रूप मे पहिल अंकक लेल ओ कविता मङलनि। थोड़बे दिनक बाद प्रवेशांक प्राप्त भेल आ लगले हुनक तीन गोट कार्ड—

रागरंग
7, स्वेलो लेन, कलकत्ता–1
11.11.60

कीर्त्ति भाई,

'रागरंग' में तुम्हारी कविता तुम्हें कैसी लगी ? अच्छी लगी हो तो दो - तीन नये गीत और अपने मित्रों की रचनाएँ तत्काल भिजवाओ।

पटने का हालचाल ?

मैं बीमार - बीमार हूँ, इसलिए, प्यारे, लम्बा नहीं लिख रहा हूँ। उत्तर और रचनाएँ तुरत ....

राजकमल चौधरी

16.11 60 केर हुनक दोसर पत्र—

कीर्त्ति भाई,

पत्र मिला। कहानी और गीत भेज रहे हो, शतशः धन्यवाद। पटने के और भी मित्रों - सहयोगियों से रचनाएँ भिजवाओ न। आशा थी कि तुम सविस्तर पत्र लिखोगे। अब लिखो। रचनाएँ शीघ्र भेजोगे ही क्योंकि दूसरे अंक में अब देर नहीं है। मैं बीमार हूँ। अक्सर बीमार रहता हूँ। आज नागार्जुन जी यहाँ आये थे। दिव्या (हमारी बिटिया) और शशि सकुशल हैं। हमलोग तीन दिसम्बर को दरभंगा जाएँगे। मैं तुरत लौट आऊँगा। पटने में तुमसे भेंट होगी। और ?

राजकमल चौधरी

आओर 25.11.60 केर ई तेसर कार्ड—

प्रिय कीर्त्ति,

तुम्हारा पत्र मिला है, कहानी हो सका तो 'रागरंग' में दूँगा, नहीं तो 'विनोद' में। कविता इस अंक में न जाकर अगले अंक में जायगी, क्योंकि दिसम्बर में तुम्हारी कविता गयी ही है। बुरा नहीं मानोगे तो ?

तुम पटना मे 'रागरंग' के एकमात्र प्रतिनिधि हो। इसलिए अपने इस पत्र के लिए वहाँ तुम्हें कुछ करना है। सबसे पहले यह कि नर्मदेश्वर प्रसाद, श्रीमती शान्ता सिन्हा, नलिन विलोचन शर्मा आदि की रचनाएँ भिजवाओ, इन लोगों के एड्रेस मुझे भेज दो, ताकि इन्हें अंक भेज सकूँ। अपने मित्रों से भी अच्छी रचनाएँ भिजवाओ, आशा है, स्वस्थ-सानन्द हो।

तुम्हारा, कमल

हम वयस आ लेखन-क्षमता एवं अनुभव-सभ दृष्टि मे हुनका लग छोट छलियनि। वयस मे ओ हमरा सँ आठ वर्ष पैघ छलाह ! देशक प्रायः समस्त नगर - महानगर कें ओ धाङि चुकल छलाह। एकर विपरीत हम नितान्त अनुभव - शून्य। ओना तत्कालीन समस्त साहित्यिक पत्र - पत्रिका मे हमर हिन्दी रचना नियमित रूप सँ छपैत छल। 'नयी कविता'क कविक रूप मे थोड़ बहुत स्वीकृति सेहो भेटि गेल छल किन्तु, लेखन मे हुनका समक्ष हमर कोनो गिनती नहि छल (आ ने आइ अछि)। ई हुनक उदारता छलनि, जे हमर लघुता कें बिसरि हमरा प्रति ओ मित्र - भाव रखैत छलाह आ प्रकाशित रचना सभ पर अपन प्रतिक्रिया पठबैत रहैत छलाह। एतय हुनक एकटा आओर पत्र—

प्रिय कीर्त्ति, कलकत्ता, 22.2.61

तुम्हारे पिछले पत्र का उत्तर मैंने अवश्य ही लिखा था। शशि दरभंगा गयी है, तब से मैं अव्यवस्थित अवश्य हो गया हूँ। 'रागरंग' फरवरी अंक तुम्हें भेजा है, मिला ही होगा। 'नयी कविता' वाली तुम्हारी नयी कविता बहुत प्यारी लगी। हमें भी एक - दो नयी कविता भेजोगे ? और ?

कमल

उपर हम लिखने छी जे राजकमल जीकें कलकत्ताक प्रवासी मैथिल वर्ग आ मैथिल संस्था सभ सँ स्नेह - सहयोग भेटैत छलनि आ हुनको स्वजन - आत्मीय तथा मैथिल समाजक मध्य अन्तरंगताक अनुभव होइत छलनि मुदा, सङहि एकटा दोसरो स्थिति छल, जाहि मे ने तथाकथित मैथिल समाज हुनका पसिन्न करैत छलनि आ ने ओ ओकरा देखऽ - बर्दास्त करऽ चाहैत छलाह।

ओना तऽ, सौंसे देश मे सिद्धान्त - व्यवहार अथवा 'कथनी - करनी' मे कतहु साम्य नहि भेटल किन्तु, मैथिल समाज मे एकर स्थिति कनेक भिन्न छैक। एतऽ एहि वैषम्य पर आदर्श, सच्चरित्रता, उदारता, कृपा आदिक तहगर लेप चढ़ल रहैत छैक। खैनी, बीड़ी, सिकरेट, भांग, गांजा प्रायः अधिकांश लोक खाइत - पिबैत छथि। छोट-पैघक बीच सँ कनेक मर्यादाक झालड़ि कें हटा देल जाय तऽ एहि सामाजिक स्वीकृति प्राप्त निशांक प्रति कतहु विरोध - भाव नहि भेटत। मुदा, दारू आ सेक्स !

दारू आ सेक्स मे राति भरि आकंठ डूबल रहऽ वला व्यक्तियो कें जँ भिनसर मे कहि देनि जे राजकमल रतुका बैसार मे पीबि कें आयल छलाह तऽ ओ 'राम-राम' कहि

तामसेँ लाल भऽ जाइत छलाह ।

राजकमल ओहि 'अन्तः शाक्ताः बहिः शैव्याः सभामध्ये च वैष्णवाः' वर्ग केँ नीक जकाँ चिन्हैत छलाह आ ओकरा देखार करऽ मे आनन्दक अनुभव करैत छलाह । ओकर छद्म रूप पर चढ़ल मर्यादाक लेप केँ अपन असाध्य व्यवहारक 'पेट्रोल' सँ साफ कऽ, असली रूप सँ लोक केँ परिचित कराबऽ चाहैत छलाह ।

एतय दू - एकटा प्रसंगक उल्लेख आवश्यक ।

कलकत्ताक कोनो मैथिल संस्था द्वारा दिगम्बर जैन विद्यालयक सभागार मे 'विद्यापति पर्व' मनाओल जा रहल छल । बाहर सँ मायानन्द मिश्र आ प्रवासी केँ बजाओल गेल छलनि । हमरो बजाओल गेल किन्तु, राजकमल केँ बजाओल जाय अथवा नहि, एहि पर घमर्थन चलि रहल छल । हम निमंत्रण - पत्र आनऽ वला स्वागत समिति क ओहि सदस्य केँ राजकमल जी केँ बजयबा मे असौकर्यक कारण पुछलियनि । ओ कहलनि–'जे राजकमल जी स्थानीय कवि भइयो केँ पाइ मङैत छथिन । सङहि मंच पर कोन रूप मे उपस्थित होयताह से नहि क्यो कहि सकैत अछि ।' हम कहलियनि– 'पाइ तऽ हमहुँ बिना नेने नहि जायब आ राजकमल जी औताह तखनहि जायब । नीक हो जे निमंत्रण - पत्र घुरा केँ नेने जाउ ।' ओ कनेक काल दुविधा मे पड़ल रहि, पत्र हाथ मे लऽ, 'साँझ फेर आयब' कहि विदा भऽ गेलाह ।

साँझखन ओ दू - तीन आओर मैथिल बन्धुक सङ डेरा पर उपस्थित भेलाह। कहलनि— 'राजकमल जी केँ हकार पठा देल गेल छनि आ ओ काल्हि सम्मेलन मे अयबा केर स्वीकृतियो दऽ देने छथि एवं अहाँक लेल ई पुरजी देने छथि ।

दोसर दिन नियत समय पर हम सभागार पहुँचैत छी । ज्ञात होइत अछि, राज-कमल जी आबि चुकल छथि एवं बगल वला कोठरी मे मंच पर पढ़क लेल कविता लिखि रहल छथि ।

हम ओहि कोठरी मे प्रवेश करैत छी, ओ गंजी पहिरने, कान्ह पर 'तौलिया' रखने सिकरेट पीबि रहल छलाह । हम चरण - स्पर्श कऽ पुछलियनि— 'भाइ साहेब, भोजन कऽ केँ आयल छी ?' कहलनि— 'भोजन पर सँ उठि केँ हाथ पोछैत सोझे एतहि आयल छी ।'

हम सोचऽ लगलहुँ– ई गंजी पहिरने, तौलिया रखने 8/10 मीलक यात्रा कऽ केँ एतय ओहिना आबि गेल छथि, जेना क्यो अचानके आँगन सँ दरबज्जा पर आबि जाइत अछि । सुनने रही जे किछु वर्ष पूर्व निराला जी केँ सम्मानित करऽक लेल कलकत्ता बजाओल गेल छलनि । ओ ओहि समय मे अल्पकालिक विक्षिप्तताक अवस्था मे छलाह। जखन - तखन 'दौरा' पड़ि जाइत छलनि । लुङी पहिरने उघारे देह 'मंच' पर आसीन छलाह आ सभाक बिच्चे सँ उठि केँ सड़क पर आबि दहाड़ऽ लागल छलाह । राजकमल महान 'जीनियस' छथि से तऽ बुझल छल किन्तु, निराला जकाँ कखनहुँ विक्षिप्त वला आचरण करऽ लगैत छथि–से ओहि दिन बुझल ।

मंच पर साहित्यकार आ अतिथि आबि चुकल छलाह । श्रोता सभ मायानन्द एवं प्रवासीक गीत सुनबाक लेल उताहुल होमऽ लागल छल ।

राजकमल जी कोठरी सँ बहराइत छथि । सभ ज्येष्ठ - श्रेष्ठ केँ हाथ जोड़ैत एक कात मे बैसि जाइत छथि । 'माइक' पर हुनक नाम लेल जाइत छनि । ओ ओहिना गंजी पहिरने आ तौलिया कान्ह पर नेने माइक लऽग जाइत छथि, किछु बजैत छथि आ लगले आबि केँ बैसि जाइत छथि । ओ सभापति आ श्रोता केँ सम्बोधित कयलनि आ कि कविता सुनौलनि– केओ नहि बूझि सकल । हमहुँ नहि । कहलियनि— 'भाइसाहेब, अपने सँ कविता सुनयबाक अनुरोध कयल गेल छल ।' ओ कहलनि— 'जे बजलियैक ओ कविता नहि रहैक तऽ की छलैक !' आ लगले बसक टिकट पर लिखल चारि पाँति देखा देलनि ।

ओ मंच पर सँ हमरा नेने विदा होइत छथि हमरा डेरा पर सँ होइत राजेन्द्र छात्र - निवास (जतय ओहि समय मे डा. सूर्यदेव शास्त्री रहैत छलाह) पहुँचैत छथि । संयोगवश सूर्यदेव शास्त्रीक चौकी खाली रहनि । टेबुल पर एक लोटा पानि राखल रहनि । हम कहलियनि–'सूचनार्थ एकटा पुरजी लिखि केँ एतय छोड़ि देल जाय ।' ओ कहलनि – 'लोटा वला पानि चौकी पर गिरा दहक । भीजल ओछाओन देखि शास्त्री अपनहि बुझि जायत ।'

ओहि दिन भाइसाहेबक सङ हम दुपहर सँ 8-9 बजे राति धरि रही । हुनका बस मे चढ़ा केँ डेरा घुरल रही । ने ओ पीने रहथि आने कोनो अन्य कारणेँ असामान्य छलाह ।

दोसर दिन गत दिवसक आयोजनक वर्णन करैत किछु मैथिल बन्धु केँ कहैत सुनलियनि – 'समारोह आओर भव्य होइतए जँ राजकमल पीबि केँ नहि अबितथि । एतबे नहि, सुनऽ मे आयल, लोक सभ बतिआइत छलाह, राजकमल निशाँ मे ततेक ने निभेर छलाह जे एक्को पाँति बाजि नहि भेलनि । श्रोता केँ बसक टिकट देखा केँ बैसि गेलाह । एतेक बेसम्हार छलाह जे कीर्त्तिनारायण अपन डेरा पर, पिताक डरेँ नहि गेलथिन । राजकमल राजेन्द्र छात्र-निवास जाकऽ सूर्यदेव शास्त्रीक ओछाओन पर रद्द कयलनि आ सौंसे कमराक हालति खराब भऽ गेलैक ।'

हम ने एहि कथाक (जे बाद मे दन्त कथा भऽ गेलैक) प्रतिवाद कयलिऐक आ ने करब आवश्यक बुझलिऐक । राजकमलक सम्बन्ध मे एहन सैकड़ो - हजारो कपोल-कल्पना आ अफवाह केँ हुनक जीवन - चर्या मानि लेल गेल छलनि । राजकमल जीं कहियो एहि तरहक अदगोइ - बदगोइक परबाहि नहि करैत छलाह । स्वयं ओहि सभक रस लऽ, अपन स्वीकृतिक मोहर लगा दैत छलाह, ओकरा सभ केँ सत्य घटना कहि केँ अपन चरित्र मे जोड़बा लैत छलाह ।

राजकमल जीक अपन व्यक्तित्व आ चरित्रक प्रति ई उदारता आजन्म बनल रहलनि। एहि घटना केर निराधारात्वक हम स्वयं साक्षी रही । हम कोना मानि ली जे हुनक स्वीकृति प्राप्त सभ लांछन सत्ये रहय ।

तेसर दिन भेंट भेला पर राजकमल जी सँ हुनक ओहि दिनक अनपेक्षित व्यवहारक मादे कहलियनि । ओ हँसऽ लगलाह— 'यही तो मैं चाहता था । इन बुद्धिहीनों को कुछ बोलने - बतिआने का मसाला चाहिये । मैं उन्हें परोस कर जीवित रखता हूँ—यह

क्या मेरी कम मैथिली-सेवा है !' एहि प्रसंगक एतय उल्लेखक हमर मंशा ई सिद्ध करब नहि, जे राजकमलक सम्बन्ध मे सभ उड़न्ती (अफवाह) निराधार अथवा कपोल - कल्पित छल। ओ की खाइत छलाह, कतेक पीबैत छलाह, कोना अस्वाभाविक आचरण करऽ लागथि, कतेक फूसि बाजैत छलाह, ककरा अपमानित कऽ देलथिन—हुनक समसामयिक, सामाजिक आओर साहित्यिक मित्र एहि सभ चर्चा मे बेशी लीन रहैत छलाह। अधिकांश हुनक प्रतिभा, लेखन - क्षमता आ साहित्यिक उपलब्धिक प्रति ईर्ष्यालु छलाह, तें प्रायः बिनु देखने हुनका चरित्र सँ एकटा 'तिल' लऽ कें ठाम - ठाम पहाड़ ('ताड़' नहि) ठाढ़ कऽ दैत छलाह। राजकमल कें एहि सभक लेल एक्को रत्ती शिकाइत नहि छलनि। उनटे ओ प्रसन्न होइत छलाह, जे देश - कोसक सूतल लोक हमरो नाम पर भुनभुनाइत तऽ रहैत अछि।

दोसर प्रसंग हमरा सङ हुनक व्यक्तिगत सम्बन्धक अछि आ हुनका प्रति हमर पूज्य पिता केर धारणा पर आधारित अछि।

1957 - 58 मे कलकत्ताक अखिल भारतीय मिथिला संघक अध्यक्ष छलाह पंडित श्री महावीर झा आ प्रधान मंत्री छलाह हमर पिता पण्डित दिनेश मिश्र। ओहि वर्ष हावड़ा सँ बरौनी जाइ वला 'नौर्थ बिहार एक्सप्रेस' क नाम हिनकालोकनिक अथक प्रयास सँ 'मिथिला एक्सप्रेस' राखल गेल छलैक। एहि खुशी मे विद्यापति पर्व आओर समारोहपूर्वक मनाओल गेल छल। 'मिथिला दर्शन' नियमित रूप सँ बहराइत छल। ओकर कर्त्ता - धर्त्ता श्री बाबूसाहेब चौधरी छलाह। व्यय - भार संभवतः मिथिला संघ वहन करैत छल। सम्पादक मे आन व्यक्तिक नाम रहितहुँ, राजकमल जी केर पूर्ण सहयोग ओकरा प्राप्त छलैक। एहि सभ क्रम मे ओ हमर पिता केर सम्पर्क मे अयलाह। ओ हुनक हिन्दी मैथिली रचना केर पाठक - प्रशंसक होइतहुँ हुनका प्रति अप्रसन्न रहऽ लगलाह। हमरा सँ हुनक साहित्यिक मैत्री (व्यक्तिगत साक्षात्कार होमऽ सँ पूर्वक) अज्ञात नहि छलनि किन्तु, हमरा सँ ओ आओर क्षुब्ध रहैत छलाह।

संयोगवश हमरो ओहि शहर (कलकत्ता) मे आबि कें नोकरी करऽ पड़ल, जतय पहिनहि सँ राजकमल जी विराजमान छलाह। फरैल केर तीम पर चढ़ब हमर पिता कें आओर सशंकित कऽ देलकनि।

पिता जीक उपस्थिति मे राजकमल जी जहिया कहियो हमरा डेरा पर अबैत छलाह, श्रद्धापूर्वक हुनक चरण - स्पर्श करैत छलथिन आ बेशी काल हुनके सँ बतिआइत रहैत छलाह मुदा, एहन कोनो दिन नहि होइत छल जहिया हमर राजकमल जीक सङ बहराइत देखि ओ अस्त - व्यस्त नहि भऽ जाइत छलाह। हुनका मुँह सँ एक्को टा शब्द नहि बहराइत छलनि किन्तु, हुनक परिवर्त्तित भंगिमा सभ किछु कहि दैत छल।

राजकमल जी कें ई बात नीक जकाँ बुझल छलनि तथापि हुनका हमरा ओतय बेर - बेर अयबा मे कष्ट नहि होइत छलनि। उनटे ओ हमरा बुझबैत छलाह, 'जहाँ तक हो उन्हें प्रसन्न रखने की कोशिश करो। बड़े पहुँचे हुए विद्वान और सहृदय व्यक्ति हैं। तुम से अधिक आधुनिक विचार के हैं लेकिन, उनका अभिजात्य और पाण्डित्य नयी पीढ़ी के तेवर को बर्दाश्त नहीं कर पाता है। मैं उन्हें तुमसे अधिक जानता हूँ, इसलिए उन्हें

बर्दाश्त करने की आदत - सी हो गयी है।'

हमर पिताक प्रति ई सहनशीलता ओहि राजकमल कें छलनि जे अपन पिता कें कहियो बर्दाश्त नहि कऽ सकलाह।

राजकमल जी प्रायः अस्वस्थ रहऽ लागल छलाह। ओ पटना चलि गेलाह। बीच-बीच मे कलकत्ता आबथि। हम प्रारम्भक दू - अढ़ाइ वर्ष मे अपन पिताक सङ 147, कॉटन स्ट्रीट मे रहैत रही। नहि - नहि करितहु हप्ता मे एकाध दिन ओतय साहित्यकारक भीड़ जुटिये जाइत छल।

हिन्दीक लघु पत्रिका– 'परिवेश' क योजना बनल। चारि अंक बहरा गेल किन्तु, राजकमल जीक कोनो रचना नहि प्राप्त भेल।

एक दिन डा. नामवर सिंहक अध्यक्षता मे हमरा डेरा पर एकटा गोष्ठीक आयोजन भेल। हिन्दीक पहिल लघु पत्रिका 'परिवेश' मे छपल कुमारेन्द्र पारसनाथ सिंहक कविता केर भूरि - भूरि प्रशंसा कयने छलाह। दुर्भाग्यवश प्रकाशन - व्यय आ अपेक्षित सहयोग नहि जुटा सकबाक कारणें 'परिवेश' बन्न होइ पर छल। ओहि क्रम मे ककरो मुँह सँ राजकमल जीक नाम बहरायल आ तखनहि बाबूजी पहुँचि गेलाह। सामान्य शिष्टाचारक बाद नामवर जी गोष्ठीक प्रसंग बदलि हुनका लग कालिदासक साहित्यक सम्बन्ध मे अपन किछु जिज्ञासा रखलथिन। बाबूजी बड़ी काल धरि कालिदास पर बाजलाक बाद, राजकमल आ हुनक सद्यः प्रकाशित कोनो हिन्दी रचनाक मादे चर्चा उठा देलनि। हमरा नहि ज्ञात छल जे राजकमल जीक नाम लितहि भड़कि उठऽ वला बाबूजी हुनक रचना सभ कें एतेक गम्भीरता सँ पढ़ैत छथि आ एहन नीक धारणा रखैत छथि।

19 जून 1967 कें राजकमल जीक मृत्यु भऽ गेलनि। हम कलकत्ता मे छलहुँ, हमर पिता गाम मे छलाह। माय आ पत्नी सेहो ओतहि छलीह। सुनऽ मे आयल जे आकाशवाणी पटनाक स्थानीय समाचार मे हुनक मृत्युक सूचना देल गेल छल। समाचार सुनितहि बाबूजी अचेत भऽ गेल छलाह। जाहि बेटा कें ओ 'आवारा' कहि डटैत रहैत छलाह (आ ओ आँखि झुकौने हँसैत रहैत छलनि) ओकरा लेल आइ कनैत - नोर बहबैत, हमरा सँ सम्पर्क करऽक लेल छटपटाइत छलाह।

राजकमल जीक अव्यवस्थित जीवन, स्वेच्छाचारिता, निशा-सेवन, स्वास्थ्यक उपेक्षा, रोगाक्रान्त भऽ गेलाक बादो अवसर भेटितहिं कुसंयम मे स्वास्थ्य जोहबाक प्रवृत्ति आदिक प्रति, अत्यन्त क्षुब्ध - क्रूर रहितहुँ, बाबूजी अपन एहि 'आत्महंता' (हुनकहि शब्द मे) युवकक विलक्षण प्रतिभा आ लेखन - क्षमता सँ परिचित छलाह किन्तु, हुनका अभाव मे स्त्री आ छोट - छोट धीआपुताक समक्ष उत्पन्न समस्याक कारण कहियो हुनका ओ क्षमा नहि कयलनि।

रोग सँ मुक्तिक लेल संयम आवश्यक होइत छैक। राजकमल जी कें कोनो संयम - नियम स्वीकार नहि छलनि। अपन दिनचर्या आ आदति कें यथावत राखि ओ स्वस्थ होमऽ चाहैत छलाह। तन्त्र, दैवीशक्ति एवं उग्रताराक प्रति आस्था ओही अस्वस्थ शरीर तथा मनोदशा मे जागल छलनि। ओ जिअऽ चाहैत छलाह मुदा,

अपना शर्त्त पर। जाधरि जीबैत रहलाह, जागल रहलाह। निशाँ मे मातल, सूतल, दर्द सँ कराहैत एवं शरीरक कष्टक प्रति सचेत व्यक्ति 'मुक्तिक प्रसंग' नहि लिखि सकैत छल। ओ रोग आ आसन्न मृत्युक अन्तिम परिणाम सँ नीक जकाँ परिचित छलाह। आजीवन दुन्नू केर दोहन करैत रहलाह। अस्पताल, चिकित्सा आओर ऑपरेशन कें निर्मम तटस्थता सँ देखैत, शासन, व्यवस्था, देहगति, रोग एवं मृत्युक केहन शल्य-चिकित्सा 'मुक्ति प्रसंग' मे कयलनि – ई सर्वज्ञात अछि।

'मुक्तिप्रसंग' ओ अपनहि छपौने छलाह। ओकरा ओ विज्ञापन आ प्रशस्ति नहि भेटलैक जे भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा 'मुक्तिबोध'क मरणोपरान्त प्रकाशित पहिल काव्य-संकलन 'चांद का मुँह टेढ़ा है' कें भेटलैक। तथापि निराला, मुक्तिबोध, राजकमल आ धूमिल समान परिस्थिति आ मनोदशा केर महान कविक रूप मे सम्पूर्ण हिन्दी जगत मे प्रतिष्ठित छथि।

नागार्जुन, फणीश्वर नाथ रेणु आदि किछु अपवाद कें छोड़ि कें बिहारक साहित्यकारक प्रति हिन्दी जगत तथा अपन राज्य मे उपेक्षा भाव रहैत छैक। प्रकाशन, प्रोत्साहन, सम्मान आ पुरस्कारक कथे कोन, जखन बिहारमे छपल हिनकालोकनिक पोथी बाहर मे पढ़ल - पढ़ैलो कम्मे जाइत अछि। चर्चा - विश्लेषण तथा समीक्षा - आलोचनाक बेर मे सभ कें विस्मृत कऽ देल जाइत छनि।

सेठ एवं प्रकाशक बिहार कें पोथी बेचऽक लेल एकटा नीक बाजार सँ बेशी महत्व नहि दैत छथि – एतय नीक - अधलाह सभ तरहक पोथी बिका जाइत छैक। पाठक, विद्यार्थी वर्ग, शिक्षण संस्था, पुस्तकालय, सरकार सभ हुनक ग्राहकक श्रेणी मे अबैत छथि। से हुनका सभ लग पहुँचि ओलोकनि व्यावसायिक लाभ कमा लैत छथि किन्तु, लेखक जोहऽक लेल दिल्ली, उत्तरप्रदेश आ मध्यप्रदेश चलि जाइत छथि। भारतक प्रकाशन मंच पर बिहारक लेखक कें नायक रूप मे नहि, सिपाही बना कें ठाढ़ राखल जाइत छनि।

राजकमल जी एहि विडम्बना कें नीक जकाँ बुझैत छलाह। ओ अपन जीवन आ लेखनक अल्प अवधि मे अपना सोझाँ ठाढ़ ओहि देवार कें तोड़ऽक आप्राण चेष्टा करैत रहलाह। सफलता कतेक भेटलनि, ई हुनका ज्ञात छलनि तथापि प्रत्येक व्यूह पर आक्रमण करैत रहलाह।

ओ सभ कुचक्रक अन्त नहि कऽ सकलाह किन्तु, ओहि मध्य सँ एकटा चतुर योद्धा जकाँ बहार भऽ राष्ट्रीय स्तर पर साहित्यिक प्रतिष्ठा प्राप्त कऽ लेलनि। राजकमल बिहारक छलाह, ई बहुत लोक कें हुनक मृत्युक बाद ज्ञात भेलैक। मृत्यु सँ किछु वर्ष पहिनहि सँ हुनक रचना आ पत्र मे पटनाक पता रहैत छलनि।

ओ अपन रोग आ अस्वस्थता कें विज्ञापित कयलनि आ करबौलनि। हुनक किछु अन्तरंग एवं तथाकथित मित्र, एकरा हुनक धूर्त्तता केर संज्ञा दैत छलाह। हुनक आरोप छलनि, राजकमल रोग आ चिकित्साक नाम पर पीअऽ आ पाइ जमा करऽक लेल हिन्दी पत्र - पत्रिकाक माध्यम सँ अपन पाठक एवं शुभचिन्तकक संवेदना भजा रहल छथि। किन्तु, पाठक - शुभचिन्तकक वर्ग 'मुक्तिबोध'क प्रति मध्यप्रदेश सरकार आ तत्कालीन

प्रधानमंत्रीक संवेदना आ उदारता देखि चुकल छल। ओकरा लेल राजकमलक उपेक्षा असह्य भऽ गेलैक। व्यक्तिगत स्तर पर सभ चिन्तातुर भऽ सहयोग राशि पठबऽ लागल। साहित्यिक संस्था सभ सेहो सहयोग करऽ लागल।

हुनक ओ मित्र - वर्ग, जे हुनका नाङट - उघाड़ आ ताड़ी - दारू पीबैत देखने छल, ईर्ष्या सँ भरि उठल। हुनका लेल राजकमल बनगाँव - महिषी वासी, सचिवालयक किरानी, 'पूरब' (कलकत्ता) जाय, कमाइ वला एकटा व्यक्ति आ एकटा समकालीन कवि-कथाकार सँ बेशी नहि छलाह।

किछु मित्र एहनो छलथिन जे हुनका ठक (फ्रॉड) कहैत - मानैत रहथिन। पत्र-पत्रिका मे हुनक चिकित्साक लेल निरन्तर बहराइत 'आर्थिक सहयोगक अपील' केर ओ लोकनि खंडन - विरोध प्रकाशित करबैत रहथिन।

बेरामीक नाम पर जमा गेल राशि सँ अस्पताल सँ बहरयलाक बाद, गाम मे रहक लेल ओ एकटा टाट - खड़क घर ठाढ़ करबा लेने छलाह। तथाकथित मित्र सभ हुनक एहि 'फरेब' कें कोना सहन करितथि – हुनका 'कठघरा' मे ठाढ़ कऽ देल गेलनि। मृतप्राय राजकमल कें जून 1967 मे महिषी सँ पटना लऽ जायब सभक लेल असह्य भऽ गेलनि। जँ जीबितथि तऽ 'मुक्तिप्रसंग'क कवि 'मित्रप्रसंग' अवश्य लिखितथि।

राजकमल जीक विशाल मित्रमंडली मे किछुए एहन व्यक्ति रहथि, प्रायः सभ बिहारक। देशक आन भागक साहित्यिक मंडली मे हुनक आर्थिक दशा सुधारऽ आ चिकित्सा कराबऽ लेल अप्रत्याशित सक्रियता छल। डा. रामकिशोर द्विवेदी, कमलेश्वर, मनमोहिनी, चन्द्रमौलि उपाध्याय, हंसराज आदि द्वारा कयल गेल सेवा सँ राजकमल जीक सभ शुभचिन्तक परिचित छथि। किन्तु, आनो अनगिनती मित्रक सहयोग - सहानुभूति हुनका भेटलनि।

राजकमल जीक हिन्दी - मैथिली लेखन पर प्रश्नचिह्न लगयबाक साहस किनको नहि भेलनि। आइयो नहि छनि। ओ 'स्वीकृत' भऽ सकैत छलाह 'अधिकृत' नहि। ई हुनक अहंकार छलनि। ओ आगाँ लिखने रहथि —

'मृत्यु राजकमल चौधरी कें प्रभावित नहि करैछ, किएक तऽ मृत्युक आतंक एतेक दयनीय होइछ, भयानकता एतेक स्वाभाविक आ रहस्यहीन होइछ जे देहगतिक एक साधारण औपचारिकता सँ अधिक मानबाक कहियो इच्छा नहि होइछ।'

(राजकमल स्मृति अंक, आखर, पृष्ठ 118)

प्रकाशित— मिथिला मिहिर : अगस्त 1988

हमर अग्रज आ सहयात्री सोमदेव

ओहि समय मे श्री (पछाति प्रो.) मायानन्द मिश्र पटना आकाशवाणीक चौपाल मे काज करैत छलाह आ हम पटना कॉलेज मे पढ़ैत छलहुँ। हुनक 'बिहाड़ि पात पाथर' छपले छलनि आ ओहि सँ किछुए मास पूर्व राजकमलक 'आदिकथा' प्रकाशित भेल छल।

ताधरि हम प्रायः मैथिली मे नहिए जकाँ लिखैत छलहुँ। दू - चारिटा कविता संभवतः छपल हैत। तथापि कलकत्ताक 'मिथिला दर्शन' क लेल ओहि दुनू पुस्तक पर समीक्षात्मक निबन्ध लिखबाक दायित्व देल गेल। आग्रह करऽ वला छलाह पितातुल्य श्री बाबूसाहेब चौधरी एवं किछु अन्य स्थानीय साहित्यिक अग्रज।

लेख 'मिथिला दर्शन' मे छपल, मुदा ओकर अस्थि आ पाँजर बहार कऽ देल गेल छल। एहि दुनू उपन्यासक अतिरिक्त आन - आन उपन्यासं सभक प्रसंगवश जे थोड़ बहुत उल्लेख भेल छल, तकरा काटि देल गेल छल। भेंट भेला पर, पत्रक सम्पादक प्रो. प्रबोध नारायण सिंह कहलनि जे —'स्थानाभावक कारण किछु अंश काटऽ पड़ल।'

राजकमल आ मायानन्द मिश्र केँ लेख खूब नीक लगलनि (भऽ सकैत अछि प्रथम गद्य - प्रयास बूझि प्रोत्साहित करऽक लेल प्रशंसा कऽ देने होथि) मुदा, सोमदेव जी क्रुद्ध भऽ गेलाह। हुनक 'चानोदाय'क मात्र उल्लेख छलनि लेख मे।

हमर अग्रज प्रो. (डा.) हरिनारायण मिश्र सँ हुनक मैत्री छलनि। रचनाक माध्यम सँ हमहुँ हुनका चिन्हैत छलियनि, किन्तु व्यक्तिगत परिचय नहि छल। माया बाबूक माध्यम सँ हुनक आक्रोशक मादे जानलहुँ तँ अपराध-बोध भेल। पछाति चौपालक कोनो सम्मेलन मे भेंट भेल तऽ अपन अज्ञान, समीक्षाक सीमित क्षेत्र आ लेखक सङ कैल गेल सम्पादकीय अत्याचारक मादे कहलियनि तऽ ओ स्नेह आ अपनत्व सँ भरि कऽ 'कोनो बात नहि' कहि प्रसंग बदलि देलनि।

ई संयोग आकि हमर दुर्भाग्य जे अपन दीर्घ परिचयक अवधि मे लेखन, वक्तव्य आ व्यवहार सँ हुनका बेर - बेर आहत आ क्रुद्ध करैत रहल छियनि आ ओ आइ धरि 'कोनो बात नहि' कहि प्रसंग बदलैत रहलाह अछि।

यद्यपि 'कालध्वनि'क अधिकांश कविता 'स्वरगन्धा'क कविता सँ पहिने लिखल गेल छल आ सोमदेव जी राजकमल जी सँ पहिने कविताक क्षेत्र मे चर्चित - प्रतिष्ठित भऽ चुकल छलाह, मुदा संकलनक रूप मे 'स्वरगन्धा' 1958 मे आ 'कालध्वनि' 1965 मे छपल। प्रयोगधर्मिता आ आधुनिक बोधक दृष्टि सँ सेहो 'स्वरगन्धा' केँ पर्याप्त मान्यता भेटलैक। आधुनिक कविताक विकासक क्रम मे 'चित्रा'क बाद 'स्वरगन्धा' कीर्तिमान स्थापित कयलक आ राजकमल केँ नव कविता केर सूत्रधारक रूप मे चर्चित - विश्लेषित कैल जाय लागल। सोमदेव जी एकरा ऐतिहासिक भूल मानैत रहलाह।

'कालध्वनि'क प्रस्तावना मे ओ सहजतावादक स्थापना कैलनि, जकर उल्लेख हम 'सीमान्त' (1967) क भूमिका मे कैने रहियनि। हुनका आपत्ति भेलनि जे नवकविता मे हुनक क्रान्तिकारिता आ योगदान केँ हम न्यून कऽ - कऽ देखलियनि। रचनाक प्रकाशन काल केँ ध्यान मे राखि हुनक वरिष्ठता स्थापित नहि कऽ सकलियनि। हमर

बहुतरास मान्यता सँ ओ असहमत भेलाह, जे नितान्त स्वाभाविक छल। भूमिका केँ फरिछाबऽ आ अपन घनिष्ठ मित्र सोमदेव, हंसराज, गंगेश गुंजन आदिक किछु आपत्ति केँ ध्यान मे राखि हम 'नव लेखन, अकविता आ रचनादायित्व' लिखने छलहुँ जे 'आखर' क दिसम्बर 1968 अंकक सम्पादकीय मे छपल छल।

सैद्धान्तिक मतभेद रहितो हुनक व्यवहार आ पत्राचार मे कनियों अन्तर नहि आयल। हमरा आ 'आखर' केँ ओ अकुण्ठ स्नेह - सहयोग दैत रहलाह। 'आखर' क प्रत्येक अंकक प्रकाश्य सामग्री, प्रचार, विक्रय, विज्ञापन - व्यवस्था सभक चिन्ता हुनका रहैत छलनि। मित्र सभ केँ सहयोग देबऽक लेल ओ बाध्य करैत रहैत छलाह।

'आखर'क 'राजकमल स्मृति अंक' बहार करऽ काल हम किसुन जी, सोमदेव आ जीवकान्त सँ परामर्श मङलियनि। घुरती डाक सँ सोमदेव जी एकटा प्रारूप बनाकऽ पठा देलनि। मैथिली पत्र - पत्रिकाक लेल नीक रचना भेटबे कठिन, ताहू मे कोनो योजनानुसार रचना लिखायब तँ प्रायः असंभव। प्रस्तावित लेखक आ राजकमलक मित्र सभ केँ आग्रह कैल गेलनि आ राजकमलक सम्पूर्ण व्यक्तित्व एवं कृतित्व केँ ध्यान मे राखि प्रारूप केँ संशोधित - परिवर्त्तित कऽ 'आखर' मे छापि देल गेल।

दिन - सप्ताह - पक्ष - मास बीतऽ लागल। पत्र आ टेलीग्राम पठबैत - पठबैत थाकि गेलहुँ। जून बीत गेल। राजकमलक पहिल पुण्यतिथि पर स्मृति - अंक बहार करऽ केर हमर संकल्प आ स्वप्न पूर्ण नहि भऽ सकल।

सोमदेव जी केँ लिखलियनि। ओ लिखलनि 'निराश नहि होउ, रचना लिखाबऽ आ आनऽक लेल दरभंगा - पटना दौड़ू।'

दू मास मे तीन - चारि बेरक यात्राक बाद किछु लेख, संस्मरण आ राजकमलक किछु अप्रकाशित रचना (हुनक अनुज श्री सुधीर कुमार चौधरीक सौजन्य सँ) प्राप्त भेल। जून 1968 मे प्रकाशित होमऽ वला स्मृति-अंक सितम्बर 1968 मे प्रकाशित भेल। सम्पूर्ण आयोजन आ कार्य - सम्पादन मे लगैत रहल- किसुनजी, सोमदेवजी आ जीवकान्त जी कतेक सय कोस दूर रहितो हमरा लऽगे मे छथि आ वीरेन्द्र मल्लिक कलकत्ता मे रहितो, हजारो कोस दूर विदेश चलि गेल छथि।

सोमदेवजी वयस आ लेखन मे ज्येष्ठ - श्रेष्ठ होइतो सम्पर्क मे आबऽ वला नवतुरिये केँ नहि, नवसिखुओ केँ अनुभव करा दैत छथि जे ओ कतेक महत्वपूर्ण अछि आ मैथिली केँ ओकर लेखन आ सक्रिय सहयोग केर कतेक प्रयोजन छैक। ओकर कविता, कथा, लेख केँ सुधारब अथवा फेर सँ लिखब, छपायब आ छपि गेलाक बाद अपन मित्र सभ केँ पत्र लिखि कऽ प्रतिक्रिया व्यक्त करऽक लेल बाध्य करब ओ अपन दायित्व बुझैत छथि। नव सँ नव रचनाकारक रचना मे कनियों रचनात्मक विशिष्टता देखि ओ ओकरा चर्चाक विषय बना दैत छथि। हुनक ई विलक्षण गुण आ सहृदयता हमरा शुरू सँ प्रभावित करैत रहल अछि।

ओ नित नवीन प्रयोग करैत छथि। व्यक्तिगत जीवन, व्यवहार आ लेखन तीनू मे अपन अद्यावधिक साहित्यिक जीवन मे ओ बहुतरास पत्र - पत्रिका बहार कैलनि, अनेक

विधा मे लिखलनि आ अनेकानेक कवि - लेखक केँ तैयार कैलनि ।

तहिया फजलुर रहमान हाशमी मैथिली मे लिखब शुरूए कैने छलाह । दू - एकटा रचना छपल छलनि । कोन पत्रिका मे कोन रचना छपल छनि, एकर बिना उल्लेख कैने सोमदेव जी हमरा सँ हुनक रचनाक सम्बन्ध मे प्रतिक्रिया माङलनि । हम दुविधा मे पड़ि गेलहुँ । कलकत्ता मे कोनो एहन स्थान वा मित्र नहि छल जतऽ सभ नव - पुरान पत्र - पत्रिका एक ठाम भेटि जाय । वीरेन्द्र मल्लिक, पीताम्बर पाठक आ राजनन्दन लाल दास केँ पुछलियनि, किन्तु कोनो थाह - ठेकान नहि भेटल । संयोगवश ओहि मध्य 'मिथिला मिहिर'क नवका अंक आबि गेल, जाहि मे हाशमीक एकगोट कविता छपल छलनि । हम तत्काल ओहि पर अपन प्रतिक्रिया लिखि सोमदेव जी केँ पठा देलियनि । किन्तु, ओ हमर होशिआरी बूझि गेलाह आ हमरा डाँटैत लिखलनि जे 'हमर अभिप्राय हाशमीक अमुक कविता सँ छल । लगैत अछि नवका लेखकक पता लगायब आ ओकर रचना देखऽ - पढ़ऽ दिस तोहर ध्यान नहि रहैत छह ।'

अनुभव, साहस, कौशल आ क्षमताक धनी सोमदेव जी आनक बनैल रस्ता पर नहि चलैत छथि । रस्ता बनबैत चलैत छथि अथवा हिनका चलला सँ रस्ता बनि जाइत अछि । नेपाल सँ आसाम धरिक यात्रा करऽ वला व्यक्ति केँ कतेक ठाम हिनक बनाओल साहित्यक रस्ता भेटि जाइत छैक । पशुपतिनाथ सँ कामरूप - कामाख्या धरि हिनक बनाओल तन्त्र - मार्गी पर चलऽ पड़ैत छैक । ओ सोमदेवी सिद्धि - यात्रा कऽ सकैत अछि । यात्री केँ मुट्ठीवला कागत घुर - घुराह लगैत छैक, जँ ओ रोगी अछि तऽ ओकर अजोह घाव सँ बिनु ऑपरेशने पीब बहऽ लगैत छैक । खैनी - भांङ - गाँजा सँ लऽ कऽ सुन्नरि स्त्री धरि ओकरा सहजे भेटि जाइत छैक । ओ जँ कवि अछि तऽ कविता लिखब छोड़ि, किताब बेचऽ लगैत अछि आ जँ पोथीक विक्रेता अछि तऽ ओ ओकरा गोदाम मे बन्न कऽ भोजनालय फोलि दैत अछि ।

सोमदेव जीक व्यक्तित्व बहुधंधी आ बहुआयामी छनि, दुर्दान्त कल्पनाशील । ओ किछु काल मे अहाँ केँ केरियर आरम्भ करऽ, बिजनेस शुरू करऽ, कल- कारखाना खोलऽ, पत्र - पत्रिका बहार करऽ, वितण्डा ठाढ़ करऽ, कॉलेज - यूनिवर्सिटी खोलऽ, सभा-समारोहक ओरिआओन करऽ- सभक लेल 'स्कीम' बनाकऽ दऽ देताह । खाली 'स्कीमे' नहि, अहाँक सङ हप्ता - मास धरि बौअयताह आ अपन जेबो सँ सभ खर्च देताह, कतहु बाहर छी तऽ कर्जक व्यवस्था कऽ देताह, सरकारी ऑफिस जाकऽ कार्य - सम्पादन करा देताह आ कोनो सरकारी कर्मचारी अथवा अधिकारी घूस - पेंचक लेल अहाँक काज अटकौने अछि, तऽ कोनो - ने - कोनो वितण्डा ठाढ़ कऽ ओकरा धमकी दऽ अहाँक कागत पर दस्तखत करा हाथ मे थम्हा देताह । हिनक मन्त्रणा सँ जँ अहाँ यूनिवर्सिटी फोलि दी तँ बिना सरकारी मान्यताक परबाहि कैने डिग्री बाँटि सकैत छी । जेल-- जुर्माना भेला पर ओहि सँ मुक्तिक रस्तो देखा देताह । पत्र - पत्रिका बहार करऽ चाहब तऽ निबन्धन, विज्ञापन, गँहिकी, लेखक, रचना सभक व्यवस्था कऽ देताह ।

अहाँ केँ होइत हैत, आजुक युग मे एहन परोपकारी जीव कोना भऽ सकैत अछि ?

अपन घऽर - दुआरि, बाल - बच्चा, नोकरी - चाकरी, रोग - व्याधि सभ केँ बिसरि कऽ एना रने - बने दोसराक लेल के बौआ सकैत अछि ? मुदा हमर बातक सत्यता पर लहेरियासराय सँ पटना - दिल्ली धरि पसरल सोमदेव जीक विशाल मित्र वर्ग केँ कनियों अविश्वास नहि होयतनि ।

लेखन आ प्रकाशनक लेल पैतृक सम्पत्ति बेचऽ वला साहित्यकार मे श्रद्धेय आरसी प्रसाद सिंहक बाद ओ दोसर स्थान रखैत छथि । अभावक सङ हिनक केहन मैत्री छनि, तकर पता वर्षक - वर्ष हिनका सम्पर्क मे रहलो सन्ताँ अहाँ केँ नहि लागत ।

हमरा जनैत सोमदेव जी एकटा काज छोड़िकऽ सभ काज कैने छथि । ओ संभवतः कोनो चुनाव मे नहि ठाढ़ भेल छथि । अपन सभ योजना आ सिद्धान्तक पहिल प्रयोग ओ अपने पर करैत छथि । ताधरि ओहि मे पूर्ण मनोयोग आ सम्पूर्ण शक्तिक सङ लागल रहैत छथि, जा धरि कोनो दोसर योजना ओहि सँ बेशी दमगर - आकर्षक नहि बुझाइत छनि । ओहिना जेना कोनो कलाकार बिनु खयने - पीने भिनसर सँ साँझ धरि, एकान्त स्थान मे बैसि कोनो चित्र बनबैत रहैत अछि आ फिनिसिंग टच देबऽक बेर मे, ठाढ़ भऽ देह सोझ करैत पुनः बनैल चित्र पर 'ब्रश' नहि चला कऽ दोसर 'कैनवास' हाथ मे लऽ लैत अछि । दुर्दान्त रचनात्मकताक ई लक्षण थिकैक । सफलता - विफलताक व्यावहारिक पक्ष पर सृजनरत रचनाकारक ध्यान प्रायः नहियेँ रहैत छैक । जँ कल्पना, विचार आ लेखनक तारतम्य नहि टूटैक, तँ एक रचना लिपिबद्ध होइत - होइत दोसर केँ, दोसर तेसर केँ जन्म दऽ दैत छैक । ई क्रम चलैत रहैत छैक –– भलेँ भाषा आ विधा बदलैत जाय ।

ई रचनात्मक ऊर्जा आ प्रयोगशीलता एक दिस सोमदेव जीक जीवन केँ अनिश्चित अभावपूर्ण आ कष्टमय बनौने रहैत छनि तँ दोसर दिस साहित्य मे हुनका लेल नव सँ नव क्षितिज फोलैत रहैत छनि ।

एकहि उत्सुकता आ तल्लीनता सँ ओ मुसहर - पासीक टोल मे एकसरे जा कऽ ओकर नाचब - गायब (लोकगीत) देखि - सुनि सकैत छथि आ सम्भ्रान्त मित्र - वर्गक सङ 'पंचसितारा' होटल मे बैसि, पश्चिमी धुन आ नृत्यक आनन्द लऽ सकैत छथि । ओ मैथिली मे उर्दू शैलीक गजल एवं पश्चिमी धुनक गीत लिखि गाबि सकैत छथि । बीज-मंत्र वला कविता हुनका सँ सुनि सकैत छी (पढ़ि कऽ ओकरा बूझब कठिन हैत) । कोनो लोकगीत सुनयबा काल ओ अहाँ केँ तेहन ने मुग्ध कऽ देताह जे अहाँ ओकर धुनक मौलिकता धरि पहुँचऽक लेल 'जनपद' जोहऽ चाहब आ से बिना सोमदेव जीक सहयोगेँ नहि प्राप्त हैत । ओना अहाँ चेष्टा कऽ सकैत छी, मुदा हमरा जनैत बहुतरास लोकगीत आ ओकर धुनक सङ - सङ ओकर जनपदो, मात्र सोमदेव जीक कल्पना अछि ।

सोमदेव जी स्वयं ठकैबाक आनन्द लैत छथि, दोसर केँ ठकैत नहि छथि । ओ लोक केँ 'हिप्नोटाइज' करैत छथि– व्यवहार आ साहित्य दुनू सँ । 'हिप्नोटाइज' करब ठकब नहि थिकैक । हुनक व्यक्तित्वक सम्मोहन आ चुम्बकीयता सँ आकृष्ट भऽ लोक हुनका सँ सटल रहैत अछि, तँ एहि मे हुनक कोन दोष ?

'कालध्वनि'क माध्यम सँ सोमदेव जी अपन पाठक केँ 'सहजतावाद'क सात गोट सूत्र देने छलाह। पाठक सूत्र केँ बिसरि 'कालध्वनि' केर कविताक आनन्द लैत रहल, ओकर विवेचन - विश्लेषण करैत रहल आ ओहि सभ मे प्रच्छन्न विराट प्रतिभासँ आश्वस्त भऽ हुनका आगामी रचनाक साकांक्ष प्रतीक्षा करैत रहल।

हुनक 'लाल एशिया' (1954, हिन्दी कविता संकलन) सँ 'चरैवेति' (1983, संगीत नाट्य काव्य) धरिक हुनक काव्य - यात्रा केर अपन विशिष्टता रहल छैक।

श्रद्धेय यात्री जी केँ 'लाल एशिया' पढ़ि, सोमदेवक कविकर्म मे नवदिशा केर संकेत भेटल छलनि।

तहिया सोमदेव जी हिन्दी मे लिखैत छलाह। आइ मैथिली केर प्रथम कोटिक कवि, कथाकार, उपन्यासकार, पत्रकारक रूप मे सम्मानित छथि। संभवतः हिन्दी सँ निराश भऽ आ ओहि मे बड़ बेशी प्रतियोगिता एवं साहित्यिक गोलैसी देखि ओ अपन सम्पूर्ण मनोयोग तथा लेखकीय क्षमता मैथिली मे लगा देलनि।

एतऽ इहो प्रश्न उठैत अछि, जे सोमदेव जी मैथिलीये मे लिखब किएक शुरू कैलनि, भोजपुरी मे किएक नहि ?

भोजपुरी हुनक सम्बन्ध - सम्पर्क, परिवार - कुटुम्ब एवं रुचि - संस्कारक निकट रहनि। ताधरि ओहि मे सुसम्बद्ध लेखनो आरम्भ नहि भेल रहैक। सोमदेव जी बड़ थोड़ परिश्रम सँ अपना केँ सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित कऽ सकैत रहथि।

कोटि - कोटि भोजपुरी भाषी केर एकमात्र साहित्यक आधार छलाह, लोक कवि भिखारी ठाकुर।

ओ घऽर - घऽर, गाम - गाम, नगर - नगर अपन कीर्त्तन - मंडली (लोक ओकरा नाटक मंडली, नौटंगी मंडली सेहो कहैत छलैक) क सङ जाइत छलाह आ अपन गीत, भजन, कीर्त्तन, नाच सँ गरीब - गुरबाक मनोरंजन करैत छलाह। अन्ने केँ ब्रह्म बूझऽ वला गरीब वर्गक बीच रहनिहार भिखारी ठाकुर केँ ई ज्ञात नहि छलनि जे साहित्य की थिकैक, लिखल कोना जाइत छैक आ ओ जे आइ गाबि रहल छथि, ओ भोजपुरीक सिमान केँ नाँघि कालान्तर मे श्रेष्ठतम लोक महाकाव्य सिद्ध हैतैक। नहि बूझल छलनि हुनका – ओ जे गाबि रहल छथि सैह भक्ति, प्रेम आ कविताक मूल आधार थिकैक। ओ तऽ मेला जमा कऽ राखऽक लेल रात्रि - शेष मे पैंजनी बान्हि नचनियाँक रूप धारण कऽ मंच पर ठाढ़ होइत छलाह। तकर बाद !

तकर बाद ने भिखारी ठाकुर रहैत रहथि, ने देखनिहार - सुननिहार ने गान - बजान। सभ बेसुधि, सुन्न, हेरायल। प्रेम आ भक्ति शरीर धारण कऽ भिखारी ठाकुरक रूप मे नाचैत - नाचैत परिवर्तित भऽ जाइत छल-आनन्द आ अश्रुक अथाह समुद्र मे, कविताक असंख्य मोती मे।

सोमदेव जी भिखारी ठाकुर आ भोजपुरीक विशेष निकट छलाह तथापि ओ प्रभावित भेलाह विद्यापति ठाकुर आ हुनक मैथिली सँ। की एकर कारण मात्र मिथिला मे हुनक मातृक होयब थिक, मैथिल परिवेश थिक, मिथिलांचल मे हुनक काज करब थिक ? एहन अवसर तऽ बहुतो लेखक केँ भेटैत छनि। अज्ञेय, मुक्तिबोध सन दू - चारिटा

अपवाद केँ छोड़ि कऽ दोसर भाषा मे प्रवेश करऽक खतरा के मोल लैत छथि ?

कोनो भाषा केँ सीखब आ ओहि मे निष्णात होयब, प्रतिभा आ परिश्रमक बल पर संभव छैक किन्तु, ओकरा सहज अभिव्यक्तिक माध्यमक रूप मे चुनि, ओहि मे अपन प्रतिभाक परीक्षाक लेल छोड़ि देब, कोनो आन्तरिक विवशता, कोनो अदम्य प्रेरणा आ कोनो भावनात्मक प्रतिबद्धतेक कारण भऽ सकैत अछि। एहि प्रश्नक उत्तर तँ स्वयं सोमदेव जी दऽ सकैत छथि।

मैथिली मे सोमदेव जीक पहिल पोथी 'चानोदाय' (सामाजिक उपन्यास) छनि। पश्चाति 'ब्रह्मपिशाच' 'मिथिला मिहिर' मे धारावाहिक छपलनि, जे जासूसी उपन्यास छल।

मैथिलीक पाठक हिन्दीक जासूसी उपन्यास पर ललचायल रहैत छल। ओ तहिया एक टाका मे, 'पॉकेट बुक्स' मे उपलब्ध भऽ जाइत छलैक। मातृभाषाभिमानी सोमदेव जी केँ पाठकक रुचि केँ देखैत आन्तरिक छटपटाहटि भेलनि। हुनके प्रेरणा सँ डा. बी. झा मैथिली मे 'पॉकेट बुक्स'क प्रकाशन प्रारम्भ कैलनि। मैथिलीक प्रथम जासूसी उपन्यास 'ब्रह्मपिशाच' 'होटल अनारकली'क नाम सँ प्रकाशित भेल।

सस्त लोकप्रियताक लेल हमरा हुनक ई प्रयास नहि नीक लागल छल। हम पूछने छलियनि— 'हिन्दी मे जासूसी उपन्यासे नहि, अश्लील साहित्यो प्रकाशित होइत छैक। की अपने ओहू दिशा मे प्रयासरत छी ?' ओ कहने छलाह— 'हमरा अपन पाठक केँ छेकि कऽ रखबाक अछि। जँ सभ किछु मैथिली मे भेटि जयतैक, तँ ओ हिन्दी पोथी किएक कीनत ? मैथिली मे किछुओ छपय, किन्तु छपबाक चाही।'

हम हुनक तर्क, विचार, योजना सभ सँ असहमत छलियनि, किन्तु ओ जे काज सूर मे शुरू कऽ दैत छथि, करिते रहैत छथि। ओना मैथिलीक अधिकांश प्रकाशित पोथी 'पॉकेट बुक्स' अकार छुछुनगर होइत छल किन्तु, पहिल बेर योजनाबद्ध रूपेँ 'पॉकेट बुक्स' तँ हुनके प्रेरणा - सहयोग सँ बहरायल। पहिल जासूसी उपन्यासो संभवतः हुनक 'होटल अनारकली' छल।

मैथिली कविताक तत्कालीन धारा केँ 'सहजतावाद' मे बान्हऽ वला 'कालध्वनि' केर कवि वैदिक - पौराणिक हरिश्चन्द्रोपाख्यानक कथाधार पर 'चरैवेति' लिखलनि जे मैथिलीक पहिल संगीत नाट्य काव्य थिक। समालोचना आ पत्रकारितोक क्षेत्र मे हिनक प्रयास केँ प्रथम कोटिक मानल जाइत छनि।

सभ क्षेत्र मे प्रथम स्नातक 'दावेदार' सोमदेवजी अपन साहित्यिक ऊर्जा आ लेखन-क्षमताक कारण सरिपहुँ मैथिली साहित्यक सर्वोच्च शिखर पर पहुँचि गेल छथि।

सोमदेव जी सँ जहिया सँ परिचय भेल, पटना मे बिताओल प्रारंभिक किछु वर्षके छोड़ि कऽ, हम बिहार सँ बाहर छी। आब तऽ कलकत्तो छोड़ना सतरह वर्ष भऽ गेल। एहि 27/28 वर्षक अवधि मे हुनका प्रतापेँ कहियो नहि बूझि पड़ल जे हम मिथिला सँ बाहर छी। ओ प्रत्येक साहित्यिक गतिविधि, गोष्ठी, सभा, पत्र - पत्रिका आ ओहि सभ सँ सम्बद्ध योजना मे हमरा साधिकार सम्मिलित कऽ लैत छथि। ई बात

दोसर थिक जे भौगोलिक दूरी आ चाकरीगत व्यस्तताक कारण हम हुनक आदेशक पालन मे प्राय: विफल होइत रहलहुँ अछि। समय पर कहियो रचनो नहि पठा सकलियनि। पहिने गाम गेला पर एक बेर लहेरियासराय जाकऽ सोमदेव जी सँ बिना भेंट कैने चैन नहि भेटैत छल। अपन छोट - छोट धीआपुता आ सोमदेव जीक पचीसो पोसल - न्योतल गणक लेल जलखइ - चाह सँ लऽ कऽ भोजन धरिक व्यवस्था मे व्यस्त रहऽ वाली भौजी (कंचनाजी) केर व्यस्तता केँ हम आर बढ़ा दैत छलियनि। जहिया बैसकी ढ़हल नहि छलनि, तहियो हमरा अयला पर बैसकी हुनक शयन - कक्ष मे जमैत छल। कोनो-कोनो बेर बैसकी गोष्ठीक रूप धऽ लैत छल। तखन आगन्तुकक सुविधाक लेल बाहर वला कोठरी मे आबि जाइत छलहुँ। कोनो काज लऽ कतबो समयक लेल ओतऽ गेल होइ, परिवारक सदस्य जकाँ भोजन, जलपान आ रात्रि - विश्रामक लेल ओतऽ आबइए पड़ैत छल। आब भौजी पुतोहु - जमाय वाली भऽ गेलि छथि। व्यस्तता आ दायित्व सहजे बढ़ि गेल छनि किन्तु, एहि देओरक लेल हुनक स्नेह आ आतुरता ओहिना छनि।

1971 - 72 मे सोमदेव जी 'वैदेही'क सौजन्य सम्पादक छलाह। रचना पठयबाक आदेश देलनि। कविता पठा देलियनि। लिखलनि— 'कथा पठाबह।' कथा लिखऽ दिस ने हमर प्रवृत्ति रहय, आ ने ओकरा लेल अपेक्षित समय बहार करब संभव छल। शुरू - शुरू मे कलकत्ता मे 'मिथिला दर्शन'क लेल श्री पीताम्बर पाठक जी जोर दऽ कऽ हमरा सँ कथा (मोसकिल सँ 3-4 गोट) लिखबौने छलाह — से सोमदेव जी केँ ज्ञात छलनि। एकर अतिरिक्त, 'चतुर्थीक राति', 'मसीहा' 'छाहरि' ओ पढ़ने छलाह।

हुनके आदेशेँ आ डरेँ 'समुद्र कन्या' लिखऽ पड़ल छल। हड़बड़ी मे ओकरा जतेक विस्तार देबाक चाही, नहि देने रहिऐक। किन्तु, सोमदेव जी ओकरा छापि कऽ प्रशंसाक पुल बान्हि देने रहथि। हुनके प्रेरणा सँ किछु आर कथा लिखने रही, जे समय - समय पर 'मिथिला मिहिर' मे छपल।

सोमदेव जी नव लेखक - कवि तैयार करिते छथि, पुरानो रचनाकार केँ दोसर विधा मे लिखऽक लेल बाध्य करैत छथि। 'मिथिला भूमि' समाचार - विज्ञापन- प्रधान, दल विशेषक पत्रिका छल, किन्तु ओहू माध्यम सँ ओ कतेक नवतुरिया केँ लेखक बना देलनि।

ओ 1987 मे बिहार राज्य जनवादी लेखक संघ आ बिहार राज्य जनवादी सांस्कृतिक मोर्चाक संयुक्त राज्य अधिवेशनक आयोजन कैने छलाह। उदीयमान रचनाकारक लेल 'चिनगी' मंच द्वारा 'कविता रचना कर्म शिविर'क स्थापना हुनके अदभुत कल्पनाशीलता, कार्यक्षमता एवं सभ केँ संगठित कऽ आगू बढ़ैत रहबाक लेल अवसर देबाक सोच - विचारक परिचायक थिक।

आन - आन भाषा मे 'कविता वर्कशॉप' आयोजित होइत छलैक किन्तु, मैथिली मे एहि सम्बन्ध मे क्यो सोचियो नहि सकल छल।

मात्र साहित्यिक क्षेत्र मे नहि, सामाजिको क्षेत्र मे हुनक सक्रियता - संलग्नता कम नहि छनि।

दरभंगा मे बिजली - पानिक अभाव, सड़क - नालाक दुर्दशा, बाढ़िक समय मे शहर मे पानिक जमाव, बीमार अस्पताल, भ्रष्टाचाररत विश्वविद्यालय, छात्र संगठन पर अत्याचार, मैथिलीक उपेक्षा करैत मिथिलांचलक आकाशवाणी, राजनीतिज्ञ द्वारा मिथिलांचलक वोट बैंकऽक रूप मे इस्तेमाल, किसान - मजदूरक समस्या – सभ सोमदेव जी केँ उद्वेलित - आन्दोलित करैत रहैत छनि।

सामाजिक समस्याक ओ निरपेक्ष तटस्थद्रष्टा बनल नहि रहि सकैत छथि। सह-भोक्ता वला दर्दक सङ प्रतिकारक प्रत्येक संभव चेष्टा बिना कैने हुनका चैन नहि। प्रत्येक समस्याक सङ हुनक मात्र सैद्धान्तिक संलग्नता नहि, व्यावहारिक सक्रियता रहैत छनि। ओ संगठन तैयार करैत छथि, संघर्ष समिति बनबैत छथि। आन्दोलन, जुलूस, प्रदर्शन, धरना, भूख हड़तालक नेतृत्व करैत छथि, गिरफ्तारी दैत छथि। विश्वविद्यालय आ नगर बन्नक आयोजन - आह्वाने नहि, मुख्यमंत्री क पुतरो जरयबा काल सभ सँ आगू - आगू रहैत छथि। ओ मात्र विरोध-पत्र जारी नहि करैत छथि, ओकरा पत्र - पत्रिका मे नीक जकाँ 'कवरेज' भेटलैक कि नहि,ताहू ओरिआओन - चिन्ता मे ओ दिन - राति एक कऽ दैत छथि।

हमरा जनैत साहित्य बाहरी समस्याक मध्य अन्तर्मुखी साधनाक अपेक्षा रखैत छैक। वाह्य समस्या मे व्यस्त-ओझरायल व्यक्तिक लेल साहित्य-सृजनक अपेक्षित एकाग्रता - एकात्मकता असंभव भऽ जाइत छैक। ने कोनो बाहरी सुख - सुविधा, सफलता, यश, प्रस्तुति - स्तुति ओकरा रचनाकालक निरीक्षण मे मदति कऽ सकैत छैक, आ ने आत्मिक देखल, अनुभव कैल आ घटित सत्य केँ कागत पर उतारि ओ रचनात्मक सन्तोष प्राप्त कऽ सकैत अछि। तात्कालिकता स्थायित्व नहि दैत छैक— ने व्यक्ति केँ, ने रचना केँ, येह कारण थिक जे साहित्यकार एहि सभ सँ बचऽ चाहैत छथि।

सोमदेव जी एतेक व्यवधान, व्यस्तता आ समस्याक मध्य रहियो कऽ लिखऽ केर समय बहार कऽ लैत छथि — ई आश्चर्यक विषय। वाह्य आ आन्तरिक संघर्ष सँ आर गतिवान होमऽ वला एहन उत्कट चेतना केर जाग्रत रचनाकार भेटब कठिन।

हम अपन चाकरीगत व्यस्तताक कारण पारिवारिक एवं सामाजिक दायित्व सँ भागिते नहि रहैत छी, समयक अभावक घओनो पसारने रहैत छी। एतबे नहि, ठहक पारि कऽ लोक केँ सुनबैतो रहैत छिऐक, जे ई सोलहन्नी परिस्थितिक दोष थिक जे हम नहि लिखि पबैत छी (जेना कि हमरा लिखने संसार नेहाल भऽ जैतैक)। ओ कहियो नोर पोछऽ नहि आबि, पनहर पैसहिया कार्ड सँ हँसी - ठहक्का पठा दैत छथि आ हम आनन्द-स्नात भऽ कलम जोहऽ लगैत छी। ओ मात्र हमरे नहि, बहुतोक जड़ता पर प्रहार करैत छथि, फोंफ काटैत समानधर्मा सभ केँ 'कालध्वनि' सुनबैत छथि आ नवका पीढ़ी केँ पौराणिक साहित्य-भण्डार सँ 'चरैवेति'क सूत्र सुना जीवन्त - ज्वलन्त - गतिशील रहक लेल प्रेरित - प्रोत्साहित करैत छथि।

☐

प्रकाशित— वैदेही : मइ 1989

कवि - मित्र रमानन्द रेणु आ हुनक रचना

हमर वर्ग - मित्र वासुदेव जी (श्री वासुदेव दास) इण्टरमीडिएट करितहि दूरभाष विभाग मे नोकरी पाबि गेल रहथि। ओ दरभंगा मे कार्यरत रहथि। हम जहिया गाम आबी, ओ उपेत कए बरौनी आबि भेंट करथि आ प्रत्येक भेंट मे आर. एन. दास (श्री रमानन्द रेणु) क बारे मे भाव - विभोर भए चर्चा करैत, हमर बहुतरास समय लऽ लैत रहथि। ताधरि मैथिली मे हमर रुचि बड़ कम छल। मातृभाषाक प्रति अनुराग, संस्कार आ साहित्यिक उत्सुकतावश मैथिलीक पत्र - पत्रिका मे रमानन्द रेणुक रचना पढ़ि ई धारणा बनि गेल छल, जे ई मंचीय लोकप्रियताक लेल पारम्परिक गीत लिखऽ वला गीत-कार छथि। आश्चर्य होइत छल जे जन्मजात 'बोलसेविक' वासुदेव जी कें आर. एन दास मे कोन वैचारिक प्रगतिशीलता भेटलनि ? कतहु विभागीय सम्पर्क तऽ नहि मैत्री मे बदलि गेलनि। हम एकर रहस्य तऽ नहि बूझि सकलहुँ किन्तु, ओ रेणु जी कें हमर मित्र बना कए छोड़लनि।

हुनका सँ हमर सम्पर्क बढ़ल आ बढ़िते गेल। पहिल भेंट कहिया कतय भेल से तऽ स्मरण नहि किन्तु, पहिले भेंट मे हुनक आत्मीय व्यवहार, शालीनता, सुदर्शन व्यक्तित्व आ साहित्यक प्रति अभिरुचि सँ ततेक प्रभावित भेलहुँ, जे जहिया कहियो दरभंगा जाइ हुनका सँ भेंट करब, हुनका सङ लऽ कए घंटाक - घंटा घूमैत रहब आ बतिआइत रहब– पहिल कार्यक्रम होइत छल।

लहेरियासराय मे राय साहेबक पोखरिक लऽग भाड़ाक मकान मे ओ रहैत छलाह। दिन भरि कतहु बौआइ किन्तु, साँझ अथवा राति धरि हमरा नेने ओ अपन बासा पर पहुँचिये जाइत छलाह। हुनक पहिल बालक पवन जीक जन्म भऽ गेल रहनि। श्रीमती चन्द्रकला रेणुक हाथक बनाओल भोजन आ तीमन - तरकारीक स्वाद लैत घंटाक - घंटा बीति जाइत छल।

विशाखापतनम आबि गेलाक बाद दरभंगा जयबाक पहिला वला क्रम नहि रहल तथापि, बीच - बीच मे ओतय जायब आ सोमदेव जी एवं रेणु जी सँ भेंट करब हमर आन्तरिक विवशता बनल अछि। हमरा दुनू मे विचार, सिद्धान्त आ जीवन - शैलीक अनेकशः भिन्नता अछि। ओ हमरा सँ वयस मे पैघ छथि, सात - आंठ वर्ष पहिने सँ लिखि रहल छथि। किन्तु, ई भिन्नता आपस मे कहियो कोनो विरोध नहि ठाढ़ कैलक, ने एक - दोसर केर आलोचक बनौलक। ओ बहुतरास लिखि चुकल रहथि, पत्र-पत्रिका आ कवि - सम्मेलनक माध्यम सँ पर्याप्त यश अर्जित कऽ चुकल रहथि, तखन हम मैथिली मे प्रवेश कैलहुँ आ हुनका सँ सम्पर्क भेल। ओ हमरा सँ बेशी सुविधाजनक स्थिति मे रहथि। मिथिलाक हृदय प्रदेश दरभंगा मे रहैत रहथि आ मैथिली मे सोचब एवं लिखब हुनका लेल सहज छलनि। हमर भावनात्मक उद्रेक हिन्दी मे होइत छल। हिन्दी मे जे लिखैत रही, ओकर पत्र - पत्रिका मे खूब स्वागत होइत छल। प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिका मे विद्यार्थिये जीवन सँ छपैत रही आ साहित्यिक वर्ग मे चर्चा होइत छल किन्तु, मैथिली मे तऽ जीवन आ क्रमबद्ध लेखनो नहि आरम्भ कैने छलहुँ तें चर्चाक प्रश्ने नहि छल।

ई स्थिति बेशी काल धरि नहि रहल। मित्र वर्गक आग्रह आ दबाबक कारण कविता, कथा आ आलोचना तीनू लिखऽ पड़ैत छल। हमर रुचिक विधा छल कविता। दोसर बात, अपन व्यस्त दिनचर्या मे कथा - आलोचनाक लेल अपेक्षित समय बहार करब कठिन छल। तें कविता बेशी लिखायल। वीरेन्द्र मल्लिक कविता जमा कैलनि, सकलदीप सिंह एवं अवधनारायण सिंह प्रूफ देखऽ केर भार लेलनि (यद्यपि पोथी पढ़ि कए ककरो विश्वास नहि भेल हैतैक, जे एकर प्रूफो देखल गेल होइतैक) आ अजन्ता फाइन आर्ट्स प्रेसक मालिक एवं साहित्यिक मानिक बच्छावत छापऽ केर दायित्व आ 1967 मे 'सीमान्त' छपि गेल। एकरा हम महज एकटा संयोग मानैत छी अन्यथा, पहिनहि लिखल जा चुकल रेणु जीक उपन्यास 'दूधफूल' ओहि सँ पहिनहि छपि जइतय। जे से। हम दुनू मित्र प्रसन्न रही जे दुनूक प्रथम पोथी एकहि वर्ष मे प्रकाशित भेल। तकर बाद रेणु जीक पाँच गोट पोथी छपलनि— 1969 मे प्रथम कविता संकलन – अन्ततः एवं प्रथम कथा संकलन – कचोट, 1972मे दीर्घ कविता– ओकरे नाम, 1974मे दोसर कथा संकलन – त्रिकोण आ 1982 मे तेसर कथा संकलन – अन्तहीन आकाश। यद्यपि अनेक पाण्डुलिपि तैयार छनि किन्तु, एम्हर बारह-तेरह वर्षसँ कोनो पोथी नहि छपौलनि।

प्रारम्भहि सँ रेणु जीक गीतकार आ कवि सँ बेशी हुनक कथाकार आकृष्ट करैत रहल छल किन्तु, जखन हुनक उपन्यास 'दूधफूल' छपल तऽ हम चमत्कृत भऽ उठलहुँ।

एहि उपन्यासक नायक 'सरना' क चरित्र आ व्यवहार मे लेखक द्वारा निरुपित चमत्कार आ आदर्श ततेक नाटकीय आ अविश्वसनीय लागल छल जे ओकरा पर विस्तार सँ रेणु जी सँ बतिआएब आवश्यक बुझना गेल छल। स्मरण अछि — लहेरियासरायक 'मीरा' होटल मे कतेक घंटा धरि 'सरना' हमरा आ रेणु जी कें अपन बहुरुपिया चरित्र मे ओझरौने रहल छल। रेणु जी हमरा मिथिलांचलक निम्न मध्यवर्गीय, अशिक्षित, गरीबीक जाँत तऽर पिसाइत, बेगारीक पेना सँ हँकाइत, अपन जिबैत माय - बहिन - बेटी समेत पुस्त - पुस्तानक लेल गाड़ि सुनैत, मालिकक प्रताड़ना कें अपन अभाग आ ओकर अधिकार बूझि खेत - खरिहान - बथान पर भूखल काज करैत लोकक मनोदशा आ जीवन सँ परिचित कराबैत रहल छलाह। ओ कहलनि–'जे निम्न वर्गक दमित आकांक्षा क विस्फोट सरनाक चरित्र मे देखायब हमर उद्देश्य छल। कोनो अदना चरबाहा ओ मजूर, संघर्ष कए कतेक आगाँ बढ़ि सकैत अछि आ कोनो महाजनी संस्कार वला लोकसभ कें धूर चटा सकैत अछि – एकरा कथा - सूत्र मे बान्हब हमर उद्देश्य छल किन्तु, ओकर अन्त ठीके किछु नाटकीय, चमत्कारिक एवं अलौकिक भऽ गेलैक।'

रेणु जीक 'दूधफूल' आ जीवकान्तक 'दू कुहेसक बाट' प्रायः एकहि समय मे सोमदेव जीक सहयोग सँ नवरंग प्रकाशन, पटना द्वारा प्रकाशित भेल छल आ दुनू उपन्यास पर हमर समीक्षा एकहि सङ 'आखर' क पाँचम अंक (मार्च 1968) मे छपल छल।

तकर बाद उनहत्तरि मे हुनक पहिल कथा - संकलन 'कचोट' एवं पहिल कविता - संकलन 'अन्ततः' छपलनि। एहि तरहें उपन्यास, कथा आ कविता तीनू विधा मे ओ अपन रचनात्मक सक्रियताक परिचय देलनि। कालान्तर मे 'त्रिकोण' आ 'अन्तहीन आकाश' छपलनि। कवि आ गीतकार रेणु अपना कें श्रेष्ठ कथाकारक रूप मे प्रतिष्ठित कैलनि।

अशिक्षा, अभाव, रोग, रूढ़ि, नानाविध कलह, वैमनस्य, पाखण्ड आदि सँ ग्रस्त निम्नवर्ग आ निम्नमध्यवर्गक जीवन तथा ओकर समस्या, संघर्ष एवं आकांक्षा केँ शब्द देबाक लेल ओ एकटा अपन कथा - भाषाक विकास कैलनि। निठट्ठ गाम - देहात मे सोलकन वर्ग द्वारा बाजल जाइत भाषा हुनक कथा - भाषा बनि अपन भाषिक विलक्षणता सिद्ध कैलक। दलित वर्ग हिनक कथा-साहित्यक दर्पण मे जतेक स्पष्ट रूपसँ प्रतिविम्बित अछि ओ अन्यत्र दुर्लभ। हुनक कथाक प्राण - तत्त्व आर्थिक विपन्नता एवं सामाजिक विसंगति मे जन्म लैत, जीबैत आ मरैत निम्नवर्गक संघर्षगाथा मे छनि। दुख, यातना एवं वंचना मे अंकुरित होइत आ सूखैत जीवनकल्प सँ हुनक भावनात्मक एकात्मता हुनक कथा मे अभिव्यक्त अनुभव केँ विश्वसनीय बनबैत छैक।

'त्रिकोण'क आत्मकथ्य मे ओ लिखैत छथि— 'जाहि वर्ग आ सामाज सँ हमर साहचर्य एवं सम्पर्क रहल, ओही मध्य जीबैत व्यक्तिक क्रियात्मक स्वरूप हमर लेखनक आधार बनल।... निठट्ठ देहात मे जन्म भेलाक कारण ओहि वातावरण मे हमर लालन-पालन, शिक्षा - दीक्षा एवं संस्कार - बोध भेल। हमर परिवार कोनो मशीनीकृत समाज वा वर्ग सँ अनभिज्ञ छल, ओकर निश्छल व्यवहार, शहरी लोलुपता, चंचल प्रवृत्ति एवं प्रदर्शनक प्रति कनियों आकर्षण केँ जन्म नहि देलक। परिणामतः हमहुँ संस्कारगत अपने गाम-समाज सँ जोड़ल रहलहुँ आ एखनो धरि हमर ई मोह - भंग नहि भेल अछि। ...एहि प्रकारक वातावरण मे जीबैत साहित्यकार अपन परिवेशक उपेक्षा नहि कऽ सकैत अछि।... हमर सम्पूर्ण कथा - साहित्य एहि परिसरक उपज अछि। समाजक वैह यथार्थता हमर कथाक सत्य अछि आ हमर प्रत्येक पात्र अपन समस्या आ वर्त्तमान लऽ कऽ प्रस्तुत होइत अछि आ ओकर निदान प्रश्नसूचक बनि कऽ ठाढ़ भऽ जाइत अछि।'

हमर मान्यता आ रेणु जीक एहि आत्म - स्वीकृति मे रेणु जी केर समस्त कथाक यथार्थ आ जीवन्तता केँ जोड़ल जा सकैत अछि। हुनक कथावस्तु, रचना- दृष्टि एवं शिल्प – तीनू कथाकारक रचना सामर्थ्य केँ उदघाटित करैत अछि आ हुनक कथा केँ जीवनक दस्तावेज बना कए राखि दैत अछि।

रेणु जी लेखनक आरम्भ गीत-कविता सँ कैलनि किन्तु, अभिव्यक्तिक, मुख्य विधाक रूप मे कथा केँ चुनलनि। कथा मे कथ्यक विस्तारक लेल अनन्त संभावना आ अवकाश छैक। ओ अपन लेखकीय क्षमताक दुनू मे उपयोग करैत रहलो सन्ताँ कथा - लेखन दिस विशेष ध्यान देलनि। ओहि क्रम मे ओ उपन्यास लेखन सेहो कैलनि आ खूब सराहल गेलाह।

प्रारम्भ सँ अपन हृदयोद्‌गार गीतक माध्यम सँ अभिव्यक्त करऽवला आओर गीतक राग, लय, अनुप्रास एवं विम्ब मे रमल रहऽ वला रेणु जी 'अन्ततः'क कविता सभक सङ नव कविता मे प्रवेश करैत छथि आ ओहि प्रस्थान - विन्दु सँ ई वक्तव्य दैत छथि—

'हम मानैत छी जे गीत हमर त्रस्त जीवन पद्धतिक मध्य किछु क्षणक हेतु विश्राम एवं तल्लीनताक काज करैत अछि किन्तु, पेट जरैत हो, हृदय चित्कारि रहल हो, मस्तिष्क फाटल जाइत हो तऽ ओहन विश्राम - तल्लीनता हमरा कतेक तोख दऽ सकत? ओहि सँ हम कतेक स्वस्थ भऽ सकब? तेँ ई आवश्यक भऽ गेल जे अपन वर्त्तमान स्थिति केँ

अनुभूति केँ नव विन्यासक माध्यमे समाजक समक्ष राखी।'

अपन एहि उद्देश्यक प्राप्ति ओ अपन काव्य - दृष्टिक विस्तार कए एवं आधुनिक भावबोधक कविता लिखि कैलनि– 'परिस्थितिक नुक्कड़ पर / बैसल हम / पीबि रहलहुँ अछि अनुभूतिक गरम - गरम चाह– लिखऽ वला रेणु जी अन्ततः अपना केँ कठघरा मे ठाढ़ पाबैत छथि– 'हमर साक्षात्कार / एकाधिकारिक विलियन आ / भरमक कुहेस केँ फाड़ैत किरिन समूह अछि / आकस्मिक परिणाम मे शुद्ध / भाव - राशिक सर्जनात्मक उन्मेष सँ / सम्पूर्ण ज्ञान आ कला केँ / उन्मुक्त करैत अछि / लोकापवाद हमरा भरमा नहि सकैत अछि / अर्थहीनताक आक्रोश सँ अभियोजित युग - दर्शन। बौद्धिक धारा - उपधारा केँ निष्क्रिय नहि कऽ सकैत छैक / हम निश्चिन्त छी / आ कठघरा मे ठाढ़ एकटा हम / हमरा सँ अस्तित्वक आस्था आ व्याख्या / फेर - फेर देखऽ आ सूनऽ चाहैत अछि / तेँ सँ।' (अन्ततः – कठघरा मे ठाढ़ एकटा हम)।

रचनाकार जँ अपना केँ कठघरा मे ठाढ़ अनुभव करैत अछि तऽ एकर अर्थ जे ओ साहित्यक सामाजिक भूमिकाक प्रति सजग अछि आ ओ अपनहि रचनाक सार्थकता पर, प्रयोजनीयता पर, भूमिका पर प्रश्नचिह्न लगा कऽ ओकर 'सच' अथवा सार्थक केँ रेखांकित करऽ चाहैत अछि। जाहि लेखकक संवेदनाक प्रयोगशाला सँ एतेक सूक्ष्म परीक्षणक बाद कोनो रचना बहार हेतैक, ओकर भावात्मक आवेग भलेँ न्यून भऽ जाइ, अर्थवत्ता अवश्य सिद्ध हेतैक।

'अन्ततः' मे हुनक 1963 क बादक कविता संकलित छनि। ओहि सँ पहिने ओ शताधिक गीत लिखने - छपौने रहथि। किन्तु, ओकरा सभ केँ कविताक परिवर्तित संस्कार अथवा नव कविताक प्रकृतिक प्रतिकूल बूझि ओहि मे संकलित नहि कैलनि। ई बात दोसर थिक जे ओकर बहुतरास कविता गीतात्मकता आ रोमांटिकता सँ ततेक आविष्ट अछि जे ई कहब मोसकिल जे ओ गीत अछि अथवा नव कविता। इएह कारण अछि जे आलोचक गीत केँ हुनक सहज काव्यवृति मानैत अछि आ हुनका मूलतः गीतकार।

1979 मे हुनक शोक-काव्य (दीर्घ कविता) 'ओकरे नाम' प्रकाशित भेलनि। अर्थात बालकक आकस्मिक मृत्यु सँ मर्माहत कवि दार्शनिक मुद्रा अपना कए मृत्युक अनिवार्यता, जीवनक क्षण–भंगुरता आ नियतिक खेल पर अपन शोकोद्‌गार नहि व्यक्त कए, सम्पूर्ण कालचक्र पर विचार करैत छथि– 'आजुक वर्त्तमान मनुक्खक नैतिकताक अवमूल्यन कैलक अछि। दिन - प्रतिदिन नव - नव वैज्ञानिक अनुसंधान होइतो जीवन जीअब असाध्य भऽ गेल अछि। युग सत्य अछि किन्तु जीवन असत्य। मनुक्खक क्षुद्र वैयक्तिकता मृत्युक यथार्थ केँ वरण करबा सँ सदिखन डेराइत रहल। हम जीवन जीअब जतेक सहज बुझैत छी, मृत्युक स्वीकार हमरा हेतु ओतबे कठिनाह बनि कऽ सोझाँ अबैत अछि आ हमर आशा - आकांक्षा धराउ वस्त्र जकाँ चौपेतले रहि जाइत अछि।'

मनुक्ख जीअऽ चाहैत अछि, मरऽ नहि किन्तु, ओकरा मरऽ पड़ैत छैक। मृत्यु केँ भाग्य - विधान नहिओ मानऽ वला केँ कालचक्र मे जन्म - विकास - मृत्यु केँ प्रकृतिक नियमक रूप मे स्वीकार करऽ पड़ैत छैक। जन्म आ मृत्युक मध्यक कालावधि जिअऽक

लेल आ जीवन कें सार्थक बनयबाक लेल कैल गेल संघर्ष मे बीतैत छैक । कविक अनुसार अन्ततः समस्त 'आहत - आकांक्षा' चौपेतल रहि जाइत छैक आ मृत्युक स्वीकार एकरा लेल अपरिहार्य विवशता भऽ जाइत छैक । शोकाकुलता मे कवि सभतरि चित्कार सुनैत छथि, सभ स्त्री बन्ध्या बुझाइत छनि, सभ कोखि सँ आगि बहराइत देखैत छथि । किन्तु कविताक आदि वाक्य– 'प्रतिदिन भिनसरे एकटा प्रतिमा बनाउ आ साँझ मे तोड़ि दिऔ'– एकटा आत्मिक जिज्ञासा मे बदलि जाइत छनि – 'हमर स्वत्व किए हेरायल जा रहल अछि / हमर व्यक्ति आइ किए अबूह अछि / हमर लोक मकड़ाक जाल सँ / किए आइ एना मुँह बान्हि नेने अछि .... आ हम एकटा माटिक मुरुत जकाँ / कोनो ठाम स्थापित भेल एकटा धक्काक प्रतीक्षा मे जीबि रहल छी जे टूटैत आकृति धुआँ / समस्त वातावरण कें अपस्याँत करैत / मूल स्थिति कें छेकि लिअए ।'

किन्तु, अन्ततः कवि मृत्युक अदंक सँ निष्प्राण भऽ जयबाक बदला मे जीवनक उत्साह सँ भरि उठैत छथि– 'हम जीअब उत्साहक सङ आ महत्त्वाकांक्षाक पोषण करब / आ सेबैत रहब / मोन कें / शरीर कें / गाम कें /.... हमरा आश्वस्तिक स्वर चीन्हऽ दिअऽ / हमरा अपन निजी परिस्थिति मे जीबऽ दिअऽ, बन्धु !'

कवि निराशा - अनास्था सँ मुक्त भए जीवनक प्रति विश्वास सँ भरि उठैत छथि, आश्वस्तिक स्वर चीन्हऽ चाहैत छथि आ परिस्थिति, खाहे जेहन हो, ओकरा सँ संघर्ष करैत जिअऽ चाहैत छथि ।

कविता मुक्त करैत छैक, पलायन नहि सिखबैत छैक । 'ओकरे नाम'क माध्यम सँ रेणु जी विछोह कें जीवनक प्रगाढ़ संलग्नता मे बदलि देने छथि ।

रस आ रागक कवि रेणु जी मे जेना - जेना सामाजिक चेतनाक विकास भेलनि, ओ तकर अभिव्यक्तिक लेल अनुकूल माध्यम अपनाबैत गेलाह । कविता, कथा, उपन्यास सभ हुनक लेखकीय चिन्तन आ व्यक्तित्व सँ समृद्ध भेल । आइ अन्त्यज, दलित, 'पिछड़ा वर्ग', छोट जाति, पैघ जाति, ब्राह्मणवाद आदि कें राजनीतिक नारा बना कए ओकर तोप जकाँ प्रयोग कैल जा रहल अछि । व्यक्ति - व्यक्ति, जाति - जाति, क्षेत्र - क्षेत्र कें घृणित रूप मे बाँटि वैमनस्य उत्पन्न कैल जा रहल अछि । राजनीति तोड़ऽ मे विश्वास राखैत अछि किन्तु, साहित्य कें तऽ जोड़ऽ छोड़ि आओर किछु अबिते नहि छैक । ने हजारो वर्ष पहिने आबैत रहैक, ने आइ । एतय हम ओहि राजनीति अथवा पार्टी सँ प्रेरित साहित्यक बात नहि करैत छी, जे जन आ साहित्य दुनू कें राजनीति आ नेताक भक्ष्य अथवा उपयोगक वस्तु बुझैत रहल अछि ।

मैथिलीक अधिकांश कथा - उपन्यास मे दलित, शोषित, पीड़ित, प्रताड़ितक चित्रण भेटैत अछि । ओहि मे शोषण आ अन्यायक विरुद्ध संघर्ष रचनाकारक मुख्य लक्ष्य रहल छैक । अपन रचना - संघर्ष मे सामाजिक यथार्थ सँ ओ सचक अन्वेषण - सृजन करैत रहल अछि । रमानन्द रेणुक रचना मे जीवन आ यथार्थक प्रति एकान्त समर्पण भेटैत अछि । हुनक रचना - दृष्टि आ शिल्पबोध दुनू मे विलक्षण तादात्म्य छैक । येह गुणक कारण ओ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आ प्रासंगिक भऽ जाइत छथि ।

□

रचनाकाल : 20 जून 1994

अनेरे ढाही लैत हमर मित्र जीवकान्त

जीवकान्त मैथिलीक प्रख्यात कवि, कथाकार, उपन्यासकार एवं चिन्तक छथि । ई एकटा सुखद संयोग अछि जे हम दुनू समकालीन छी, मैथिली मे नियमित लेखन दिस दुनू प्रायः एक्के समयमे अग्रसर भेलहुँ आ दुनू एक-दोसर सँ प्रेम करैत, लड़ैत - झगड़ैत एखनहुँ अनवरत लिखि रहल छी आ आजन्म लिखैत रहबाक लेल संकल्प-बद्ध छी ।

ओ आजीविका लेल विद्यालय मे काज करैत छथि । कतेक वर्ष धरि खजौली मे रहथि, आब घोघरडीहा मे छथि । दुनू निठ्ठ देहात किन्तु, हिनका कारण साहित्य-जगतक लेल सुपरिचित नाम ओहिना जेना मधुपजीक कारण कोथुं आ आरसी बाबूक कारण एरौत । ओ जाहि गाम मे रहैत छथि ओ बरिसातक समय आ ओकर बादो पानि सँ घेरायल रहलाक कारण टप्पू बनल रहैत अछि । ओ प्रकृति, सरकार, व्यवस्था, गाम सभसँ रूष्ट आ सभक प्रति आक्रोश सँ भरल अपन खौंजाहटि मे लिखैत चल जाइत छथि । एहि लेल रीमक-रीम कागत हुनका बाढ़ियो मे भेटि जाइत छनि । पोस्ट ऑफिस नाओ पर लादि कए हुनक रचना आ पत्र शहर लऽ जाइत अछि आ ओम्हर सँ गेंटक - गेंट चिट्ठी लादने हुनक घर धरि पहुँचि जाइत अछि । पहिने ओ मोसिक मात्रा देखि लिखब शुरू करैत छलाह । बेसी रहल तँ उपन्यास छानि लैत छलाह, कम रहल तँ कथा एवं नहि रहल तँ सूखल मोसिआनि मे कदुआह पानि मिला 'वाटर कलर' बना कऽ कविता ।

सन साठिक लगीच बहुत रास व्यक्ति मैथिली मे लेखन शुरू कयलनि जेना राजमोहन, हंसराज, रामदेव झा, रमानन्द रेणु, जीवकान्त, प्रभास कुमार चौधरी, वीरेन्द्र मल्लिक, गंगेश गुंजन आदि किन्तु, जीवकान्त अपन पहलमानी व्यक्तित्वक कारण सभसँ फराक । ताल ठोकि अखड़ाहा मे सभकें ललकारबाक काज पहिने ओ स्वयं करैत छलाह, आब ई काज हुनक अनगिनत शिष्य करैत छथिन ।

कोनो गोष्ठी, सेमिनार, सभा, कवि-सम्मेलन मे ओ कतबो आदरपूर्वक बजाओल जाथि, जँ ओकर व्यवस्था आ संचालन हुनक रुचिक अनुकूल नहि हो तँ किछु काल धरि आयोजनक व्यर्थता पर सोचैत रहि, कात-करौट सँ बाहर भऽ जयताह । थोड़ेक कालक प्रतीक्षाक बाद जखन हुनका जोहब आरम्भ हैत तँ केओ सूचित करत जे ओ एखने हुनका बस-स्टैण्ड अथवा टीसन दिस जाइत देखने रहनि ।

ओ प्रायः दुखी रहैत छथि । दुखक कारण अनन्त छनि, जेना कि दरभंगा, पटना, कलकत्ता, बाढ़ि, सरकार, रचना, उपेक्षा, पत्रिका आदि-आदि । दुख आ तनावकें ओ जोहैत रहैत छथि । दुनूसँ बड़ आत्मीयता छनि । एहि दुनूक संयोग सँ आक्रोश उत्पन्न होइत छनि जे हुनक रचनात्मक ऊर्जा छनि । आवेश, क्रोध, कुंठा, पराजय, आदि हिनक मनोभूमिक लेल खादक काज करैत छनि । देखैत-देखैत ओ अपन चारूभर जंगल उठा लैत छथि । ओहि पर चिड़ै, टिटही, परबा, कठखोधवा सभकें बैसा लैत छथि । लगले अकच्छ भए जंगलकें सरापऽ लगैत छथि । ओ सूखिकें रेगिस्तान मे बदलि जाइत अछि । यत्र-तत्र बबूर-कटैया उगि जाइत छैक । हुनका होइत छनि— हुनका संग षड्यंत्र कैल गेल अछि । कलमकें सुखा कए कटैया आ 'पीयर गुलाब'

के॓ कँक्टश बना देबाक दुरभिसंधि। ओ तरंगि उठैत छथि आ सभके॓ उजाड़ि ध्वस्त कऽ देबाक बात सोचय लगैत छथि।

ठीक हुनके जकाँ सोचयवला हमर एकटा आओर मित्र छथि— हिन्दीक प्रसिद्ध कवि - आलोचक सकलदीप सिंह। ई दुन्नू सभके॓ ध्वस्त करैत - करैत किलोक किलो कागज 'कंज्यूम' करऽ लगैत छथि।

उपरका लक्षण सभ जकरामे पाओल जाइत छैक, ओकरा जीनियस मानल जाइत छैक अर्थात अप्रतिम सृजन - क्षमतावला सनकी। जीवकान्तक यैह सृजन-क्षमता हमरा लेल हुनक ढेपाओज आ असामान्यताके॓ सेहो प्रिय बना देलक।

ओ लेखन विलम्बसँ शुरू कयलनि किन्तु, अपन आरम्भिके रचनासँ हमरा पर वशीकरण चला देलनि। 1965 मे हुनक एकटा कविता छपल रहनि— 'रौद, पछबा आ ग्रीष्म।' ओहिमे ओ पृथ्वीके॓ सूर्यक नर्तकी कहि, दुनूके॓ चुम्बन-आलिंगनरत देखबैत छथि। परिणामतः ग्रीष्म 'महाकार ब्लास्ट फर्नेस' मे परिणत भऽ जाइत अछि।

हमर कोनो लेखमे ओकर चर्चा देखि सम्भवतः ओ हमरा पहिल बेर पत्र लिखने रहथि, भेंट पहिल बेर सुपौलमे, 1967 मे भेल छल।

दुनूक प्रकृति, रुचि, सिद्धान्त आदिमे अद्भुत साम्य छल। पार्थक्यक कोनो बिन्दु छल तँ मात्र ई जे ओ देहातमे आ हम महानगरमे रहैत छलहुँ। ओ एकटा स्कूलमे शिक्षक छलाह, हम एकटा पैघ औद्योगिक प्रतिष्ठान मे अफसर। किन्तु हम दुन्नू समान रूपसँ नौकरीके॓ रोटीक लेल कैल गेल अपरिहार्य अपराध मानैत रही आ जिअऽ-लिखऽक लेल ई अपराध कऽ रहल छलहुँ।

एकटा आओर वैषम्य छल। पिताक मृत्युक कारण हुनका आइ. एस-सी कयलाक बादे नोकरी पकड़य पड़ल रहनि, हम एम. ए. क पढ़ाइ पूरा कए कलकत्ता गेल रही— नियुक्ति-पत्र हाथमे लऽ कए। हुनकामे शिक्षा पूरा नहि कऽ सकबाक कचोट छलनि, शहर सँ दूर आ साहित्यिक परिवेशसँ कटल रहबाक मानसिक कष्ट छलनि, सुविधा-सम्पन्नताक प्रति संदेह तथा घृणाक भावना जड़िया रहल छलनि। ओ ई मानऽ लेल तैयार नहि होइत रहथि जे परिश्रम एवं इमानदार प्रयाससँ अर्जित योग्यता एवं सफलता ओहिना सुख - संतोष दैत छैक जेना, कठिन परिश्रम सँ उपजाओल फसिल [illegible]

एक - दोसरक प्रति आत्मीयता एवं स्नेह-भाव, लगैत अछि, आरम्भेसँ व्यक्तिगत दुर्बलतामे परिणत भऽ गेल छल। एकर अर्थ ई नहि जे हम लड़ैत - झगड़ैत नहि छी। आक्रमण बेसी खेप हुनके दिससँ होइत अछि। हम ने उत्तर दैत छियनि आ ने अपनाके॓ 'डिफेण्ड' करैत छी। किछु दिन धरि औनाइत रहि जाहि घटना अथवा रचनाक ओ विरोध कऽ चुकल रहथि, तकरे प्रशंसामे ओ पत्र एवं लेख लिखऽ लगैत छथि।

'हम स्तवन नहि लिखब' केर विक्रय-वितरण केर समस्या छल। जीवकांत लिखलनि, दरभंगा आउ। नियत तिथि आ स्थान पर ओ हमरासँ पहिनेसँ पहुँचल रहैत छथि। एकटा पुरान झोरामे पोथी भरि हमरा लोकनि श्री रमानाथ मिश्र 'मिहिर'क ओतय पहुँचैत छी आ गप्प-सप्प तथा चाह-पानक बाद विदा भऽ जाइत छी। रिक्शा बड़ी दूर धरि निकलि जाइत अछि तँ जीवकांत चौंकैत छथि— 'कीर्त्ति, पोथी खाली कए

झोरा आनब बिसरि गेलह। रिक्शा घुराबऽ।' हम कहलियनि—'नीके भेल। पोथी बिकाइत तँ नहिए, घुरा कऽ लऽ जयबामे वागीशके॓ सुविधा हेतनि। ओहुना झोरा बड़ पुरान अछि आ गाड़ीक टैम सेहो भऽ गेल अछि।'

हमर बात हुनका पसिन्न नहि पड़लनि आ एहनो छोट प्रसंग मे हमर अभिजात-संस्कारक गंध हुनका बुझयलनि। ओ खजौली पहुँचि, ओहि प्रसंगके॓ आधार बना एकटा कथा लिखलनि। छपला पर ओकरा पढ़ि कए किशोरवय केदार कानन क्षुब्ध। हमरा दुनूक प्रति ओ श्रद्धा राखैत छलाह आ पिता - तुल्य बुझैत छलाह, संगहि दुनूक मैत्री सँ सेहो परिचित। हुनका अपन एक आदरणीय द्वारा दोसर आदरणीयक प्रति ईर्ष्या-अपमानयुक्त भावना एवं शब्दक प्रयोग आहत कैलकनि। क्षुब्ध भए ओ पत्र लिखलनि। हम बुझौलियनि जे जीवकान्त हमर घनिष्ठ मित्र छथि। कोनो क्षण-विशेषमे उठल भाव-नाक आवेगमे ओ किछु लिखि गेल हेताह। एकरा अन्यथा नहि लए, ओहि कथा-विशेषमे कथा तत्व केहन छैक— एहि पर विचार होयबाक चाही।

हमर एकटा कविता— 'जादूक खेल' मिथिला मिहिरक 2 अगस्त 1981 क अंक मे छपल छल। ओहिमे एक दिस एकटा गरीब जादूगर, गाम-गाम जाके॓ खतरनाक खेल देखा, लोक सभमे संवेदना—आश्चर्य उत्पन्न करैत अछि आ अपन पेटक आगि मिझाबक लेल पाइ वोसूलैत अछि आ दोसर दिस मानवीय सम्वेदनाक बेपार करयवला वर्ग द्वारा 'केसेट' मे बन्न करऽ क लेल लोकक अभाव आ भूखमे सांगीतिक लय जोहल जाइत अछि, जाहिसँ देश-विदेश मे ओकरा बेचल जा सकय। ई वर्ग अपन बुद्धि आ पूँजीक विनियोग मुरदाके॓ नुआ देबऽ मे, लहासक लेल 'ममी' बनाबऽ मे आ अस्पताल एवं श्मशान घाटक दूरी मेटाबऽ मे करैत अछि। ई वर्ग लोकक दारिद्र्य भूख, नग्नता आ हाड़ - पाँजरके॓ मार्केटेबुल अथवा पण्य बनबैत अछि, मानवीय संवेदनाके॓ अपना लेल लाभदायक बनबैत अछि। एहि कवितामे ने कतहु क्षेत्रीयता, ने व्यक्तिगत आक्षेप रहैक किन्तु, प्रतीकात्मक अर्थमे चारि गोट गाम— रहिका, महिसी, घोघरडीहा आ शोकहराक उल्लेख भेल रहैक, जे चारि गोट साहित्यकार सँ सम्बन्ध राखैत छल। जीवकान्तजी मे भावनात्मक तरंग उत्पन्न करबाक लेल एतबा पर्याप्त छल।

लगले मिहिरक 30 अगस्त 81 क अंकमे हुनक प्रतिक्रिया छपलनि—. ..'शिल्पक दृष्टिसँ कविता श्रेष्ठ छनिहे॓, एहि दृष्टिसँ ई कविता बहुत दिन पर नीक सुतरलनि अछि। कीर्त्तिनारायण मैथिलीक चारि गोट कविके॓ खूब गरिऔलनि अछि। ई कवि थिकाह— राजकमल, कीर्त्तिनारायण, जीवकान्त आ उदयचन्द्र झा विनोद। प्रतीकात्मक रूपेँ कवितामे चारि गोट स्थान - विशेष आयल अछि।....ओ कहैत छथि जे एहि चारू कविये जकाँ मैथिलीमे सभ कविलोकनि एक्के रंग बाजीगर आ अपन पेट भरबा लेल बोनिहार - भिखारि छथि।

ओ पहिने कविता पर मुग्ध भए प्रशंसाक पुल बन्हैत छथि आ फेर कवितामे चर्चित गामक मादे सोचैत छथि आ भड़कि उठैत छथि।

विरोध हुनक संस्कार मे नहि छनि आ सदाशयता संग नहि छोड़ैत छनि तथापि ओ ललकारा पर लाठी भाँजऽ लगैत छथि। हमरा हुनक लिखब आ लाठी भाँजब दुन्नू

नीक लगैत अछि।

हमर एकटा आओर कविता सम्पूर्णतः हुनके पर अछि—'अनेरे ढाही लैत', जे 1985 मे 'भाखा' मे प्रकाशित भेल छल। (दुनू कविता 'ध्वस्त होइत शांति स्तूप' मे संकलित अछि)। किन्तु हुनका एहि मादे लिखलियनि, कहलियनि नहि। कविता छपलाक बाद ओ गद्‌गद् भए पत्र लिखने रहथि। ओहि कवितो मे एकठाम हुनक नामो आयल रहय किन्तु, हम जानि कए हटा देने रहियैक।

हम कोनो पत्र मे हुनका लिखलियनि— 'अगिला बिहार - यात्रा मे हम तोहर खजौली देखऽ चाहैत छी।' ओ प्रसन्नता व्यक्त करैत प्रस्ताव स्वीकार कैलनि आ लिखलनि जे 'हम तोहरा दरभंगा मे अमुक स्थान पर अमुक तिथि कें प्रतीक्षारत भेटबह।' हम पहुँचैत छी। ताधरि ओ साकेतानन्द सँ सम्पर्क कए रमेश्वरलता संस्कृत कॉलेज मे एक गोष्ठीक आयोजन करबा नेने छलाह आ सोमदेव, रमानन्द रेणु, केदार कानन समेत पचासो साहित्यकार कें नियत समय पर उपस्थित रहबाक आग्रह कऽ चुकल छलाह। हमरा सँ डेढ़ घंटा धरि अकविता आ कविता पर भुतबकारा करबाओल गेल — कॉलेजक प्रधानाचार्य डा. उपेन्द्र झा 'विमल'क उपस्थिति मे। पछाति ओकरा तीन हिस्सा में बाँटि, तीन सप्ताह धरि प्रसारित करयबाक ओरिआओनो वैह कैलनि।

खजौली जयबाक हमर आग्रह कें ओ बिसरल नहि रहथि। कहलनि— 'भाइ, आब बड़ बिलम्ब भऽ गेलह आ काल्हिये बरौनी सँ तोहरा बिदा होयबाक छह। आब खजौली दोसर खेप।'

ओहि दिन खजौली हम नहि जा सकलहुँ किन्तु, 1990 मे ड्योढ़ जयबाक अवसर भेटि गेल। ओहि वर्ष अप्रैलक अंतिम सप्ताह मे गाम जयबाक हमर पूर्व निश्चित छल। ड्योढ़क कथा रैलीक तिथि 29 अप्रैल पड़लैक। ड्योढ़ पहुँचिते प्रभास जी एवं किछु अन्य मित्र सभक संग गामक परिभ्रमणक लेल बहरौलहुँ, नबका पोखरिक भीर पर बैसि सरस जी एवं प्रदीप जीक गीत सुनलहुँ। कथा-रैली मे भाग लेबाक लाथें, जीवकान्तक जन्मभूमि एवं कथांचल देखबाक अवसर भेटि गेल। घुरती बेर प्रभास जी, रमण जी आदि झंझारपुर आ दरभंगाक मध्यक गाम सभ कें चिन्हबैत अयलाह। पँटघाट मे चाह पीअऽक लेल गाड़ी रोकल गेल तँ रमण जी लोहना जा कें धीरेन्द्र जी कें बजा आनलनि आ चाहक दोकाने पर एकटा साहित्यिक गोष्ठी भऽ गेल।

जीवकान्त शहर सँ दूर रहियो कए व्यक्ति सँ संस्था भऽ गेल छथि। कोनो पत्र - पत्रिका कतहु सँ बहराय, ओकरा लेल हुनक राय आ सहयोग आवश्यक भऽ जाइत छैक। मैथिलीयेक नहि, आनो - आन भाषाक कवि - लेखक सँ ओ सम्पर्क बनौने रहैत छथि आ सभक अता - पता राखैत छथि। हुनका सर्वसुलभता, सहयोग - भावना, नवतुर कें प्रेरित - प्रोत्साहित करबाक प्रवृत्ति, रचनात्मक प्रतिभाक प्रति आदर - भाव आदि मैथिलीक श्लाका - पुरुष स्वर्गीय भुवन जी जकाँ हुनका महत्त्वपूर्ण बना दैत छनि। मैथिलीक स्थिति आइ सँ पचास - साठि वर्ष पहिने भुवन जीक समय मे जेहन छल, ओहि सँ बहुत भिन्न आइयो नहि अछि।

ओ विद्यालये मे नहि, साहित्यो जगत मे गुरुजीक काज करैत छथि— गुरुजीये जकाँ। भौंहु तानि, मुखाकृति कें कठोर बना, वाणी मे गंभीरता आ संक्षिप्तता आनि एवं हाथ मे छड़ी लए। अपन ई छवि आश्चर्यजनक रूप सँ ओ पत्र पर उतारि दैत छथि आ काव्यार्थीक नाम पोस्ट कऽ दैत छथि। जकरा हुनक पत्र भेटैत छैक ओ प्रसन्न भए अपन मित्र कें देखबैत अछि तँ ओ मित्र सेहो अपन जेबी सँ हुनक पत्र बहार कए देखा दैत छैक। दुनू पत्र मे लिखऽ-पढ़ऽक मादे हुनक 'इन्स्ट्रक्शन' अथवा आदेश-निर्देश रहैत छैक। दुनू पढ़ि - पढ़ि लिखैत अछि आ लिखि - लिखि फाड़ैत रहैत अछि। कतबो 'होमवर्क' कए ओ 'टास्क' पूरा करैत अछि किन्तु, अपन गुरुजी कें संतुष्ट नहि कऽ पबैत अछि। गुरुजी ओकर रचना मे जे देखय चाहैत छलथिन से नहि भेटैत छनि। ओ अपन निर्देश पठाबैत छथि— एकरा फेर सँ लिखू आ एना लिखू। ओ लिखैत - लिखैत अपना कें लेखक मानऽ लगैत अछि किन्तु, गुरुजी कें एहि सँ सन्तोष कतय?... 'नवतुरिया सभक रचना पढ़ैत छी। कथा मे कोनो नवीनता नहि भेटैत अछि। मुद्राक उग्रता नीक होइतो, कोनो पैघ मूल्य नहि थिक। एहन कोनो कृति नवतूरक नहि मोन पड़ैत अछि जे अपना रचना सँ अपन व्यक्तित्व कें, भीड़ सँ बेरा सकल हो।' (लाल धुआँ, नवम्बर 1977)

जीवकान्तक जीवन - दृष्टि आ काव्य - दृष्टि अपन छनि। ककरो कोनो कर्ज हुनका पर नहि। ओ दुर्वासा जकाँ ककरो सम्बन्ध मे किछुओ बाजि - लिखि सकैत छथि—एकदम निर्धोख भए। हुनका सम्बन्ध मे डा. रमानन्द झा 'रमण'क ई शब्दचित्र उद्धरणीय लगैत अछि—'जीवकान्तक कविता आ समय - समय पर प्रकाशित लेख वा टिप्पणी सँ पहिल तथ्य ई प्रकट होइत अछि, जे हुनका ने तँ पूर्ववर्त्ती वा पुरान पीढ़ीक कविलोकनि पर विश्वास छनि आ ने ओ अपन परवर्त्ती कविगणक क्षमताक प्रति आस्थावान छथि। जीवकान्त कें देश आ समाजक व्यवस्थो पर विश्वास नहि छनि। एही मानसिकताक स्थिति मे जीवकान्त यात्री कें मार्क्सवादक ढोलिया कहलनि तथा मधुप जी आ सुमन जी कें पुरान परम्पराक भरिया मानल अछि।' (परम्परा आ आधुनिक कविता)। अपना सँ ठीक पूर्वक पीढ़ीक कवि राजकमल, सोमदेव, किसुन, मायानन्द आ धीरेन्द्रक कविता मे व्यवस्था सँ हाथ मे टिनही बाटी लेने उदारताक भीख माँगैत देखैत छथि। ओहिना नवका पीढ़ीक क्षमता पर शंका करैत जीवकान्त बकरी सँ तुलना करैत लिखल अछि—'बकरी कें केहनो गरदामी दियौक, ओकरा हर मे जोतल नहि जा सकैत अछि।' (मैथिली नव कविता, पृष्ठ 159)।

ऊपर सँ जीवकान्त केहनो उखड़ाह अथवा अगिलकाठ अथवा मणिपद्मक शब्द मे 'तुरूच्छ तुरुक' लागथि आ कतबो अगिलेसू शब्दक प्रयोग कए सभ कें रूष्ट - क्षुब्ध कैने रहथि, अपन सृजन सँ सभ कें विस्मित विमुग्ध कैने रहैत छथि, सभ कें अपन अकल्प विचारक प्रति साकांक्ष बनौने रहैत छथि। हुनका लेल कोनो विषय, स्थिति, घटना, परिवर्त्तन चाहे ओ राष्ट्रीय हो अथवा अन्तर्राष्ट्रीय—अछोप नहि छनि। विश्वक प्रत्येक गतिविधि पर ओ संजय - दृष्टि गड़ौने रहैत छथि, संगहि स्वार्थान्ध धृतराष्ट्रक चाक्षुष अन्धत्वक छद्म सँ सभकें सावधान करैत रहैत छथि।

आजुक धृतराष्ट्र आन्हर नहि होइत अछि। ओ स्वयं देखय नहि चाहैत अछि।

नीक लगैत अछि।

हमर एकटा आओर कविता सम्पूर्णतः हुनके पर अछि–'अनेरे ढाही लैत', जे 1985 मे 'भाखा' मे प्रकाशित भेल छल। (दुनू कविता 'ध्वस्त होइत शांति स्तूप' मे संकलित अछि)। किन्तु हुनका एहि मादे लिखलियनि, कहलियनि नहि। कविता छपलाक बाद ओ गद्गद् भए पत्र लिखने रहथि। ओहि कवितो मे एकठाम हुनक नामो आयल रहय किन्तु, हम जानि कए हटा देने रहियैक।

हम कोनो पत्र मे हुनका लिखलियनि— 'अगिला बिहार - यात्रा मे हम तोहर खजौली देखऽ चाहैत छी। ओ प्रसन्नता व्यक्त करैत प्रस्ताव स्वीकार कैलनि आ लिखलनि जे 'हम तोहरा दरभंगा मे अमुक स्थान पर अमुक तिथि कें प्रतीक्षारत भेटबह।' हम पहुँचैत छी। ताधरि ओ साकेतानन्द सँ सम्पर्क कए रमेश्वरलता संस्कृत कॉलेज मे एक गोष्ठीक आयोजन करबा नेने छलाह आ सोमदेव, रमानन्द रेणु, केदार कानन समेत पचासो साहित्यकार कें नियत समय पर उपस्थित रहबाक आग्रह कऽ चुकल छलाह। हमरा सँ डेढ़ घंटा धरि अकविता आ कविता पर भुतबकारा करबाओल गेल— कॉलेजक प्रधानाचार्य डा. उपेन्द्र झा 'विमल'क उपस्थिति मे। पछाति ओकरा तीन हिस्सा मे बाँटि, तीन सप्ताह धरि प्रसारित करयबाक ओरिआओनो वैह कैलनि।

खजौली जयबाक हमर आग्रह कें ओ बिसरल नहि रहथि। कहलनि— 'भाइ, आब बड़ विलम्ब भऽ गेलह आ काल्हिये बरौनी सँ तोहरा विदा होयबाक छह। आब खजौली दोसर खेप।'

ओहि दिन खजौली हम नहि जा सकलहुँ किन्तु, 1990 मे ड्योढ़ जयबाक अवसर भेटि गेल। ओहि वर्ष अप्रैलक अंतिम सप्ताह मे गाम जयबाक हमर पूर्व निश्चित छल। ड्योढ़क कथा रैलीक तिथि 29 अप्रैल पड़लैक। ड्योढ़ पहुँचिते प्रभास जी एवं किछु अन्य मित्र सभक संग गामक परिभ्रमणक लेल बहरैलहुँ, नबका पोखरिक भीर पर बैसि सरस जी एवं प्रदीप जीक गीत सुनलहुँ। कथा-रैली मे भाग लेबाक लाथें, जीवकान्तक जन्मभूमि एवं कथांचल देखबाक अवसर भेटि गेल। घुरती बेर प्रभास जी, रमण जी आदि झंझारपुर आ दरभंगाक मध्यक गाम सभ कें चिन्हबैत अयलाह। पैटघाट मे चाह पीअऽक लेल गाड़ी रोकल गेल तँ रमण जी लोहना जा कें धीरेन्द्र जी कें बजा आनलनि आ चाहक दोकाने पर एकटा साहित्यिक गोष्ठी भऽ गेल।

जीवकान्त शहर सँ दूर रहियो कए व्यक्ति सँ संस्था भऽ गेल छथि। कोनो पत्र - पत्रिका कतहु सँ बहराय, ओकरा लेल हुनक राय आ सहयोग आवश्यक भऽ जाइत छैक। मैथिलीयेक नहि, आनो - आन भाषाक कवि - लेखक सँ ओ सम्पर्क बनौने रहैत छथि आ सभक अता - पता राखैत छथि। हुनका सर्वसुलभता, सहयोग - भावना, नवतूर कें प्रेरित - प्रोत्साहित करबाक प्रवृत्ति, रचनात्मक प्रतिभाक प्रति आदर - भाव आदि मैथिलीक श्लाका - पुरुष स्वर्गीय भुवन जी जकाँ हुनका महत्त्वपूर्ण बना दैत छनि। मैथिलीक स्थिति आइ सँ पचास - साठि वर्ष पहिने भुवन जीक समय मे जेहन छल, ओहि सँ बहुत भिन्न आइयो नहि अछि।

ओ विद्यालये मे नहि, साहित्यो जगत मे गुरुजीक काज करैत छथि— गुरुजीये

जकाँ। भौंह तानि, मुखाकृति कें कठोर बना, वाणी मे गंभीरता आ संक्षिप्तता आनि एवं हाथ मे छड़ी लए। अपन ई छवि आश्चर्यजनक रूप सँ ओ पत्र पर उतारि दैत छथि आ काव्यार्थीक नाम पोस्ट कऽ दैत छथि। जकरा हुनक पत्र भेटैत छैक ओ प्रसन्न भए अपन मित्र कें देखबैत अछि तँ ओ मित्र सेहो अपन जेबी सँ हुनक पत्र बहार कए देखा दैत छैक। दुनू पत्र मे लिखऽ-पढ़ऽक मादे हुनक 'इन्स्ट्रक्शन' अथवा आदेश-निर्देश रहैत छैक। दुनू पढ़ि - पढ़ि लिखैत अछि आ लिखि - लिखि फाड़ैत रहैत अछि। कतबो 'होमवर्क' कए ओ 'टास्क' पूरा करैत अछि किन्तु, अपन गुरुजी कें संतुष्ट नहि कऽ पबैत अछि। गुरुजी ओकर रचना मे जे देखय चाहैत छलथिन से नहि भेटैत छनि। ओ अपन निर्देश पठाबैत छथि— एकरा फेर सँ लिखू आ एना लिखू। ओ लिखैत - लिखैत अपना कें लेखक मानऽ लगैत अछि किन्तु, गुरुजी कें एहि सँ सन्तोष कतय?... 'नवतुरिया सभक रचना पढ़ैत छी। कथा मे कोनो नवीनता नहि भेटैत अछि। मुद्राक उग्रता नीक होइतो, कोनो पैघ मूल्य नहि छिक। एहन कोनो कृति नवतूरक नहि मोन पड़ैत अछि जे अपना रचना सँ अपन व्यक्तित्व कें, भीड़ सँ बेरा सकल हो।' (लाल धुआँ, नवम्बर 1977)

जीवकान्तक जीवन - दृष्टि आ काव्य - दृष्टि अपन छनि। ककरो कोनो कर्ज हुनका पर नहि। ओ दुर्वासा जकाँ ककरो सम्बन्ध मे किछुओ बाजि - लिखि सकैत छथि—एकदम निर्धोख भए। हुनका सम्बन्ध मे डा. रमानन्द झा 'रमण'क ई शब्दचित्र उद्धरणीय लगैत अछि—'जीवकान्तक कविता आ समय - समय पर प्रकाशित लेख वा टिप्पणी सँ पहिल तथ्य ई प्रकट होइत अछि, जे हुनका ने तँ पूर्ववर्त्ती वा पुरान पीढ़ीक कविलोकनि पर विश्वास छनि आ ने ओ अपन परवर्त्ती कविगणक क्षमताक प्रति आस्थावान छथि। जीवकान्त कें देश आ समाजक व्यवस्थो पर विश्वास नहि छनि। एही मानसिकताक स्थिति मे जीवकान्त यात्री कें मार्क्सवादक ढोलिया कहलनि तथा मधुप जी आ सुमन जी कें पुरान परम्पराक भरिया मानल अछि।' (परम्परा आ आधुनिक कविता)। अपना सँ ठीक पूर्वक पीढीक कवि राजकमल, सोमदेव, किसुन, मायानन्द आ धीरेन्द्रक कविता मे व्यवस्था सँ हाथ मे टिनही बाटी लेने उदारताक भीख माँगैत देखैत छथि। ओहिना नवका पीढ़ीक क्षमता पर शंका करैत जीवकान्त बकरी सँ तुलना करैत लिखल अछि—'बकरी कें केहनो गरदामी दियौक, ओकरा हर मे जोतल नहि जा सकैत अछि।' (मैथिली नव कविता, पृष्ठ 159)।

ऊपर सँ जीवकान्त केहनो उखड़ाह अथवा अगिलकाठ अथवा मणिपद्मक शब्द मे 'तुरूच्छ तुरुक' लागथि आ कतबो अगिलेसू शब्दक प्रयोग कए सभ कें रूष्ट - क्षुब्ध कैने रहथि, अपन सृजन सँ सभ कें विस्मित विमुग्ध कैने रहैत छथि, सभ कें अपन अकल्प विचारक प्रति साकांक्ष बनौने रहैत छथि। हुनका लेल कोनो विषय, स्थिति, घटना, परिवर्त्तन चाहे ओ राष्ट्रीय हो अथवा अन्तर्राष्ट्रीय—अछोप नहि छनि। विश्वक प्रत्येक गतिविधि पर ओ संजय - दृष्टि गड़ौने रहैत छथि, संगहि स्वार्थान्ध धृतराष्ट्रक चाक्षुष अन्धत्वक छद्म सँ सभकें सावधान करैत रहैत छथि।

आजुक धृतराष्ट्र आन्हर नहि होइत अछि। ओ स्वयं देखय नहि चाहैत अछि।

स्वयं देखय मे अनेक खतरा छैक—सत्य सँ साक्षात्कार भऽ जयबाक खतरा, अवांछित सँ अहेतुक प्रत्यक्षीकरण होयबाक खतरा, अपनहि बनाओल चक्रव्यूह मे अपना केँ फँसैत देखबाक खतरा। ओ देखय लेल पहिने संजय केँ नियुक्त करैत छल, आब कम्प्यूटर कीनैत अछि। आब ओ सुनब सेहो छोड़ि देलक अछि। ई काज ओ 'टेप' सँ कराबैत अछि। संवेदनशील मशीनक माध्यम सँ वर्गीकृत एवं यंत्र - विश्लेषित मानवीय सम्वेदनाक ओतबे अंश सँ ओ सम्बन्ध राखैत अछि, जे ओकर लाभ - विस्तारक लेल अपेक्षित छैक।

सम्पूर्ण मानव - समाज आ मानवीय व्यवस्थापक एहि धृतराष्ट्रीकरणक पाछाँ जाहि वर्गक 'की रोल' अथवा भूमिका छैक, आइ वैह वर्ग सभक आदर्श बनि गेल छैक। गाम हो अथवा महानगर—सभतरि ओकरे यशोगान भऽ रहल छैक। एहि वर्ग मे अकूत सामर्थ्य छैक। ओ सामाजिक-आर्थिक क्रांति आनि सकैत अछि, समृद्धिक झरना बहा सकैत अछि, भूखल-निहुंगक आँखि मे भविष्यक सपना सजा सकैत अछि, राष्ट्रीय चरित्र आ संस्कृतिक नव प्रतिरूप ठाढ़ कऽ सकैत अछि। ओकरा लेल किछुओ असंभव नहि छैक।

जीवकान्त सन सजग रचनाकार एहि संपूर्ण स्थितिकेर द्रष्टा आ भोक्ता—दुन्नू होइत अछि। ओ ने परिवर्त्तन केर प्रवाह मे काठक सिल्ली जकाँ बहि सकैत अछि आ ने पाथर बनि ओकरा रोकि सकैत अछि। ओ अनुभव करैत अछि आ आवांछितक विरुद्ध अपनाकेँ तैयार करैत अछि। एहिठाम सँ ओकर आत्मसंघर्ष शुरू होइत छैक। संपूर्ण विद्रूपक मोकाबिला आत्मिक स्तर पर ओ एकसरे करैत अछि आ अपन रचनाक माध्यमसँ जनमानस केँ प्रतिकारक लेल तैयार करैत छथि।

जीवकान्त विचारक कवि छथि। विचार मे उद्वेलन, अशांति, मृत्यु-भय सभ छैक, जे ने स्वस्थ काव्यक लक्षण थिकैक आ ने काव्य-धर्म, किन्तु कविताक सामाजिक दायित्वक निर्वाह मे ओकर सर्वोपरि भूमिका छैक। ओ विचार - प्रधान कविताक खतरा सँ सेहो परिचित छथि तथापि कल्पना - भावनाक सारथी—चालित रथ पर नहि, चिन्तन - मनन-विचारक अश्व पर सवार भए कविता करैत छथि।

अद्यावधि प्रकाशित हुनक दुन्नू काव्य - संकलन— 'नाचू हे पृथ्वी' एवं 'धार नहि होइछ मुक्त' मे अधिकांश कविता हुनक वैचारिक संघर्ष दिस संकेत करैत अछि। एकदिस सत्ता आ सत्ताक पाछाँ दौगैत भीड़ पर व्यंग्य करैत ओ लिखैत छथि— 'लोक जूताक छाहरि मे दौड़बा लेल आ सुतबा लेल अपस्याँत रहैत अछि' — तँ दोसर दिस 'छूतहरी' संविधान सँ परिचय कराबैत कहैत छथि— 'संविधान भऽ गेल अछि माउग / आ सोलहो सिंगार कयने सन्हिया गेल अछि / मठ मे, मीनार मे, रेफ्रिजेरेटरक टिन मे / संविधान भऽ गेल अछि बुढ़बा सभक धोरबी / आ चोरबा सभक भाउज।' तेसर दिस देखैत छथि तँ बुझाइत छनि— 'हमर देश / हमरा सभक देश एक पुरान शामियाना थिक / हमरा सभ शामियानाक छोट - छोट खंड करब / अपन-अपन चेथड़ाकेँ कपार पर साटि लेब।' लगले चारिम दिशा पर दृष्टि पड़ैत छनि तँ देखैत छथि— 'गणतंत्र दिवस' मनाओल जा रहल अछि। ओ प्रश्न पूछैत छथि— 'आइ कोन चान अनलह अछि? / वैह ने जे अनकर इजोत सँ चमकैत अछि / जे अनके इजोत सँ पूर्णता पबैछ / जे अनकर

कृपा बिनु नति कए शून्य होइछ.... / आशा छल जे अजुका दिन उगत नव चान / आसमान सँ नवत अमा सँ / आ अपने प्रकाश सँ सनाथ होयत।'

[illegible] निराश कविकेँ ऋतुचक्र सँ बन्हायल सूर्य कोल्हुआ बड़द जकाँ जीवनमे बुझाइत छनि। ओकर आगाँ-पाछाँ-ऊपर-नीचाँ सभतरि अन्हारक षड्यंत्र चलैत देखैत छथि। ओकरा बेदम आ म्रियमाण कए ठाढ़े - ठाढ़ मारि देबाक होइत उपाय देखि, हुनका होइत छनि जे मरणासन्न बड़दक चमौटी अथवा डोरि तँ खोलि देल जाइत छैक मुदा ई सूर्य तँ मरितो काल ऋतृचक्र सँ बन्हायले रहि जायत।

सृजनधर्मी जीवकान्त केँ मनुक्खक आजुक रूप अपन जड़ीभूत अवस्था मे पाथर-खंड बुझाइत छनि, जकरा रूपाकार देबाक बेगरताक ओ अनुभव करैत छथि, किन्तु रूपाकार पाबि जखन ओ सजीव भऽ उठैत अछि तँ हुनका होइत छनि जे किछु आओर छल जे अप्रकट रहि गेल— 'मुदा पाथरक खंड। अंतिम रूप सँ आकार पयबा लेल आब बड़ भीड़ होइत अछि।' (छेनी)

हुनक 'धार नहि होइछ मुक्त' पर हमर प्रतिक्रिया छल— 'जीवकान्त निराशा, पराजय आ वैराग्यक नहि, मानवीय संवेदना, करुणा आ मनुक्खक गरिमाक कवि छथि। ओ गाम सँ अथाह प्रेम राखैत छथि। गामक समस्या आ लोकक अकर्मण्यता तथा निष्क्रियता हुनका उद्वेलित - आन्दोलित कैने रहैत छनि, संगहि शहर अथवा नगर-उपनगर-महानगर आक्रोश सँ भरने रहैत छनि। ओ गामक आदिम रूपकेँ बनौने राखि अर्थात नगर-महानगरक सुविधा-सम्पन्नता, उद्योग-व्यवसाय चाहैत छथि, जंगल-पहाड़-पोखरि - नदी, बाड़ी - खेत सभकेँ अक्षुण्ण राखि बड़का - बड़का कल - कारखाना एवं कंकरीटक जंगल ठाढ़ करय चाहैत छथि। हुनक ई कामना विरोधाभास सँ भरल रहितो, मानव एवं प्रकृतिक प्रति हुनक आन्तरिकता केँ प्रकट करैत छनि।'
(विपुल संकल्प लोक मे फुलाइत मैथिली कविता)

पहिने जीवकान्त कविताकेँ अपन अभिव्यक्तिक मुख्य विधा नहि मानैत रहथि। कथा-उपन्यास सँ पलखति भेटैत छलनि तँ रुचि - परिवर्त्तनक लेल कविता लिखऽ लागैत छलाह। एम्हर किछु वर्ष सँ गद्य कम, कविता बेसी लिखैत छथि आ अपन वैचारिक संकेत सम्प्रेषित करैत रहैत छथि।

जीवकान्तक लेल कथा लिखब हुनकहि शब्द मे— 'कविता आ निबंध सँ बेसी सुखदायक काज' छनि। 'विचार कखनो आक्रामकता संग कथा - लेखन मे प्रेरणा नहि दैत' छनि। हुनक मान्यता छनि, 'कथा लिखबा मे अपन समकालीन जीवनकेँ सभसँ ठीक जकाँ अंकित कैल जा सकैत अछि।'

कथाकार जीवकान्त निस्संदेह कवि जीवकान्तसँ इमानदार, प्रशस्त आ श्रेष्ठ छथि। लिखब सभसँ ओ कविता सँ शुरू कयलनि किन्तु, अपन कथ्य, विचार, परिवेश, परिस्थिति आ पाठक लेल जतेक स्वतंत्रता आ विस्तारक जरूरति रहनि ओ हुनका कथा - विधा मे भेटलनि, उपन्यासकेँ ओ कथेक विस्तार मानैत छथि।

अद्यावधि हुनक पाँच गोट उपन्यास— पनिपत, दू कुहेसक बाट, अगिनवान, नहि कतहु नहि आ पीयर गुलाब छल प्रकाशित भेल अछि।

हमरा दृष्टियें हिनक सभ उपन्यास मे सर्वाधिक सफल, सर्वप्रथम प्रकाशित किन्तु रचनाक्रम मे दोसर 'पनिपत' छनि। जहिया ओ धारावाही 'मिथिला मिहिर' मे छपि रहल छल, ओहि अवधि मे हमरालोकनि प्रत्येक शनि कें कॉफी हाउस, कलकत्ता मे जमा होइ, मिहिरक नवका अंक कीनल जाय आ 'पनिपत'क वाचन - श्रवणक संग कॉफीक आनन्द लेल जाय, टीका - टिप्पणी होइ आ ओकर तुलना आन - आन भाषाक नवका पीढ़ीक उपन्यास सँ कैल जाय। हमर समस्त हिन्दी आ बंगला भाषी मित्र कें लागनि जेना उपन्यासक नायक 'अरविन्द'क रूप मे जीवकान्त स्वयं हमरा सभक मध्य उपस्थित छथि आ मिथिलाक समस्या, रूद्ध प्रगति, अन्धविश्वास, अर्थाभाव मे स्नेह शून्य पारिवारिक जीवन आ दिगभ्रमित युवा वर्गक वृतान्त सुना रहल छथि।

हुनक 'दू कुहेसक बाट' एक गोट एहन छात्रक जीवन पर आधारित उपन्यास छल, जकर जन्म तँ भेल रहैक निम्न मध्यवर्गीय परिवार मे, किन्तु महत्त्वाकांक्षा पोसलक मध्यवर्गीय परिवारक। स्वाभिमानक विरुद्ध कोनो काज करब ओकर संस्कारक 'जाठि' कें हिला दैत छलैक। उपन्यासक नायक 'जितेन्द्र'क रूप मे जीवकान्त मिथिलाक अधिकांश साधनहीन एवं आत्मबलरहित छात्रक चरित्र एवं मनोविज्ञानक विश्लेषण कैने रहथि। ओ उपन्यास नवतुरिया वर्ग द्वारा खूब पसिन्न कैल गेल छल।

'अगिनवान' मे गामक तथाकथित साधन - सम्पन्न तथा साधनहीन – दुनू वर्ग कें अपन - अपन पाखण्ड अथवा मिथ्याडम्बरक बेरी मे छटपटाइत देखौने रहथि। ईर्ष्या-द्वेष - कलह केर आगि मे पजरैत गाम मे जीवन एवं सम्बन्धक सहजता कें भस्म होइत देखा ओ सभकें अपन - अपन जहलक निर्माता आ बंदी सिद्ध कैने रहथि। तहिना 'नहि कतहु नहि' मे जन्मजात संस्कार आ पुरानक प्रति मोहान्धता पर प्रहार करैत सामाजिक मनोभावक सुन्दर चित्र उपस्थित कैने छलाह। जखन मैथिली मे पॉकेट बुक्सक प्रकाशन डा. बी. झा शुरू कयलनि तँ ओ सोमदेव जीक आग्रह पर एक 'मिनी' उपन्यास 'पीयर गुलाब छल' सेहो लिखने रहथि।

कथाक क्षेत्र मे हिनक बहुतरास कथा खूब चर्चित भेल रहनि, किन्तु ताधरि लिखल कथा मे सर्वाधिक चर्चित भेलनि —'टिल्हाक धुकधुकी'।

'आखर' मे एकटा स्तम्भ छलैक, जकर अन्तर्गत कोनो विशिष्ट कथाकारक कथा पर वक्तव्य एवं नवीनतम कथा छापल जाइत छलैक। ओहि स्तम्भ 'कथा-परिचर्चा'क लेल ओ अपन वक्तव्य एवं 'टिल्हाक धुकधुकी' पठौने रहथि। ओहि कथा मे टिल्हाक रूप मे असहाय नारी कें पुरुषक बर्बरताक प्रतीक भालु सँ बेर - बेर मर्दित होइत आ ढाहल जाइत देखाओल गेल छलैक।

ई कथा 'आखर'क फरवरी '68 क अंक मे छपलैक। ओकर छपिते हमरा किछु पत्र भेटल, जाहि मे कथाकार पर अश्लीलताक आरोप छलैक आ हमर बुद्धि - विवेक पर संदेह। एतबे नहि, किछु व्यक्ति लिखलनि— 'अहाँ मात्र मैत्री - निर्वाहक लेल ओहन भ्रष्ट कथा कें छापि 'आखर'क स्तर कें गिरा देलहुँ।'

जाहि भाषा मे रचनाकारक प्रति व्यक्तिगत धारणाक आधार पर बिनु पढ़ने रचना पर प्रतिक्रिया व्यक्त कैल जाइत छलैक, ओहि मे जँ कथाकें पढ़ि केओ आरोपो लगाबऽ

चला जैत गेल तँ हमरा लेल प्रसन्नताक बात छल। हम उत्साह मे आबि ओहि पर परिचर्चा आयोजित कैल आ सभ मित्र, परिचित एवं किछु पाठक - ग्राहक कें व्यक्तिगत पत्र लिखि ओहि मे भाग लेबक लेल आमंत्रित कैलियनि किन्तु, कोम्हरो सँ कोनो उत्तर नहि। उत्साह पर सय घैल पानि ढ़रि गेल।

बाद मे मणिपद्म जी कें अपन मनोव्यथा व्यक्त करैत लिखलियनि जे हम चाही तँ अपन सम्पादकीय मे आरोपक खण्डन कऽ सकैत छी, किन्तु तकरो मैत्रीक निर्वाह मानल - कहल जायत आ जँ नहि करी तँ ककरो अज्ञान आ झूठ पर अपन स्वीकृतिक मोहर लगा देब हैत।

हुनका पर हमर पत्रक तीव्र प्रतिक्रिया भेलनि आ ओ लगले एकटा लेख 'टिल्हाक धुकधुकी : आलोचना - दृष्टि'— लिखि कए पठा देलनि जे अक्तूबर '68 (आखरक बारहम आ अंतिम अंक) मे छपल छल।

हुनक किछु आओर सशक्त कथाक नाम अछि— गहुमन, अठनियाँ पट्टी, एकसरि ठाढ़ि कदम तर रे, फँसरी, सीड़क, फनिगा, वस्तु, नानी, इनकिलाब, शहर आदि, जे हुनक तीन गोट कथा - संकलन—'एकसरि ठाढ़ि कदम तर रे', 'सूर्य गलि रहल अछि', एवं 'वस्तु' मे संकलित कथा सभक मध्य अछि।

जीवकान्त कथा - वस्तु, कथा - वातावरण एवं कथा भाषा – तीनू केर सृजन मे प्रवीण छथि। ओ घटना - विशेष सँ कथा - सूत्र बहार करैत छथि आ अपन अनुभूत विस्तार दैत छथि। परिवेश, वातावरण आ भाषा लगैत अछि, स्वतः हुनका लेल संयोजित भऽ जाइत छनि।

ओ मात्र कथा लिखैत छथि। मनुक्खक कथा। ओकर दुख दैन्यक कथा। ओकरा सँ सम्बद्ध संघर्ष आ जय - पराजयक कथा। हमरा कहबाक तात्पर्य ओ दक्षिण, वाम, दलित, शोषित, जाति, धर्म, बुर्जुआ, सर्वहारा, शहर, गाम आदिक 'पंथ' अथवा 'वाद' मे अपन कथाकार कें विभाजित नहि होअए दैत छथि आ ने मनुक्ख कें विभाजित करैत छथि। ओ अवर्गीकृत, अविभाजित मनुक्खक कथाकार छथि। ओ अपन देसकोस, माटिपानि, घर - आँगन आ लोक - वेद मे ओझरायल रहैत छथि आ अपन ओही ओझराहटि मे सभ कें समेटि लैत छथि। जमीन्दारी, सामन्तवाद, जातिवाद सँ लऽ कए निम्न मध्यवर्ग, भोग - भाग्य - भगवानवादी विचारधारा, शोषण, चरित्र - हनन, राजनीति - भ्रष्टाचार, सांस्कृतिक विघटन सभ हुनक चिन्ताक कारण बनल रहैत छनि।

ओ मैथिली लेल चलि रहल आन्दोलन मे अपन सक्रिय सहयोग दैत रहलाह अछि। समय - समय पर लिखल हुनक लेख आ व्यक्त विचार लोकक सुप्त चेतना कें जगाबक काज करैत रहल अछि। संगहि ओ आन्दोलनक नाम पर खाय - कमायवला वर्ग, फोंक संकल्प, डपोरशंखी घोषणा, नपुंसक नेतृत्व, साहित्य अकादमी तथा मैथिली अकादमी कें लूटय मे लागल महंथ - मठाधीश कें देखारो करऽ मे संकोच नहि कैलनि अछि।

मैथिली अकादमीक जहिया गठन भेल, ओ बड़ उत्फुल्ल भऽ पत्र लिखने रहथि। किन्तु, लगले जखन ओकर प्रकाशन - तंत्र पर किछु व्यक्तिक आधिपत्य भऽ गेलनि आ ओ हेरि - हेरि कए अपन सर - कुटुम्ब सँ पोथी लिखबा कए छापऽ लगलाह आ अपन

दिशा - निर्देश सँ लेखक तैयार करऽ लगलाह तँ जीवकान्त जीक मोहभंग भेलनि ।

तहिना साहित्य अकादमी मे मैथिली प्रतिनिधि केर क्रिया - कलाप सँ ओ आहत होइत रहलाह अछि । यात्री जी, मणिपद्म जी तथा दू - एक आओर अपवाद केँ छोड़ि देल जाय तँ एक्को टा साहित्यकार एहन नहि भेटताह, जिनका निष्पक्ष रूप सँ हुनक पोथीक श्रेष्ठताक आधार पर पुरस्कार भेटलनि । पहिने पोथी केर श्रेष्ठ होयब नहि, लेखक केर आओर किछु होयब पुरस्कारक लेल आवश्यक होइत छलैक । पश्चाति मान-दण्ड बदललैक तँ वयोवृद्धताक नाम पर, अपन इष्ट - अपेक्षितक पोथी छपबा कए पुरस्कार बाँटऽ जाय लागल । तत्पश्चात प्रतिनिधि अपन कार्यकालक निर्धारित सीमाक प्रत्येक वर्षक लेल, अपन मित्र तथा चेला - चाटीक सूची तैयार कए, पुरस्कार दिआबऽ लगलाह । पंजाबी तथा किछु आन भाषा मे सेहो एहने जरद्‌गव सभक प्रवेश भऽ गेल छल आ किछु पुरस्कार पोथी केँ बिना पढ़ने दिआ देल गेलैक । जखन देशव्यापी हल्ला भेलैक तँ अकादमीक आँखि फुजलैक । नियम मे संशोधन कैल गेल आ समिति सभक पुनर्गठन भेल । दृश्य बदललैक किन्तु, नाटक वैह चलैत रहल । जीवकान्त एहन-एहन रहस्यपूर्ण गतिविधि पर सँ परदा उठाबऽ मे लागल रहैत छथि ।

ओ निबन्ध, आलोचना, समीक्षा, भूमिका, टिप्पणी, पत्र - प्रतिक्रिया आदि जे लिखलनि अथवा लिखि रहल छथि— सभ पर हुनक स्वतन्त्र चिन्तन आ अद्वितीय व्यक्तित्वक छाप छनि ।

ओ कृतार्थ होअऽ अथवा करबऽ मे विश्वास नहि राखैत छथि तेँ मैथिलीक भाग्य - विधाता सभक लेल स्वीकार्य नहि छथि ।

□

प्रकाशित : संकल्प–5 : जून 1995

सशक्त एवं श्रेष्ठ कवि होयबाक कारणे कीर्त्तिनारायण मिश्रक एहि संस्मरण सभ मे काव्य - तत्त्वक प्रवेश अनिवार्य भऽ गेल अछि आ ओहि काव्यात्मकताक रस एहि संग्रह कें संस्मरण-विधा मे एकटा नव आस्वाद-पूर्ण कृति बनबैत अछि।

संस्मरण मे लेखकक अपने व्यक्तित्व महत्वपूर्ण भऽ जयबाक खतरा बनल रहैत अछि। नहियो चाहैत कतहु-कतहु ओ परिस्थितिक संवेदना मे डूबि लेखक आ पात्रक भेद बिसरि जाइत अछि आ स्वयं कें विज्ञापित करऽ लगैत अछि। परिस्थितिजन्य विवशता रहितो, ई रचनात्मक दोष होइत अछि मुदा, कीर्त्तिनारायण मिश्र एहि दोष सँ, एहि खतरा सँ बचबाक प्रत्येक संभव उपाय करबाक प्रयास कयलनि अछि आ ताहि मे हुनका सफलता भेटलनि अछि।

सीमान्त, हम स्तवन नहि लिखब आ ध्वस्त होइत शान्ति स्तूपक महत्त्वपूर्ण काव्य - यात्राक बाद कवि कीर्त्तिनारायण मिश्रक संस्मरण - संग्रह 'अपन एकान्त मे' अपन विलक्षणता आ विषय - वस्तुक उत्कृष्टताक लेल संग्रहणीय कृति थिक।

[signature]